डाक पंजीयन नं. 99/2021-23

E-mail:-adhuniksamachar2014@gmail.com website:www.aadhuniksamachar.com

आधुनिक भारत का आधुनिक नजरिया

PG-5

# आधुनिक समाचार

प्रयागराज से प्रकाशित हिन्दी दैनिक

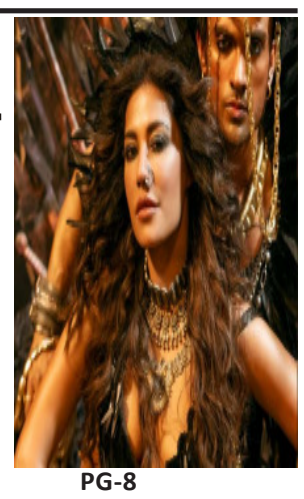

PG-8

सिनेमाः सइयां गाने में बॉलीवुड एक्ट्रेस चित्रांगदा सिंह का नया अवतार देखे

वर्ष -08 अंक -22 | प्रयागराज, शुक्रवार 25 मार्च, 2022 | पृष्ठ- 8 | मूल्य : 2.00 रूपये

**संक्षिप्त समाचार**

### मिट्टी की सेहत का ध्यान तो दूर, जांच केंद्र खोलने में भी पिछड़े उत्तरी राज्य अत्यधिक दोहन से खराब हुई मिट्टी

**नई दिल्ली।** बढ़ती आबादी का पेट भरने और आयात निर्भरता घटाने के लिए सीमित क्षेत्रों की हरितक्रांति ने मिट्टी को कहीं का नहीं छोड़ा है। उर्वरकों और कीटनाशकों के अंधाधुंध प्रयोग से मिट्टी की स्वाभाविक उर्वरता छूमंतर हो चुकी है। बीमार मिट्टी के निदान और इलाज की जिन राज्यों को सबसे अधिक जरूरत है, वही राज्य जांच केंद्र खोलने में बहुत पीछे हैं। पंजाब, हरियाणा और पश्चिमी उत्तर प्रदेश अपनी माटी का मोल नहीं समझ पा रहे हैं। ऐसे में सवाल यही है कि बिना जांच और इलाज के मिट्टी की सेहत कैसे सुधरेगी सभी राज्यों में मिट्टी की उर्वरता के लिए जिम्मेदार तत्वों में असंतुलन की स्थिति है। इसे दुरुस्त करने के लिए केंद्र सरकार की पहल पर ज्यादातर राज्यों ने आगे बढ़कर स्वायल हेल्थ (मिट्टी की सेहत) की दिशा में काम किया है। जिन उत्तरी राज्यों की मिट्टी की हालत सबसे खराब है, उन्हीं राज्यों में गंभीर उदासीनता बरती जा रही है। स्वायल हेल्थ के कृषि वैज्ञानिकों के लिए यह चिंता का विषय है।

### समान नागरिक संहिता पर केंद्र का रुख भी जल्द होगा साफ

**नई दिल्ली।** समान नागरिक संहिता का मामला एक बार फिर उठ रहा है। वैसे तो देश के सभी नागरिकों के लिए समान कानून की बात करने वाली समान नागरिक संहिता के केंद्रीय स्तर पर लागू होने की बात अभी दूर की कौड़ी नजर आती है, लेकिन इससे जुड़े पांच महत्वपूर्ण मुद्दों शादी की समान आयु, तलाक, भरण-पोषण, उत्तराधिकार, गोद लेना एवं संरक्षक पर कानूनों को सभी के लिए समान बनाने की मांग वाली पांच याचिकाओं पर सुप्रीम कोर्ट में आठ अप्रैल को सुनवाई होनी है। केंद्र सरकार को इन मामलों में पहले ही नोटिस जारी हो चुके हैं, ऐसे में सरकार को आठ अप्रैल से पहले इन पर अपने जवाब दाखिल करने होंगे। माना जा रहा है कि सरकार इन मामलों में जल्द ही कोर्ट में जवाब दाखिल करने की तैयारी कर रही है।

## कोरोना से मौत के मुआवजे का दावा करने की समय सीमा तय, झूठे दावों की भी होगी जांच; सुप्रीम कोर्ट का केंद्र को निर्देश

**नई दिल्ली।** सुप्रीम कोर्ट ने देशभर में कोरोना से मरने वालों के परिजनों को मुआवजा राशि देने के लिए 60 दिन का समय तय किया है। सुप्रीम कोर्ट ने अपने आदेश में कहा है कि अब तक जिन लोगों ने इसके लिए आवेदन दिया है उनको आवेदनों को 60 दिनों के अंदर निपटा दिया जाना चाहिए। कोर्ट ने अपने आदेश में आगे कहा है कि आगे इस मुआवजा राशि के लिए आवेदन करने वालों को 90 दिनों के अंदर आवेदन करना होगा। आपको बता दें कि कोरोना से हुई मौतों पर 50 हजार रुपये की अनुग्रह मुआवजा राशि देने का प्रावधान है। सुप्रीम कोर्ट ने केंद्र को इस संबंध में आए झूठे आवेदनों की जांच करने की भी जिम्मेदारी दे दी है। कोर्ट ने अपने आदेश में कहा है कि केंद्र देश के चार राज्यों में आए आए पांच फीसद आवेदनों की जांच कर सकता है, क्योंकि इन राज्यों से आए आवेदन और यहां हुई कोरोना से मौतों के मामलों में काफी अंतर है। इनमें आंध्र प्रदेश, गुजरात, महाराष्ट्र और केरल का नाम है। आपको यहां पर ये भी बता दें कि देश में कोरोना महामारी की दूसरी लहर के दौरान सबसे अधिक लोगों की मौत हुई थी। दूसरी लहर के दौरान हर रोज आने वाले नए मामलों का आंकड़ा भी साढ़े चार लाख के ऊपर चला गया था। हालांकि तीसरी लहर में भी हर रोज आने वाले मरीजों का आंकड़ा इतना ही गया था। लेकिन तीसरी लहर दूसरी लहर की तुलना में कम रही थी। भारत की ही बात करें तो यहां पर कोरोना की वजह से पांच लाख से अधिक लोगों की जान अब तक गई है।

## हिजाब मामले पर तुरंत सुनवाई से सुप्रीम कोर्ट का इनकार

**नई दिल्ली।** सुप्रीम कोर्ट ने कर्नाटक में स्कूल-कालेज में हिजाब पर रोक मामले में जल्द सुनवाई से इनकार कर दिया है। इस मामले को एक छात्रा ने उस समय उठाया था जब हाई कोर्ट ने उनकी याचिका को खारिज कर दिया था। बता दें कि एक छात्रा की ओर से वकील कामत ने आने वाली परीक्षाओं की दुहाई देते हुए जल्द सुनवाई की मांग की थी। कोर्ट ने इसपर कामत से कहा कि इसका परीक्षा से कोई लेना-देना नहीं है और साथ ही मामले को सनसनीखेज न बनाने का भी निर्देश दिया है। बता दें कि कर्नाटक में हिजाब मामले की शुरुआत तब हुई जब उडुपी जिले के एक सरकारी कालेज के प्रिंसिपल ने छात्राओं को हिजाब पहने से रोक दिया था और कालेज में भी प्रवेश से मना कर दिया था। इसके बाद कई छात्राओं ने कर्नाटक हाई कोर्ट में इसको लेकर याचिका दर्ज की लेकिन कोर्ट ने याचिका को खारिज कर दिया। हाई कोर्ट ने अपने फैसले में कहा कि हिजाब धर्म का अनिवार्य हिस्सा नहीं है और छात्रों को यूनिफार्म का पालन करना ही होगा।

## पीएम मोदी बोले- बीरभूम हिंसा के दोषियों को माफ न करें बंगाल के लोग, उधर हाई कोर्ट ने राज्य सरकार से 24 घंटे में मांगी रिपोर्ट

**कोलकाता।** बंगाल में बीरभूम जिले के रामपुरहाट इलाके के बागडुई में गत सोमवार रात तृणमूल कांग्रेस (टीएमसी) नेता भादू शेख की हत्या के बाद हुई हिंसा में 10 लोगों को जिंदा जलाने के आरोपितों पर सख्त कार्रवाई की मांग तेज हो गई है। इस मामले में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने बुधवार को दुख व्यक्त करते हुए बंगाल के लोगों से अपील की है कि वे ऐसी जघन्य वारदात करने वालों व ऐसे अपराधियों का हौसला बढ़ाने वालों को कभी माफ न करें। उधर, कलकत्ता हाई कोर्ट ने मामले में स्वतः संज्ञान लेते हुए राज्य सरकार से 24 घंटे में रिपोर्ट मांगी है। केंद्र सरकार ने हाई कोर्ट में कहा कि वह मामले की केंद्रीय जांच ब्यूरो (सीबीआइ) से जांच कराने को तैयार है। मामले में राष्ट्रीय महिला आयोग (एनसीडब्लूयू) और राष्ट्रीय बाल अधिकार संरक्षण आयोग (एनसीपीसीआर) ने भी पुलिस से कार्रवाई को कहते हुए रिपोर्ट मांगी है। हिंसा के बाद इलाके में तनाव है। डर की वजह से कई परिवार यहां से पलायन कर गए हैं। पीएम ने इसके साथ ही कहा कि केंद्र सरकार की तरफ से मैं राज्य को इस बात के लिए आश्वस्त करता हूं कि अपराधियों को जल्द से जल्द सजा दिलाने में जो भी मदद वह चाहेगी, उसे उपलब्ध कराई जाएगी। पीएम ने कहा कि पीड़ितों के प्रति मेरी गहरी संवेदना है। पढ़ें पीएम मोदी का पूरा भाषण- बीरभूम हत्याकांड पर बोले मोदी- अपराधियों को न्याय के कटघरे में लाने के लिए राज्य की हर संभव मदद करने के लिए तैयार।

## पत्नी के साथ क्रूरता का लाइसेंस नहीं शादी, पति करे तो भी दुष्कर्म तो दुष्कर्म है :कर्नाटक हाइकोर्ट

**बेंगलुरु।** वैवाहिक दुष्कर्म के एक मामले में सुनवाई करते हुए कर्नाटक हाईकोर्ट ने सख्त टिप्पणी की है। हाईकोर्ट ने कहा कि शादी किसी पति के लिए पत्नी के साथ क्रूरता करने का लाइसेंस नहीं है। पत्नि के साथ जबरन शारीरिक संबंध बनाना दुष्कर्म ही है, चाहे वो पति ही क्यों ना हो। बता दें कि न्यायाधीश एम. नागप्रसनन की एकल पीठ इस मामले की सुनवाई कर रही थी। उन्होंने कहा कि दुष्कर्म का मतलब दुष्कर्म ही होता है, चाहे वो पति ने ही क्यों ना किया हो। मामले में टिप्पणी करते हुए हाईकोर्ट ने आरोपी शख्स के खिलाफ दुष्कर्म के आरोपों को हटाने से इन्कार दिया। पीड़ित महिला ने अपने पति पर उसके साथ दासी जैसा व्यवहार करने का आरोप लगाया था। आरोपी पति के खिलाफ दुष्कर्म के आरोप को बरकरार रखते हुए पीठ ने कहा, 'एक पुरुष एक पुरुष है, एक अधिनियम एक अधिनियम है, दुष्कर्म एक दुष्कर्म है, चाहे वह एक पति ने अपनी पत्नी के साथ किया हो।' कोर्ट ने ये भी कहा कि सबको समानता का अधिकार है। पत्नी की अपनी भी मर्जी होती है। पत्नी के साथ जबरन दुष्कर्म से महिला के मनोवैज्ञानिक और शारीरिक दोनों पर बुरा असर पड़ता है। इससे महिलाओं के मन में डर पैदा हो जाता है। हाईकोर्ट ने स्पष्ट किया कि यह आदेश पति के खिलाफ आरोप तय करने से संबंधित है। यह इस बारे में नहीं है कि वैवाहिक दुष्कर्म को अपराध के रूप में मान्यता दी जानी चाहिए या नहीं। हाईकोर्ट ने विधायिका को इस पर विचार करने की सलाह दी है। हाईकोर्ट ने कहा कि यह विधायिका के लिए है कि वह इस मुद्दे पर विचार करे। कोर्ट यह नहीं कह रहा है कि वैवाहिक दुष्कर्म को अपराध के रूप में मान्यता दी जानी चाहिए या अपवाद को विधायिका द्वारा हटा दिया जाना चाहिए। इस पर विचार जरूरी है।

## भारत सहित दुनिया भर में ताजे पानी की हर तीसरी मछली पर मंडरा रहा विलुप्त होने का खतरा

**नई दिल्ली।** नदियां, झीलें और वेटलैंड पृथ्वी के सबसे अधिक जैव विविधता वाले क्षेत्र होते हैं। वह धरती की कुल सतह के एक प्रतिशत से भी कम हिस्से को कवर करते हैं पर वह एक चौथाई से अधिक कशेरूकी प्रजातियों का घर होते हैं। इसमें दुनिया भर की आधी मछली की प्रजातियों का आशियाना होते हैं। पर इन ताजे पानी की मछलियों के अस्तित्व पर संकट बढ़ रहा है। द वर्ल्डस फॉरगॉटन फिशेस की हाल में आई रिपोर्ट ताजे पानी की मछलियों पर आई विपत्ति की दास्तां बताती है। रिपोर्ट के अनुसार भारत सहित दुनिया भर में ताजे पानी की हर तीसरी मछली पर विलुप्त होने का खतरा मंडरा रहा है। रिपोर्ट के अनुसार नदियों और वेटलैंड का गंदा होना, सिंचाई के लिए अधिक पानी का प्रयोग, बिना शोधित वेस्ट पानी को नदियों में प्रवाहित करना, क्लाइमेट चेंज आदि का परिवर्तन भी इसके लिए दोषी है। 1970 से प्रवासी फ्रेशवाटर मछलियों की आबादी में 76 फीसत की कमी आई है। फ्रेशवाटर मेगा-फिशेज (30 किलोग्राम से अधिक वजन वाली) में 94 प्रतिशत की कमी आई है। भारत के गंगा नदी बेसिन को ही देखें तो यहां रहने वाली आधी से अधिक आबादी गरीबी का शिकार है। यहां की बड़ी आबादी पोषण के लिए इन मछलियों पर ही निर्भर है, लेकिन पिछले 70 वर्षों में इस नदी पर बढ़ते दबाव के चलते यहां की मछलियों की आबादी में काफी कमी आई है। इसमें सबसे ज्यादा कमी हिल्सा में देखी गई है। वहां फरक्का बांध के निर्माण के बाद इन मछलियों पर व्यापक असर पड़ा है। 43 फीसदी मीठे पानी की मछलियां उन 50 कम आय वाले देशों में पकड़ी जाती है जो पहले ही खाद्य सुरक्षा का संकट झेल रहे हैं। 2018 के आंकड़ों के अनुसार सिर्फ 16 देशों से 80 फीसदी मछली पकड़ी गई। इनमें से दो तिहाई एशिया से थी। इनमें भारत, चीन, बांग्लादेश, म्यांमार, कंबोडिया और इंडोनेशिया थे। वहीं अफ्रीकी देशों से 25 फीसदी मछली पकड़ी गई। इनमें युगांडा, नाइजीरिया, तंजानिया, मिस्र और मालावी प्रमुख देश थे। इंटरनेशनल फिशरीज इंस्टीट्यूट और एफएओ की रिपोर्ट के अनुसार 50 फीसद से अधिक ग्लोबल फ्रेशवाटर फिश सात रिवर बेसिन से पकड़ी गई थी। ये मैकांग, नील, यांगेज, इराब्दी, ब्रह्मपुत्र, अमेजन और गंगा का बेसिन था। फ्रेशवाटर फिशरीज से दुनिया भर में 60 मिलियन लोगों को रोजगार मिलता है। जिसमें से आधी से अधिक महिलाएं है। दुनियाभर के करोड़ों लोग अपने भोजन और जीविका के लिए इन मीठे पानी की मछलियों पर ही निर्भर करते हैं। जिसमें दुनिया के सबसे कमजोर और पिछड़े तबके की एक बड़ी आबादी इन्हीं पर निर्भर है। भारत के गंगा रिवर बेसिन में तकरीबन आधी आबादी प्रोटीन के मुख्य स्रोत के लिए फ्रेशवाटर फिश पर ही निर्भर होती है। दुनिया भर के कुछ देशों में फ्रेशवाटर फिश के सम्मान के लिए फेस्टिवल का आयोजन होता है। इंग्लैंड में ईल फेस्टिवल का आयोजन होता है। इसमें यूरोपियन ईल फिश के ऐतिहासिक महत्व को दर्शाया जाता है। इसमें इस बात के बारे में भी बताया जाता है जब ईल फिशिंग शहर का मुख्य उद्योग था। वहीं न्यूजीलैंड में ईल खान-पान और आय के साथ-साथ धार्मिक प्रतीक भी मानी जाती थी। कंबोडिया में इसे आदिवासी नेशनल वाटर फेस्टिवल के तौर पर मनाते हैं। तीसरी शताब्दी में भारतीय शासक अशोक ने मीठे पानी की शार्क और ईल सहित अन्य मछलियों को संरक्षित कर दिया था। आज से करीब 1200 वर्ष पहले भारत में इन मछलियों के लिए पहला मंदिर और अभयारण्य स्थापित किया गया था। आज भी खतरे में पड़ी मछली प्रजाति हिमालयन गोल्डन महाशीर को भारत और भूटान के स्थानीय समुदायों द्वारा पूजा जाता है। गंगा के किनारे बने मंदिरों में आज भी यह मछलियां संरक्षित हैं।

## देश में आज फिर बढ़े कोरोना के मामले, 24 घंटे में 1938 लोग पाजिटिव, 67 की मौत

**नई दिल्ली।** देश में कोरोना के मामलों लगातार दूसरे दिन बढ़ोतरी दर्ज की गई है। बीते 24 घंटे में कोरोना वायरस के 1,938 नए मामले सामने आए हैं। इस दौरान 67 लोगों की मौत भी हुई है। स्वास्थ्य मंत्रालय ने गुरुवार को कोरोना की स्थिति को लेकर अपडेट जारी किया है। देश में कल यानी बुधवार को कोरोना के 1,778 मामले सामने आए थे जबकि मंगलवार को कुल 1,581 मरीज मिले थे। राहत की बात है कि कोरोना के एक्टिव मामले लगातार घट रहे हैं। बीते 24 घंटे में कोरोना के 2,531 लोग ठीक हुए हैं। इसके साथ ही एक्टिव केस घटकर अब 22,427 हो गए हैं। बुधवार को कोरोना के 23,087 एक्टिव मामले थे। कोरोना से अब तक कुल 4,24,75,588 लोग ठीक हो चुके हैं जबकि 5,16,672 लोगों की जान जा चुकी है। इससे पहले, केंद्र सरकार ने बुधवार को 31 मार्च से सभी कोविड पाबंदियों को खत्म करने का एलान किया है। हालांकि, अभी फेस मास्क लगाना जरूरी होगा। दो साल बाद सरकार ने कोविड पाबंदियां खत्म की है। केंद्रीय स्वास्थ्य सचिव राजेश ने राज्यों को पत्र लिखा है। उन्होंने कहा कि कोरोना की निगरानी और रोकथाम को लेकर स्वास्थ्य मंत्रालय के दिशानिर्देश लागू रहेंगे। वहीं, केंद्रीय गृह सचिव अजय भल्ला ने कहा कि अब आपदा अधिनियम के प्रावधानों को लागू करने की आवश्यकता नहीं है। गृह मंत्रालय की ओर से इस संबंध में कोई और आदेश जारी नहीं होगा। देश में कोविड टीकाकरण का आंकड़ा 182 करोड़ के पार हो चुका है। टीके की करीब 182.14 करोड़ खुराक लगाई जा चुकी हैं। टीके की पहले डोज 97.74 करोड़ लोगों को दी गई हैं जबकि 82 करोड़ से ज्यादा दूसरी डोज दी जा चुकी है। इसके साथ ही 2.08 करोड़ से ज्यादा प्रीकाशन डोज भी लग चुकी है।

## संजय चंद्रा की पत्नी की जमानत याचिका पर सुप्रीम कोर्ट ने ईडी से मांगा जवाब

**नई दिल्ली।** सुप्रीम कोर्ट ने बुधवार को प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) को निर्देश दिया कि वह यूनिटेक के पूर्व प्रमोटर संजय चंद्रा की पतनि प्रीति चंद्रा की अंतरिम जमानत याचिका पर अपना जवाब दाखिल करे। प्रीति ने अपनी दादी के अंतिम संस्कार में हिस्सा लेने के लिए अंतरिम जमानत की मांग की ह जस्टिस डीवाई चंद्रचूड़ और जस्टिस एमआर शाह की पीठ ने कहा कि प्रीति चंद्रा की याचिका पर वह शुक्रवार को अपना आदेश जारी करेगी। इससे पहले ईडी ने आपत्ति व्यक्त करते हुए कहा कि जमानत मिलने पर प्रीति देश छोड़कर जा सकती है और अफसोस करने से बेहतर सुरक्षित रहना है। ईडी की ओर से पेश एडिशनल सालिसिटर जनरल माधवी दीवान ने जमानत याचिका का विरोध करते हुए कहा कि प्रीति को उस वक्त गिरफ्तार किया गया था जब वह देश छोड़ने की कोशिश कर रही थीं। उन्होंने दलील दी कि चंद्रा ने हाल ही में डोमिनिक रिपब्लिक की नागरिकता हासिल की है जो उन देशों में शामिल है जिनके साथ भारत की प्रत्यर्पण संधि नहीं है। सुप्रीम कोर्ट के पूर्व मुख्य न्यायाधीश रमेशचंद्र लाहोटी का बुधवार शाम हृदयगति रुकने से निधन हो गया। मूलरूप से मध्य प्रदेश के गुना के रहने वाले लाहोटी 81 वर्ष के थे। उनका अंतिम संस्कार शुक्रवार को सुबह 10 बजे दिल्ली में किया जाएगा। उनके भाई जीके लाहोटी ने बताया कि बुधवार शाम अचानक तबीयत बिगड़ने से अपोलो हास्पिटल, दिल्ली में उनको भर्ती कराया गया था। गौरतलब है कि जिला न्यायालय गुना व मध्य प्रदेश हाई कोर्ट में प्रैक्टिस के बाद तीन मई, 1988 को रमेशचंद्र लाहोटी को मध्य प्रदेश हाई कोर्ट का अतिरिक्त न्यायाधीश नियुक्त किया गया था।

# सड़क पर पड़े लावारिस बछड़ा का उपचार करवाया रमेश यादव डब्लूयू.....

(आधुनिक समाचार सेवा)

**प्रयागराज।** सैदपुर स्थित भीतरी स्टेशन के पास गाय की एक बछिया घायल अवस्था में पड़ी थी। बछिया पैर किसी अज्ञात वाहन की टक्कर से फैक्चर हो गया था। कुत्ता व पक्षी उसको नोच रहे थे। इसकी सूचना मंगलवार शाम 7:30 बजे रमेश यादव डब्बू को मिला। रमेश यादव तुरंत मौके पर पहुँच कर युवा साथियो द्वारा पीकअप बुलाकर उसको अस्थाई गौवशाला नगर स्थित जोहरगंज पे भेजवाया। मौके पर लवकुश सोनकर, श्रवन यादव, साहिल पांडेय, सचिन गुप्ता आदि लोग मौजूद थे ।

# शहीदी दिवस पर सरदार भगत सिंह, राजगुरू सुखदेव याद किए गए

(आधुनिक समाचार सेवा)
विलास गुप्ता

**प्रयागराज।** शहीदी दिवस के अवसर पर बुधवार को चन्द्रशेखर आजाद पार्क में पुष्पांजलि कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर पुलिस के जवानों द्वारा शहीदों को सलामी दी गई तथा बैण्ड पर राष्ट्रधुन कर वादन हुआ। शहीदों की स्मृति में एक सभा का आयोजन भी किया गया वक्ताओं ने बोलते हुए कहा की 23 मार्च 1931 को निर्भीक क्रान्तिकारियों स्वतंत्रता सेनानी सरदार भगत सिंह, शिवराम राजगुरू और सुखदेव थापर को अंग्रेजों द्वारा फांसी दी गई थी। मुख्य अतिथि एडीएम सिटी ने शहीदों की तस्वीर में माल्यार्पण कर उनको श्रद्धांजलि दी। संस्कृति विभाग एवं जिला प्रशासन, प्रयागराज ने इस कार्यक्रम का आयोजन किया था।



# डीएम-एसएसपी ने किया नैनी सेंट्रल जेल का निरीक्षण

(आधुनिक समाचार सेवा)
विलास गुप्ता

**प्रयागराज।** प्रशासनिक और पुलिस अधिकारियों ने गुरुवार को सेंट्रल जेल नैनी का निरीक्षण किया। डीएम संजय खत्री, एसएसपी अजय कुमार और एसपी यमुनापार सौरभ दीक्षित समेत अन्य अधिकारियों ने जेल में साफ सफाई, सुरक्षा व्यवस्था और पेरोल पर छोड़े जाने वाले बंदियों के बारे में पूछताछ की। साथ ही कोविड गाइडलाइन का पालन कराने का निर्देश दिया गया।



# सालाना उर्स मस्तान शाह बाबा 27 मार्च को

(आधुनिक समाचार सेवा)
सरफराज अहमद

**फूलपुर।** फूलपुर मुबारकपुर रोड स्थित मौजा कुतुबपुर जलाल उद्दीनपुर गांव में सड़क के किनारे स्थित हजरत मस्तान शाह बाबा की मजार पर सालाना उर्स 27 मार्च दिन रविवार की रात में पूर्व की भांति मनाया जाएगा। दिन में मजार प्रांगण में मेला तथा रात में जवाबी कौवाली का मुकाबला कौवाल शकील परवाज़ कानपुरी तथा कौवाला शबनम नाज सुल्तानपुरी के बीच होगा। पूरी रात मजार पर फतेहा वा चादर का प्रोग्राम चलता रहेगा। जानकारी महमूद अहमद द्वारा प्राप्त हुई।




# २४-२५मार्च को पीएम स्वनिधि योजना का लगेगा कैम्प

(आधुनिक समाचार सेवा)
डॉ0रणजीत सिंह

**प्रतापगढ़।** परियोजना अधिकारी डूडा ने बताया है कि पी0एम0 स्वनिधि योजन्नातर्गत दो दिवसीय विशेष मेगा कैम्प का आयोजन दिनांक 24 एवं 25 मार्च को जनपद के समस्त नगर निकायों की बैंकों की शाखाओं एवं नगर निकायों में आयोजित कराये जायेगें। योजना के तहत समस्त नगर निकायों में 10 हजार का लोन जमा करने वाले दुकानदारों को अब 20 हजार का लोन मिलेगा। इसके लिये विशेष अभियान चलाया जा रहा है। 20 हजार लोन चुकाने वाले दुकानदारों को आगे 50 हजार का लोन मिल सकेगा। परियोजना अधिकारी डूडा ने बताया है कि पीएम स्वनिधि योजन्नातर्गत वेण्डर्स डिजिटल लेनदेन का लाभ उठा सकते है। उन्होने बताया है कि योजना में ऋण प्राप्त वेण्डर्स द्वारा 12 माह अथवा 12 माह से पूर्व ऋण वापसी पर 7 प्रतिशत ब्याज अनुदान की छूट है। यदि 10 हजार रूपये के ऋण पर 11 प्रतिशत के हिसाब से 1100 रूपये ब्याज पर लगभग 800 रूपये की छूट प्राप्त होगी। माह में 200 डिजिटल लेनदेन करने पर 100 रूपये प्रतिमाह, वर्ष में 1200 रूपये प्राप्त होगें जिससे ऋण पर किसी भी प्रकार का ब्याज नही देय होगा। उन्होंने पीएम स्वनिधि योजनान्तर्गत प्राप्त क्यूआर कोड के माध्यम से डिजीटल लेनदेन के फायदे के सम्बन्ध में बताया है कि एक माह में किसी भी मूल्य का 50 डिजीटल लेनदेन करने पर प्रति लेनदेन 1 रूपये कैश बैक, अगले 50 डिजीटल लेनदेन करने पर प्रति लेनदेन 50 पैसे का कैश बैक, अगले 100 डिजिटल लेनदेन करने पर प्रति लेनदेन 25 पैसे का कैश बैक, माह में कुल 200 डिजिटल लेनदेन करने पर रूपये 100 का कैश बैक प्राप्त होगा। क्यूआर कोड के माध्यम से डिजिटल लेनदेन का विवरण मोबाइल पर उपलब्ध रहता है। डिजिटल लेनदेन से नियमित प्रति माह कैश बैक प्राप्त होगा जिससे अतिरिक्त आमदनी प्राप्त होगी।

# प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी हेतु दिया जाएगा एक वर्षीय निःशुल्क प्रशिक्षण

(आधुनिक समाचार सेवा)
डॉ0रणजीत सिंह

**प्रतापगढ़।** जिला सेवायोजन अधिकारी ने बताया है कि जिला सेवायोजन कार्यालय प्रतापगढ़ के अन्तर्गत संचालित शिक्षण एवं मार्गदर्शन केन्द्र में अनुसूचित जाति/अनु0 जनजाति तथा अन्य पिछड़ा वर्ग के अभ्यथिर्यों को उनकी सेवायोजकता में वृद्धि एवं विभिनन्प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी हेतु प्रत्येक वर्ष एक वर्षीय निःशुल्क प्रशिक्षण दिया जाएगा। दिनांक 01 अप्रैल से प्रारम्भ होने वाले प्रशिक्षण सत्र 2022-2023 में प्रवेश हेतु 18 से 35 वर्ष के ऐसे इण्टरमीडिएट उत्तीर्ण अभ्यर्थी जिनका हाईस्कूल में अंग्रेजी विषय रहा हो वह विलम्बतम 26 मार्च तक आवेदन कर सकते है।ंग्रेजी, सामान्य गणित एवं तर्कशक्ति आदि विषयों का प्रशिक्षण दिया जाता है। अभ्यर्थी अपने समस्त शैक्षिक प्रमाण पत्र, जाति प्रमाण पत्र, आधार कार्ड तथा एक फोटो के साथ कार्यालय दिवस में उपस्थित होकर विलम्बतम् 26 मार्च 2022 तक आवेदन जमा कर सकते है। अभ्यर्थियों का कार्यालय में पंजीकृत होना अनिवार्य है। टंकण एवं कम्प्यूटर की जानकारी रखने वाले अभ्यर्थियों को वरीयता दी जायेगी। दिनांक 28 मार्च को अनुसूचित जाति/अनु0 जनजाति एवं दिनांक 29 मार्च को अन्य पिछड़े वर्ग के अभ्यथिर्यों का साक्षात्कार प्रातः 11 बजे से कार्यालय परिसर में सम्पन्न होगा।

# २ अप्रैल तक परीक्षा केन्द्रों के आस-पास निषेधाज्ञा लागू

(आधुनिक समाचार सेवा)
डॉ0रणजीत सिंह

**प्रतापगढ़।** जनपद में दिनांक 22 मार्च से 02 अप्रैल तक अखिल भारतीय व्यावसायिक परीक्षा, पालीटेकिन्क सेमेस्टर परीक्षा मार्च 2022 एवं दिनांक 24 मार्च से 12 अप्रैल तक माध्यमिक शिक्षा परिषद की हाईस्कूल एवं इण्टरमीडिएट बोर्ड परीक्षायें सम्पन्न होना प्रस्तावित है। परीक्षाओं को नकलविहीन, शांतिपूर्ण एवं शुचिता से सम्पन्न कराये जाने के उद्देश्य से अपर जिला मजिस्ट्रेट मुकेश चन्द्र ने परीक्षा केन्द्रों के आस-पास 12 अप्रैल तक दण्ड प्रक्रिया संहिता की धारा-144 के अन्तर्गत निषेधाज्ञा लागू कर दिया है। उन्होंने कहा कि जनपद में परीक्षा से सम्बन्धित क्षेत्र में समस्त स्टाफ, अधिकारी, परीक्षार्थी, मजिस्ट्रेट एवं सुरक्षा बल के अतिरिक्त कोई भी व्यक्ति अथवा समूह परीक्षा केन्द्र में प्रवेश नहीं करेगा। परीक्षा केन्द्र के आस-पास 200 मीटर की परिधि में फोटो कापियर एवं स्कैनर का संचालन परीक्षा अवधि में पूर्णतया प्रतिबन्धित रहेगा। परीक्षा केन्द्रों के आस-पास 200 मीटर की परिधि में ध्वनि विस्तारण यन्त्रों, ब्लूटूथ एवं आईटी गैजेट्स सहित इसी प्रकार की अन्य इलेक्ट्रानिक डिवाइस का प्रयोग पूर्णतया प्रतिबन्धित रहेगा। समस्त कक्ष निरीक्षक/स्टाफ अथवा परीक्षार्थी इन उपकरणों को लेकर परीक्षा केन्द्र में प्रवेश नही करेगें। कोई भी परीक्षार्थी बिना परीक्षा सम्पनन्न हुये सक्षम अधिकारी की अनुमति के बिना परीक्षा कक्ष से बाहर नहीं जायेगा और न ही उत्तर पुस्तिका बाहर ले जायेगा। परीक्षा की समाप्ति तक किसी भी अभ्यर्थी अथवा प्रशन पत्र को परीक्षा केन्द्र से बाहर नही जाने दिया जायेगा।कोई भी व्यक्ति या व्यक्तियों का समूह परीक्षाओं को सकुशल तथा शांतिपूर्ण एवं निष्पक्ष तरीके से सम्पन्न कराये जाने में न तो किसी प्रकार का व्यवधान उत्पन्न करेगा और न ही ऐसी कोई कार्यवाही करेगा जिससे कि परीक्षा को सम्पन्न कराये जाने में कोई बाधा उत्पन्न हो एवं उसकी शुचिता व निष्पक्षता पर किसी प्रकार का कोई कुप्रभाव पड़े। कोविड-19 के प्रोटोकॉल का कदापि उल्लंघन नही किया जायेगा।

# लेखपाल शफीक अहमद कर रहे कनिष्ठ उपाध्यक्ष पद के लिए दावेदारी

(आधुनिक समाचार सेवा)
सरफराज अहमद

**फूलपुर।** उत्तर प्रदेश लेखपाल संघ प्रयागराज का द्विवार्षिक चुनाव 27 मार्च को होना है जिसमे बतौर जिला कनिष्ठ उपाध्यक्ष पद के लिए दावेदारी कर रहे कपसा निवासी तेजतर्रार लेखपाल शफीक अहमद तहसील हंडिया क्षेत्र के सरायहरिराम गाँव में कार्यरत है।उन्होंने लेखपाल साथियों से जनसमर्थन और सहयोग के लिए अपील करते हुए कहा कि अगर उन्हें उक्त दायित्व पर निर्वाचित होने का मौका मिला तो अपने लेखपाल संघ की गरिमा को कायम रखते हुए अपने पद का कुशलता पूर्वक निर्वहन करेंगे और लेखपाल साथियों की मान सम्मान के प्रति हमेशा समर्पित रहूंगा।

# ३० दिनों के अन्दर उपलब्ध करायें जन सूचना-राज्य सूचना आयुक्त

(आधुनिक समाचार सेवा)
डॉ0रणजीत सिंह

**प्रतापगढ़।** उ0प्र0 सूचना आयोग लखनऊ के राज्य सूचना आयुक्त नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव की अध्यक्षता में सूचना का अधिकार अधिनियम-2005 के अन्तर्गत जनपद स्तरीय जन सूचना अधिकारियों के साथ क्षेत्रीय ग्राम्य विकास संस्थान अफीम कोठी के सभागार में समीक्षा बैठक में कहा कि जन सूचनाएं 30दिन के अन्दर अवश्य उपलब्ध कराएं।बैठक में राज्य सूचना आयुक्त ने कहा कि अधिनियम का उद्देश्य नागरिकों के सूचना के अधिकार को कार्यान्वित करने के लिये व्यवहारिक प्रशासनिक व्यवस्था स्थापित करना है। लोक प्राधिकरण के नियंत्रण में उपलब्ध सूचना तक नागरिकों की पहॅुच को सुनिश्चित करना हैं प्रत्येक लोक प्राधिकरण की कार्यप्रणाली में पारदर्शिता और जवाबदेही विकसित कर भ्रष्टाचार पर अंकुश लगाना है। उन्होने कहा कि जन सूचना अधिकारियों का प्रथम दायित्व नागरिकों को सूचना उलपब्ध कराना है। यदि अधिनियम व नियमावली के अनुसार देय सूचनायें उपलब्ध नही कराते तो दण्ड के भागी होगें।समीक्षा बैठक के दौरान जिला पंचायत राज



अधिकारी की 117 शिकायतें, ग्राम्य विकास विभाग की 61 शिकायतें, पुलिस विभाग की 10, राजस्व की 02, बेसिक शिक्षा की 30, माध्यमिक शिक्षा की 08, स्वास्थ्य विभाग की 04, समाज कल्याण की 02, भूमि संरक्षण के 02, लोक निर्माण विभाग के 02, अल्पसंख्यक विभाग के 03, विद्युत विभाग के 10, बाल विकास एवं पुष्टाहार के 04 शिकायतें व अन्य विभागों की एक-एक शिकायतें पोर्टल पर लम्बित पायी गयी। बैठक में अधिकारियो द्वारा बताया गया कि कुछ शिकायतों का निस्तारण किया जा चुका है जिस पर राज्य सूचना आयुक्त ने कहा कि शिकायतों के निस्तारण की प्रति उपलब्ध करा दें जिससे सूचना आयोग में मिलान किया जा सके। राज्य सूचना आयुक्त ने कहा कि प्रारूप-3 का रजिस्टर बना लें और सूचना अधिकार अधिनियम की जो भी शिकायतें हो उसमें अंकित किया जाये जिससे शिकायतों के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त हो सके। उन्होने कहा कि सूचना अधिकार अधिनियम-2005 के अन्तर्गत जो भी व्यक्ति जन सूचना मांगता है यदि वह विभाग से सम्बान्धित नही है तो अधिकारीगण अलग से एक पत्र के माध्यम से सम्बन्धित व्यक्ति को सूचित करें, उसी पत्र पर मार्क न करें। उन्होने कहा कि सूचना अधिकार अधिनियम के अन्तर्गत जो भी सूचनायें मांगी जाये उसे 30 दिनों के अन्दर सूचनायें उपलब्ध करा दी जाये, यदि मांगी गयी सूचना में किसी प्रकार की समस्या आ रही है तो उसमें लिख दिया जाये कि सम्बन्धित सूचना देय नही है। बैठक में अपर जिलाधिकारी (वि0/रा0) मुकेश चन्द्र, अपर पुलिस अधीक्षक पश्चिमी रोहित मिश्रा, मुख्य चिकित्साधिकारी डा0 अरविन्द कुमार श्रीवास्तव सहित समस्त जनपदीय स्तरीय जन सूचना अधिकारी उपस्थित रहे।

## नैनी औद्योगिक प्रशिक्षण केन्द्र, प्रयागराज

भारत सरकार की कौशल विकास योजना में अगस्त 2021 से प्रारम्भ हो रहे सत्र के लिए निम्नलिखित ट्रेडों में दाखिले के लिए आवेदन पत्र आमंत्रित
ट्रेड प्रवेश योग्यता तथा प्रस्तुत विभिन्न पाठ्यक्रमों की अवधि इस प्रकार है-

| क0सं0 | ट्रेड का नाम | ट्रेड की अवधि | योग्यता |
|---|---|---|---|
| 1. | कोपा | 1 वर्ष | 12वीं पास |
| 2. | फिटर | 2 वर्ष | 10वीं पास |
| 3. | बेसिक कम्प्युटिंग | 6 माह | साक्षर |
| 4. | डाटा इंट्री ऑपरेटर | 6 माह | 10वीं पास |
| 5. | फायर प्रिवेन्शन एण्ड इंडस्ट्रियल सेफ्टी | 6 माह | 8वीं पास |
| 6. | सेक्योरिटी सर्विस | 6 माह | 8वीं पास |
| 7. | कम्प्यूटर हार्डवेयर एण्ड एसेम्बली | 1 वर्ष | 10वीं पास |
| 8. | सर्टिफिकेट इन कम्प्युटर एप्लीकेशन | 1 वर्ष | 10वीं पास |
| 9. | इलेक्ट्रिकल टेक्निशियन्स | 1 वर्ष | 8वीं पास |
| 10. | रेफरिजरेटर एण्ड एयर कन्डिसनिंग | 1 वर्ष | 8वीं पास |
| 11. | योगा असिस्टेन्ट | 1 वर्ष | 10वीं पास |
| 12. | वेल्डिंग टेक्नोलॉजी | 1 वर्ष | 8वीं पास |
| 13. | कम्प्यूटर टीचर ट्रेनिंग कोर्स | 1 वर्ष | 10वीं पास |

**1.प्रमाण पत्रः-** सफल प्रशिक्षणार्थियों को भारत सरकार द्वारा प्रमाणपत्र दिए जाते है, जो केंन्द्रीय सरकार एवं राज्य सरकार के अधीनस्थ पद एवं सेवा में भर्ती के लिए मान्य है। **2.चयन की प्रक्रियाः-** इस वर्ष कोविड-19 महामारी के चलते सभी सीटों पर दाखिले पहले आओ-पहले पाओ के आधार पर किये जायेंगे। **3.आयु सीमाः-** उम्मीदवारों की आयु 1 अगस्त 2021 को न्यूनतम 14 वर्ष से अधिक होनी चाहिए। **4.आवेदन कैसे करेः-** आवेदन फॉर्म संस्थान की वेबसाइट पर जाकर ऑनलाइन भरे जा सकते है तथा संस्थान के कार्यालय से निःशुल्क भी प्राप्त किया जा सकता है। **5.**आवेदन फॉर्म भरते समय पंजीकरण शुल्क रूपये 2665/- का भी देय होगा। **6.कक्षायें/उपस्थितिः-** छात्रों की उपस्थिति में दो भाग शामिल है- थ्योरी क्लास और ट्रेनिंग इस वर्ष कोविड-19 स्थिति के कारण सभी छात्र संस्थान द्वारा आयोजित ऑनलाइन कक्षाओं में भाग लेंगे तथा उसके लिए संस्थान में छात्रों की भौतिक उपस्थिती की अनिवार्यता नहीं है, जब तक कोविड-19 की वर्तमान स्थिति समाप्त नहीं हो जाती है। प्रशिक्षण के लिए छात्रो को प्रधानाचार्य की अनूमति के साथ, अपने सम्बंधित मूल स्थानों पर प्रशिक्षण पूरा करने की अनुमति है। परीक्षा के समय छात्रों की उपस्थिति अनिवार्य होगी। **7.छात्रवृत्तिः-** दाखिले के उपरांत शुल्क प्रतिपूर्ति के लिए सभी ट्रेडों में आरक्षित श्रेणी के अभ्यर्थी, जिनके पास आय प्रमाण पत्र एवं सम्बन्धित दस्तावेज मौजूद हो वे सभी भारत सरकार की छात्रवृत्ति योजनाओं में आवेदन कर सकते है। **8.** अधिक जानकारी के लिए संस्थान की वेबसाइटः- **www.nainiiti.com** देखें। **9.दाखिले की अंतिम तिथिः-** 31 मार्च 2022

**सम्पर्क सूत्र :- 0532-2695959, 9415608710, 9807278552, 9415608790**

# प्रेक्षक ने अधिकारियों संग बैठक कर दिये आवश्यक दिशा-निर्देश

## मतदाताओं को किसी भी प्रकार का लालच देने अथवा डराने-धमकाने की सूचना पर संबंधित के विरुद्ध तत्काल कार्रवाई सुनिश्चित कराई जाए-सुभाष चंद्र शर्मा

**(आधुनिक समाचार सेवा)**

**वाराणसी।** वाराणसी स्थानीय प्राधिकारी निर्वाचन के लिये निर्वाचन आयोग से नियुक्त प्रेक्षक सुभाष चन्द्र शर्मा की अध्यक्षता में बुधवार को सर्किट हाउस सभागार में बैठक संपन्न हुआ। जिलाधिकारी वाराणसी कौशल राज शर्मा के जिलाधिकारी चंदौली अलावा एडीएम भदोही संबंधित जनपदों के पुलिस अधीक्षक उपस्थित रहे जिलाधिकारी वाराणसी कौशल राज शर्मा ने बताया कि वाराणसी स्थानीय प्राधिकारी निर्वाचन में कुल 4949 मतदाता हैं। जिसमे वाराणसी में 1875, चंदौली में 1720 व भदोही में 1354 मतदाता हैं। वाराणसी में 11, चंदौली में 09 व भदोही में 06 सहित कुल 26 बूथ बनाये गये है। नामांकन की कार्रवाई पूर्ण हो चुकी है। कुल 04 अभ्यार्थियों के नामांकन पत्र वैध पाए गए हैं। जिसमे क्रमशः उमेश यादव समाजवादी पार्टी, डा0 सुदामा पटेल भारतीय जनता पार्टी, अन्नपूर्णा सिंह उर्फ पूनम सिंह निर्दलीय व बृजेश कुमार सिंह उर्फ अरूण कुमार निर्दलीय हैं। जयराम लोकदल द्वारा दाखिल किये गये नामांकन पत्र विधिमान्य न होने के कारण निरस्त हो गया। वाराणसी में 26 मार्च को प्रथम व 04 अप्रैल को दृतिय चरण का कार्मिकों का प्रशिक्षण होगा। जबकि अन्य जनपदों में कार्मिकों के प्रशिक्षण हेतु अन्य तिथियां निर्धारित की गई। 08 अप्रैल को पोलिंग पाटिर्यां रवाना होंगे, 09 अप्रैल को मतदान प्रातः 08 से सायं 04 बजे तक होगा, जबकि मतगणना 12 अप्रैल को पहड़िया में होगा। जिलाधिकारी ने लागू आदर्श आचार संहिता के संबंध में बताया कि प्रधान एवं पार्षद आदि की बैठक नहीं होंगी। पुलिस अधिकारी संबंधित थाना में अपनी बैठक कर ले। मतदाताओं को किसी भी प्रकार का लालच देने अथवा डराने-धमकाने की सूचना पर संबंधित के विरुद्ध तत्काल कार्रवाई सुनिश्चित कराई जाए। प्रत्याशियों को भी पर्याप्त सुरक्षा व्यवस्था सुनिश्चित कराया जाए। प्रेक्षक सुभाष चंद शर्मा ने संबंधित जनपद के जिलाधिकारियों एवं पुलिस अधीक्षकों से चुनाव तैयारियों के संबंध में जानकारी प्राप्त की। उन्होंने चंदौली के नोगढ़ क्षेत्र में प्रत्याशियों के प्रचार-प्रसार के दौरान समुचित सुरक्षा व्यवस्था सुनिश्चित कराया जाय। उन्होंने विशेष रूप से जोर देते हुए कहा कि है मतदान संपन्न होने के पश्चात मतदान कार्मिक बैलट बॉक्स संबंधित जनपद में ही जमा करेंगे। तत्पश्चात उन जनपदों से बैलट बॉक्स समुचित सुरक्षा व्यवस्था के साथ पहड़िया के स्ट्रांग रूम में जमा कराने के लिये विशेषकर मजिस्ट्रेट एवं सीओ स्तर के अधिकारियों संग लाया जाएगा। मतदाताओं को हेल्पर की सुविधा उपलब्ध कराए जाने के दौरान निर्वाचन आयोग के दिशा-निर्देशो को शाट-प्रतिशत पालन सुनिश्चित कराया जाए। उन्होंने बनाए गए बूथों एवं मतगणना स्थल के संबंध में निर्वाचन आयोग से प्रत्येक दशा में स्वीकृति प्राप्त किए जाने पर विशेष जोर दिया। उन्होंने संबंधित अधिकारियों को निर्देशित करते हुए कहा कि प्राप्त शिकायतों को गंभीरता से लेते हुए उसका तात्कालिक निस्तारण सुनिश्चित कराया जाए। कंट्रोल रूम 24 घंटे संचालित किया जाए। उन्होंने अधिकारियों से विशेष रूप से जोर देते हुए कहा कि आचार संहिता का किसी भी तरह से उल्लंघन नहीं होना चाहिए। नगर निगम द्वारा किसी भी प्रकार से नए निर्माण कार्य शुरू न किया जाए, किन्तु पुराने कार्य यथावत होते रहेंगे। नए विधायकों का नाम मतदाता सूची में अवश्य दर्ज होना चाहिए।

# धन्य हुआ जीवन ये,धन्य हुआ दूध मेरा,दूध वाला कर्ज मेरे बेटे ने उतारा है

**(आधुनिक समाचार सेवा)**

**रामेन्द्र सिंह**

**लालगंज,(प्रतापगढ़)।** रीघेश्वर नाथ धाम रीघी में शहीद- ए- आजम भगत सिंह की शहादत दिवस पर हुए राष्ट्रीय कवि सम्मेलन में राष्ट्रीय कवि डॉ0 रणजीत सिंह ने वीर भगत सिंह की फाँसी के समय उनकी माँ की आँखों में आये आँसू पर जब किसी ने सवाल किया तो उनकी वीरांगना माँ के हवाले से छंद वाचन करते हुए कहा - इंकलाब जिंदाबाद, इंकलाब जिंदाबाद फाँसी फंदा चूम वीर भगत पुकारा है। रो रही हूँ भले समझो न इन्हें आँसू मेरे, राष्ट्रभक्ति वाला दहकता ये अंगारा है।। जीवन हुआ है धन्य आज मेरे भगत का, नाम पूरे जग में जो कुल का पसारा है। धन्य हुआ जीवन ये,धन्य आज दूध मेरा, दूध वाला कर्ज मेरे बेटे ने उतारा है।।ठ भगत सिंह पर पढ़े गए उनके छंदों ने राष्ट्रभक्ति की भावना का संचार किया।साथ ही उनकी दर्शन पर आधारित कविता 'चुटकी भर सिंदूर' सभी पुरुष एवं नारियों ने जमकर सराहा। कवि सम्मेलन में जया मिश्रा की नारी पर आधारित रचनाएं श्रोताओं के दिल को छू गईं तो गीता पाण्डेय 'अपराजिता' की ओज की रचनाओं ने श्रोताओं को रोमांचित किया।रायबरेली के रामकेवल वर्मा लहरी ने कोटेदार

चालीसा पढ़ कर जहाँ श्रोताओं को हँसाया और गुदगुदाया तो अजय सोनी की माँ पर पढी गई रचना उपस्थित नारियों के नेत्रों को सजल कर गई।लोकेश त्रिपाठी ने जहाँ प्यार- मोहब्बत के गीत पढे. तो अमेठी के रामबदन शुक्ल पथिक की मलकिन तो प्रधान होइ गइन की रचना ने लोगों को खूब हँसाया और गुदगुदाया। कार्यक्रम की मुख्य अतिथि क्षेत्रीय विधायक जीत लाल पटेल की पत्नी ने शहीद-ए- आजम भगत सिंह के चित्र पर माल्यार्पण कर इसकी शुरुआत की।उन्होंने भगत सिंह के योगदान को सराहा।विशिष्ट अतिथि के रूप में मोतीलाल चौधरी और बी0एल0 वर्मा ने भी भगत सिंह के चित्र पर माल्यार्पण किया।कार्यक्रम के संयोजक राजेंद्र यादव ने सभी कवियों एवं अतिथियों का स्वागत किया।उन्होंने वीर भगत सिंह के देश के प्रति दिये गये बलिदान को अप्रतिम बताया। शिव मूर्ति वर्मा ने आभार प्रदर्शन करते हुए कवियों की वाणी से सीख लेने की बात कही। अध्यक्षता कर रहे गिरिजेश विश्वकर्मा ने कवियों और साहित्यकारों को बहुत ही महत्वपूर्ण बताते हुए ऐसे कार्यक्रमों की महत्ता पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम में दिनेश बहादुर सिंह प्रधान रंगोली,भारत-भारतीय के उपाध्यक्ष सतीश चौरसिया,छोटे लाल वर्मा,पुष्पा यादव,नवरात्रि सरोज,रेखा मौर्या, नंदलाल मौर्य, शिव कुमार यादव,अमरनाथ यादव प्रधानाचार्य, डॉ0सदाशिव वर्मा,राहुल चौधरी पत्रकार, प्रिंस प्रजापति पत्रकार,प्रदीप मिश्र, मनोज कुमार सरोज, लखपति क्रांतिकारी आदि लोग मौजूद रहे।

# भगत सिंह, राजगुरू एवं सुखदेव के शहीदी दिवस को जनपद में धूम-धाम से मनाया गया

**(आधुनिक समाचार सेवा)**

**डॉ0रणजीत सिंह**

**प्रतापगढ़।** जिलाधिकारी डॉ0 नितिन बंसल ने नेतृत्व में आजादी का अमृत महोत्सव की श्रृंखला के अन्तर्गत आजादी की 75वीं वर्षगाठ के अवसर पर कल सायंकाल 23 मार्च को ''रंग दे बसन्ती'' थीम पर आधारित दो दिवसीय कार्यक्रम का समापन सैनिक कल्याण परिसर में शहीदों को नमन करते हुये सम्पन्न किया गया। शहीदी दिवस-स्वतंत्रता संग्राम के अमर नायकों भगत सिंह, राजगुरू एवं सुखदेव की शहादत दिवस मनाये जाने के उपलक्ष्य में जिला सैनिक कल्याण परिसर स्थित शहीद स्तम्भ पर दीप प्रज्जवलन एवं पुष्प अर्पित कर अमर नायकों को श्रद्धांजलि अर्पित की गयी। शहीदी दिवस के अवसर पर अपर जिलाधिकारी (वि0/रा0) मुकेश चन्द्र, अपर जिलाधिकारी प्रथम आर0एन0 यादव, जिला सूचना अधिकारी विजय कुमार, जिला सैनिक कल्याण अधिकारी कर्नल आर0के0 सिंह, जिला अर्थ एवं संख्याधिकारी राजेश सिंह, जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी भूपेन्द्र सिंह, जिला युवा कल्याण एवं प्रादेशिक विकास दल अधिकारी अरूण कुमार सहित अन्य सम्भ्रान्त नागरिकों ने शहीद स्तम्भ पर पुष्पांजलि अर्पित कर अमर नायकों को नमन किया। इस दौरान बैण्ड पार्टी द्वारा राष्ट्रधुन बजाकर शहीदों को श्रद्धांजलि अर्पित की गयी। राजकीय बालिका इण्टर कालेज की छात्राओं द्वारा सरस्वती वन्दना एवं देश भक्ति गीतों की आकर्षक प्रस्तुति की गयी। इस अवसर पर अपर जिलाधिकारी मुकेश चन्द्र ने कहा कि हम अपने मन में अपने देश के प्रति हम समर्पण एवं त्याग

की भावना रखें, अपने देश की सेवा सच्चे मन से करें और हम जहाँ पर है वहां पर हम अपने कर्तव्य का पालन करते हुये जनकल्याणकारी योजनाओं का पारदर्शी ढंग से आम जनता को लाभ दिलाना ही शहीदों को सच्ची श्रद्धाँजलि होगी। इस अवसर पर 1971 युद्ध के दौरान शहीद हुये सैनिकों की विधवाओं को अंगवस्त्रम् एवं माला के माध्यम से अपर जिलाधिकारी द्वारा सम्मानित किया गया। इस अवसर पर जनपद प्रतापगढ़ के कवियों ने अपने देश भक्त गीतों के माध्यम से राष्ट्र प्रेम की गंगा बहायी।कवि सुरेश नारायण दुबे ब्योम को इस अवसर पर अंगवस्त्रम् एवं स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का संचालन डॉ0 मोहम्मद अनीस द्वारा किया गया। इसी क्रम में दिनांक 23 मार्च को मुख्य राजस्व अधिकारी इन्द्र भूषण वर्मा ने युवा कल्याण एवं प्रादेशिक विकास दल एवं नेहरू युवा केन्द्र के स्वयं सेवकों द्वारा शहीदों के सम्मान में निकाली गयी शहीद यात्रा को अम्बेडकर चौराहे से हरी झण्डी दिखाकर रवाना किया जो शहर के चौराहों से होते हुये जिला सैनिक कल्याण कार्यालय के परिसर में शहीद स्तम्भ पर शहीदों को श्रद्धांजलि देकर समाप्त हुई।इसी प्रकार आजादी की 75वीं वर्षगाठ के अवसर पर दिनांक 22 मार्च को समस्त बेसिक व माध्यमिक विद्यालयों में रंगोली प्रतियोगिता, मेंहदी, पेंटिंग, भाषण, वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया एवं छात्र-छात्राओं को पुरस्कृत किया गया।

# उभाँव थाना क्षेत्र मे नाद हटाने को लेकर जमकर चटकी लाठियां कई लोग गंभीर जख्मी होकर पहुंचे अस्पताल

**(आधुनिक समाचार सेवा)**

**शीतल निर्भीक**

**बलिया।** जिले के उभाँव थाना क्षेत्र के जमुआव ग्राम में गुरुवार की सुबह 9:00 बजे पंचायत के दौरान नाद हटाने के विवाद को लेकर चल रहे मसले ने ऐसा विवाद का तुल बढ़ गया कि विवाद मारपीट में तब्दील हो गया एक ही पक्ष के चार लोग गंभीर रूप से जख्मी हो गए एक की हालत गंभीर बनी है। मिली जानकारी के अनुसार उभाँव थाना क्षेत्र वे जमुआव गांव नाद के विवाद को लेकर पीडित परिवार द्वारा उभाँव थाने पर तहरीर दी गई थी एवं 112 नंबर डायल पुलिस को भी बुलाया गया था विवाद के समझौता कराने के लिए वह उभाव थाने पर बुलाया गया था।घायल अपने परिवार के साथ घर से थाने के लिए निकला कि रास्ते में घात लगाकर बैठे विपक्षी पक्ष के सपोर्टर ने जमकर थुनाई कर दी जिसमें माता-पिता समेत दो सगे भाई चोटिल हो गए जैसे ही इस घटना की सूचना उभाँव थाना के प्रभारी निरीक्षक अविनाश सिंह को हुआ वह मौके पर पहुंचकर घायलों को प्राथमिक उपचार हेतु समुदायिक स्वास्थ्य केंद्र सीयर में दाखिल कराए घायलों में रामायण यादव 60 वर्ष कलावती यादव 58

वर्ष अनुज यादव 27 वर्ष अजय यादव उर्फ पप्पू 32 वर्ष जख्मी हो गया जिसमें रामायण यादव की स्थिति गंभीर देखते हुए चिकित्सकों ने जिला सदर अस्पताल के लिए रेफर कर दिया तो वहीं पुलिस मामले की जांच पड़ताल में जुट गई है और दोषियों के विरुद्ध कड़ी कार्रवाई करने का आश्वासन दिया।

# वाराणसी से चार विधायक मंत्री पद की दौड़ में शामिल नाम की घोषणा का इंतजार

**वाराणसी।** लखनऊ में शुक्रवार की शाम मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के शपथ ग्रहण समारोह के साथ ही प्रदेश में मंत्रियों की सूचना भी पूरी तरह से स्पष्ट हो जाएगी। चर्चा के मुताबिक पूर्व की ही भांति मंत्रियों को पद और दायित्व मिलना तय है। हालांकि, इस बार जातिगत और क्षेत्रीय समीकरणों के अलावा महिलाओं और युवाओं को भी मौका दिया जाएगा। इस लिहाज से पीएम नरेन्द्र मोदी के संसदीय सीट वाराणसी से मंत्रियों की संख्या कम से कम तीन होने की उम्मीद पूर्ववत बनी हुई है। अब शाम का इंतजार है जब मंत्रियों को लेकर स्थिति साफ हो जाएगी। वाराणसी में इस बार आठों सीटें भाजपा गठबंधन के हिस्से में गई हैं। जबकि पूर्व में रवींद्र जायसवाल, अनिल राजभर और नीलकंठ तिवारी मंत्री रह चुके हैं। इस बार भी तीनों ने जीत हासिल करने के साथ ही अपनी दावेदारी मंत्री पद के लिए पेश की है। वहीं कैंट सीट से सौरभ श्रीवास्तव भी रिकार्ड मतों से जीतकर युवा चेहरे के तौर पर सामने आए हैं। इस लिहाज से उनकी भी दावेदारी इस बार मंत्री पद को लेकर चर्चा में है। वहीं चार नामों में किसके सिर पर मंत्रीपद का ताज होगा इसको लेकर सिर्फ चर्चाओं का ही दौर जारी है।

पार्टी स्तर पर माना जा रहा है कि इस बाबत लखनऊ और नई दिल्ली में मुख्यमंत्री के साथ बैठक के दौरान तमाम दावेदारों पर मंथन हो चुका है। अब गुरुवार की शाम तक सभी के नाम फाइनल हो जाने की उम्मीद है। इसके बाद सभी को पार्टी और शासन के स्तर पर सूचित कर दिया जाएगा। इस लिहाज से माना जा रहा है कि वाराणसी के सभी मंत्री पद के चेहरे रात तक सामने आ जाएंगे। इस लिहाज से पार्टी के स्तर पर भी चर्चा और कयासबाजी का दौर जारी है। मंत्री नीलकंठ तिवारी इस बार शहर दक्षिणी से बड़ी ही मुश्किल से चुनाव जीत सके थे। लिहाजा पार्टी के स्तर पर उनके नाम को लेकर संशय की स्थिति बन रही है। मगर पार्टी के सूत्र मान रहे हैं कि उनका नाम मंत्री पद की दौड़ में बना हुआ है।

# शपथ ग्रहण समारोह में शामिल होंगे वाराणसी से 2000 भाजपा कार्यकर्ता

**वाराणसी।** योगी आदित्यनाथ सरकार 2.0 के शपथ ग्रहण समारोह में भाजपा संगठन की ताकत को भी प्रदर्शित करेगी। इसके लिए बनारस से 2000 पदाधिकारी शपथ ग्रहण के साक्षी बनेंगे। चुनावी रणनीति बूथ और शक्ति केंद्रों को केंद्रित कर बनाई गई थी। इसलिए 25 मार्च को राजधानी में होने जा

रहे समारोह में भी प्रत्येक शक्ति केंद्र के पदाधिकारी भी इस ऐतिहासिक पल के साक्षी बनेंगे। इसके लिए मंडल व विधानसभा स्तर पर बसों व चार पहिया वाहनों की व्यवस्था की गई है। शाम चार बजे से आयोजित कार्यक्रम में शामिल होने के लिए ज्यादातर लोग सुबह ही रवाना होंगे। विधानसभा क्षेत्रवार तीन-तीन बसों की व्यवस्था की गई है। एक बस महिला मोर्चा की कार्यकर्ताओं को दी गई है। काशी क्षेत्र के मीडिया प्रभारी नवरतन राठी ने बताया कि शपथ ग्रहण समारोह में साधु-संत, धर्माचार्य, समाजसेवी, पद्म अवार्डी, डाक्टर, साहित्यकार, उद्योगपति समेत समाज के विभिन्न वर्गों से लोगों को आमंत्रित किया गया है। शपथ ग्रहण में काशी से स्वामी जितेंद्रानंद सरस्वती महाराज, डा. रामकमल दास वेदांती, स्वामी प्रणय चैतन्यपुरी, स्वामी गंगादास, महामंडलेश्वर आशुतोषानंद गिरि, स्वामी विमलदेव आश्रम महाराज, महंत ईश्वरदास महाराज आमंत्रित हैं। काशी विद्वत परिषद के उपाध्यक्ष रामचंद्र पांडेय, महामंत्री रामनारायण द्विवेदी, संगठन मंत्री विनय कुमार पांडेय, प्रो. भगवत शरण शुक्ल आदि शामिल हैं। प्रदेश में 37 वर्षों बाद प्रदेश में किसी सरकार ने अपने जनकल्याणकारी कार्यों की बदौलत प्रदेश में प्रचंड बहुमत हासिल किया है। इस कारण लोक कल्याण की कामना के लिए सुबह आठ बजे से भाजपा के शक्ति केंद्रों व मंदिरों में लोककल्याण के लिए हवन-पूजन शुरू हो जाएगा। योगी आदित्यनाथ की दोबारा ताजपोशी के शपथ ग्रहण कार्यक्रम के सजीव प्रसारण की व्यवस्था आम जनता के लिए की गई है। इसके लिए सूचना विभाग ने व्यवस्था की है। ये श्री काशी विश्वनाथ धाम के अंदर दो स्थानों के साथ ही तहसील सदर, राजातालाब एवं पिंडरा, जिला मुख्यालय व सिगरा हैं। इन स्थानों पर सांस्कृतिक पार्टियों द्वारा रंगारंग कार्यक्रम भी प्रस्तुत किए जाएंगे।

# जौनपुर पुलिस के महिलाओं की पिटाई का वीडियो वायरल, सीओ घटना को बता रहे गलत

**जौनपुर ।** बदलापुर थाना क्षेत्र के देवरिया गांव की दलित बस्ती में रविवार को विवादित भूमि पर लगे केले के फल को काटने लेने के विवाद को सुलझाने पहुंची पीआरबी पर एक पक्ष द्वारा हमला कर दिया गया था। इसके बाद गुरुवार को महिलाओं की पुलिस द्वारा पिटाई किए जाने का वीडियो इंटरनेट मीडिया पर वायरल होने लगी। वायरल वीडियो में महिलाओं का

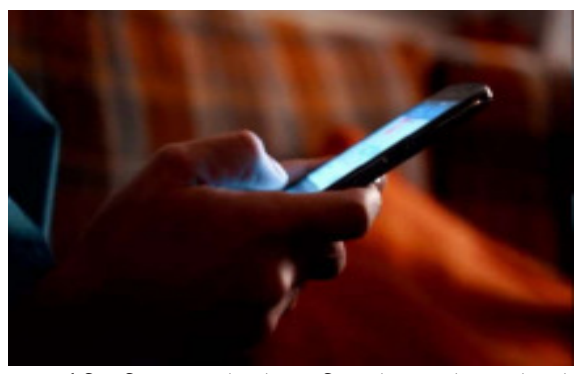

कहना है कि पुलिस द्वारा उन्हें घरों में घुसकर बेरहमी से पीटा गया। बच्चों तक को नहीं छोड़ा गया। गुहार लगाने एसपी के यहां पहुंची वहां भी कोई सुनवाई नहीं हुई। इसे लेकर बस्ती के लोग खौफजदा हैं। हालांकि वायरल वीडियो में पुलिस पर लगाए गए आरोप को सीओ ने गलत बताया। 20 मार्च को उक्त गांव में जियालाल गौतम व जियावन गौतम के बीच केले के फल को काट लेने की घटना पर पहुंची पुलिस की पीआरबी टीम पर रामजियावन पक्ष के लोगों ने धावा बोल दिया था। जिसमें हेड कांस्टेबल राजेश यादव व चालक राजबिहारी को चोटें आई थी। पुलिस ने जियालाल की पुत्री राधा तथा हेड कांस्टेबल राजेश की तहरीर पर दर्जन भर लोगों पर केस दर्ज किया था। पुलिस ने मौके से छह महिलाओं एवं दो पुरुषों को गिरफ्तार कर चालान न्यायालय भेजा था। इसी घटना से जुड़ा वीडियो गुरुवार को इंटरनेट मीडिया में वायरल हुआ। जिसकी पड़ताल के बाबत सीओ अशोक सिंह ने बताया कि पुलिस द्वारा महिलाओं की पिटाई की बात पूरी तरह झूठ व निराधार है, क्योंकि चालान न्यायालय भेजते समय स्वास्थ्य परीक्षण कराया जाता है।

# स्पेशल बैंगनी रंग की पेन का एमएलसी चुनाव में मतदान के दौरान होगा प्रयोग

**जौनपुर।** चुनाव आयोग की ओर से इस बार विधान परिषद के चुनाव के लिए नए सिरे से व्यवस्था बनाई गई है। चुनाव आयोग की तरफ से इस बार मतदान पूरा करने के लिए बैंगनी रंग का पेन बूथ पर भेजी जा रही है। वहीं पोलिंग पार्टियों के साथ इस महत्वपूर्ण पेन को वोटिंग के लिए मतदान केंद्रों पर भेजा जाएगा। इसके लिए अभी से रणनीति बनाई जा रही है। विधान परिषद सदस्य (एमएलसी) के मतदान के लिए स्पेशल पेन का प्रयोग किया जाएगा। बैलेट पेपर पर उपयोग के लिए चुनाव आयोग से स्पेशल पेन भेजा जाएगा। यह पेन बैंगनी कलर का होगा, जिससे बैलेट पेपर पर एकरूपता बनी रहे। वोटिंग के समय मतदाताओं को बाहरी पेन प्रयोग नहीं करना होगा। ऐसा करने पर मत अवैध हो जाएगा। हर बार के एमएलसी चुनाव में सौ से 150 मत गलत तरीके से पड़ने के चलते अवैध हो जाते हैं।

ऐसे में इस बार नई व्यवस्था की जा रही है। पोलिंग पार्टियों की रवानगी के समय सभी को चार से छह पेन दिए जाएंगे, जिससे मतदान केंद्रों पर इसकी कमी न होने पाए। जिले में कुल 150 पेन मंगाए जाएंगे। वर्ष 2010 के एमएलसी चुनाव में कुल मतदाताओं की संख्या 3549 थी, इसमें से 3413 मतदाताओं ने अपने मताधिकार का प्रयोग किया था, इसमें से 164 मत अवैध हो गए थे। वहीं वर्ष 2016 में 150 मत अवैध हो गए थे। मत अवैध होने का कारण दूसरा पेन का प्रयोग करना या तो बैलेट पेपर पर गलत तरीके से मत डालने के लिए चिन्ह लगाया जाना रहा। बोले अधिकारी : इस बार प्रदेश में एमएलसी के मतदान में बैंगनी रंग के स्पेशल पेन का प्रयोग किया जाएगा। जिससे एकरूपता बनी रहे। साथ ही प्रथम व द्वितीय वरीयता के तहत वोट डाले जा सकेंगे। इसमें इस बात का ध्यान रखना होता है कि मत खराब न होने पाए। - राम प्रकाश, उप जिला निर्वाचन अधिकारी।

# मुंबई से वाराणसी आ रहे विमान में मासूम की मौत

**वाराणसी।** गुरुवार को स्पाइस जेट के विमान से वाराणसी पहुंची महिला यात्री के पांच माह के मासूम बच्चे की मौत हो गई। एअरपोर्ट पर विमान लैंड होने पर चिकित्सक ने इसकी पुष्टि की। जानकारी के अनुसार स्पाइस जेट का विमान एसजी 201 मुंबई से सुबह साढ़े सात बजे वाराणसी के लिए उड़ान भरा विमान में मऊ निवासी महिला यात्री पूनम यादव अपने पांच माह के मासूम बच्चे संग यात्रा कर रही थी। विमान हवा में ही था तभी बच्चे की तबीयत बिगड़ी जिसकी सूचना पूनम ने क्रू मेंबर्स को दिया विमान में मौजूद डाक्टरो ने प्रथम उपचार दिया लेकिन कोई आराम नहीं हुआ। विमान के पायलट ने वाराणसी एयरपोर्ट पर लैंड करने से पूर्व इसकी सूचना एटीसी को दी जिसके बाद एयरपोर्ट पर तैनात डाक्टर सुजीत कुमार सिंह विमान के लैंड होने से पूर्व ही एप्रन पर तैनात थे विमान लैंड होने के बाद जब डाक्टर ने जांच की तो बच्चा पहले से ही मृत था। बच्चे के मृत होने की सूचना पर मां पूनम यादव का रो रोकर बुरा हाल हो एयरपोर्ट कर्मी किसी तरह समझा बूझा कर बाहर ले आए और पहले से आगवानी करने मऊ से आए परिजनों से मुलाकात करवाएं। इस बारे में एअरपोर्ट पर तैनात डाक्टर सुजीत कुमार ने बताया कि विमान में बच्चे की तबीयत बिगड़ने की सूचना पर मैंने बच्चे की जांच किया तो बच्चा पहले से ही मृत था। परिजनों के अनुसार उसे पीलिया था ।

# वनाधिकार के लिए आदिवासियों ने खोला मोर्चा

**दुद्धी (सोनभद्र) ।** वनाधिकार कानून के तहत भौमिक अधिकार पाने के लिए बुधवार को शहीद दिवस पर बुधवार को दर्जनभर गांवों से जुटे आदिवासियों ने अपने ह.क के लिए तहसील मुख्यालय के सदस्य टाउन क्लब मैदान पर एकत्र हुए। जुलूस नगर के म्योरपुर मोड़, तहसील मोड़ होते हुए तहसील परिसर पहुंचा। वहां ग्राम वनाधिकार समिति के अध्यक्ष सुकालो देवी ने बताया कि चार वर्ष पहले सामूहिक

पर आवाज बुलंद की। पूर्व राज्यमंत्री विजय सिंह गोंड़ एवं वन श्रमजीवी मंच से जुड़ी सुकालों की अगुवाई में जुलूस एवं प्रदर्शन कर अपनी आवाज बुलंद की। इसके बाद तहसील प्रशासन के प्रतिनिधि के रूप में रजिस्ट्रार कानूनगो को ज्ञापन सौंपकर चार साल पूर्व किए गए दावों के वाद का निस्तारण कर दावेदारों को भौमिक अधिकार देने की मांग की। भगत सिंह, राजगुरु व सुखदेव की शहादत दिवस के अवसर पर ग्राम वनाधिकार समिति के बैनर तले डेढ़ दर्जन ग्राम पंचायतों वनाधिकार के तहत दावा पेश किया था किंतु उस पर अभी तक कोई कार्रवाई नहीं हुई है। सरकारी मशीनरी की तंद्रा भंग करने के लिए शहादत दिवस पर आए हैं। वन अधिकार कानून 2006 के तहत वन भूमि एवं वन संसाधनों पर सामुदायिक अधिकार दावा दाखिल करके शहीदों को श्रद्धांजलि अर्पित कर रहे हैं। इस अवसर पर पानपत्ती, सरस्वती, पान कुंवर, राम लखन, किस्मतिया खरवार, किस्मतिया गोंड़, सुशीला गोंड़ के साथ कई गांवों की महिलाएं उपस्थित रहीं।

# जिला कारागार में बंदियों से मुलाकात की बंदिशें खत्म

**गुरमा (सोनभद्र)।** जिला कारागार गुरमा में निरूद्ध बंदियों से अब उनके स्वजन मिल सकेंगे। जेल प्रशासन ने मुलाकात की बंदिशों को खत्म कर दिया है। अब सप्ताह में एक बार अधिकतम दो व्यक्ति किसी बंदी से मुलाकात कर सकते हैं। कोरोना वायरस के महामारी को लेकर बंदियों की सुरक्षा को देखते हुए जेल प्रशासन ने महामारी के पहले ही शुरुआती दौर में 2020 से मुलाकात बंद कर दिया था। इसके बाद बीच में मुलाकात शुरू हुई थी लेकिन फिर दूसरी लहर में एक जनवरी 2022 से 22 मार्च 2022 तक बंदियों के परिजनों की मुलाकात की व्यवस्था पूरी तरह से बंद कर दी गई। अब नए शासनादेश से नियमों व शर्तों के तहत बुधवार से मुलाकात की व्यवस्था पुनः शुरू कर दी गई है। जिला कारागार अधीक्षक जगदंबा दुबे ने बताया कि वर्तमान परिस्थितियों में मुलाकात की संख्या व मुलाकात करने वाले व्यक्तियों की संख्या को निर्धारित करते हुए बंदियों को अपने परिजनों से सप्ताह में मात्र एक बार अधिकतम 2 व्यक्तियों से मुलाकात की सुविधा होगी। मुलाकात करते समय संक्रमण से बचाव के लिए सभी सावधानियां तथा सामाजिक दूरी, मुलाकातियों के आते समय उनकी थर्मल स्केनिग, सैनिटाईजेशन व फेस मास्क की अनिवार्यता होगी। मुलाकात के बाद बंदियों को भी कारागार की अपनी बैरक में जाने से पूर्व सैनिटाइज किया जाएगा। बंदियों से मिलने आने वाले प्रत्येक व्यक्ति के पास मिलने से 72 घंटे के अंदर की आरटीपीसीआर रिपोर्ट आवश्यक होगी। डबल डोज लगने की रिपोर्ट भी देनी होगी। इन शर्तों, नियमों के तहत मुलाकात शुरू करा दिया गया है।

# पशु पालन प्रबंधन, टीकाकरण व नस्ल सुधार पर विमर्श

**सोनभद्र।** पशुपालन प्रबंधन, टीकाकरण व नस्ल सुधार पर बुधवार को विमर्श किया गया। बुधवार को राबर्ट्सगंज ब्लाक सभागार में पशुपालकों को प्रशिक्षित किया गया मुख्य पशु चिकित्साधिकारी डा. एके श्रीवास्तव ने बताया कि आइटीसी मिशन सुनहरा कल जिले में वर्ष 2018 से कार्य कर रही है। नीति आयोग कार्य योजना के अनुसार आईटीसी मिशन सुनहरा कल कार्यक्रम में कृत्रिम गर्भाधान, पशु टीकाकरण, पशु प्रबंधन को बढ़ावा देने की योजना चला रही है। इसमें दुग्ध उत्पादन में वृद्धि, पशुपालकों के जीविकोपार्जन आदि पर विस्तृत जानकरी दी। कहा कि बकरी पालन, सुकर पालन व कुक्कुट पालन आदि से आय में वृद्धि कराएं। खंड विकास अधिकारी उमेश सिंह ने गौआश्रय स्थल में बेसहारा पशु को आश्रय स्थल में पहुंचाने की विस्तृत जानकारी दी। पशु चिकित्साधिकारी म्योरपुर मास्टर ट्रेनर डा. विवेक सरोज ने पशुओं में खुरपका व मुंहपका टीकाकरण के संबंध में विस्तृत जानकारी दी। पशु चिकित्साधिकारी पिपरी मास्टर ट्रेनर डा. मनीष कुमार ने कृत्रिम गर्भाधन की पालन से सम्बन्धित योजनाओं की जानकारी दी। प्रशिक्षण में डा. विनोद कुमार सिंह उप मुख्य पशु चिकित्साधिकारी चिकित्सा एवं स्वास्थ्य मुख्यालय सोनभद्र, नीरज नाथ मंडी सचिव सोनभद्र, डा. जय सिंह उप मुख्य पशु चिकित्साधिकारी घोरावल, डा. ओपी आनंद पशु चिकित्साधिकारी चतरा, डा. संतोष कुमार राव पशु चिकित्साधिकारी जयमोहरा, डा. विकास बाबू सिंह पशु चिकित्साधिकारी डिबुलगंज, दिनेश कुमार यादव जिला परियोजना समन्वयक, जसवंत सिंह सहायक परियोजना समन्वयक, सुभाचंद्र यादव, सुचीत कुमार सिंह आदि मौजूद रहे।

# जंगल व तहसील परिसर में लगी आग, अफरा-तफरी

**मीरजापुर ।** जनपद के विभिन्न स्थानों पर अगलगी की घटनाओं से अफरातफरी का माहौल रहा। अगिन्कांड में काफी नुकसान हुआ। पटेहरा व हलिया में रिहायशी मड़हा, मड़िहान तहसील परिसर व विंध्याचल क्षेत्र के विजयपुर जंगल में अगलगी की घटनाएं हुईं। ग्रामीणों संग फायर बिग्रेड के जवानों ने काफी मशक्कत के बाद आग पर काबू पाया लेकिन तब तक काफी देर हो चुकी थी। पटेहरा क्षेत्र के बेलहरा निवासी शिवशंकर मंगलवार को गांव के बाहर मकान की पोताई का काम करने गए थे। पड़ोस में हो रही शिवचर्चा में परिवार के अन्य सदस्य गए थे। इसी बीच अचानक आग लग गई और देखते ही झोपड़ी से तेज लपटें उठने लगी। इसकी जानकारी होने पर घर की महिला अंजना 29 दौड़ कर झोपड़ी में बंधी गाय और बछिया को छुड़ाने लगी, लेकिन गाय-बछिया संग वह भी झुलस गई। संयोग अच्छा था कि बच्चे शिवचर्चा में थे वरना भारी हादसा हो जाता। कुछ ही देर में गृहस्वामी शिवशंकर भी घर पहुंच गए। ग्राम प्रधान रमाशंकर सिंह पटेल ने झुलसी महिला को मंडलीय अस्पताल भेजा। ग्राम प्रधान ने बताया कि पीड़ित का छह क्विटल चावल, दो क्विटल गेहूं, 50 किलो चना, डेढ़ क्विटल जौ, सोने व चांदी के जेवर, कपड़े, बर्तन, चारपाई, बिस्तर राख हो गया। राजस्व निरीक्षक प्रमोद कुमार यादव ने बताया कि लेखपाल राजीव कुमार दुबे की रिपोर्ट पर जल्द ही क्षतिपूर्ति दिलाई जाएगी विंध्याचल क्षेत्र के विजयपुर मोर्चा पहाड़ी पर स्थित जंगल में बुधवार को आग लग गई।

# बढ़ रही रोगियों की संख्या, एक वर्ष में मिले ३२२७ क्षय रोगी

**सोनभद्र।** जिले में तमाम कवायद के बावजूद टीबी रोगियों की संख्या में बढ़ोत्तरी हो रही है। वर्ष 2021 में एक जनवरी से 31 दिसंबर तक 3227 टीबी के रोगी मिले। हालांकि इनमें से ज्यादातर स्वस्थ हो गए क्योंकि विभाग की ओर से इन रोगियों का उपचार किया जा रहा है। पुनरीक्षित राष्ट्रीय क्षय नियंत्रण कार्यक्रम के तहत गांव-गांव में अभियान चलाकर टीबी रोगी चिह्नित किए जाते हैं और उनका उपचार किया जाता है। ऐसे में मरीजों को तेजी से आराम मिला है। विभागीय आंकड़ों पर गौर करें तो जिले में वर्ष 2020 में एक जनवरी से 31 दिसंबर तक के बीच 2619 मरीज मिले थे। वर्ष 2021 में यह संख्या 608 बढ़ गई और मरीजों की संख्या 3227 हो गई। हालांकि जिला स्तर पर किये जा रहे प्रयास के तहत कुल 24 टीबी चैंपियन चयनित किये गए हैं जो मरीजों को चिह्नित करते हैं और उनकी पूरी फाइल तैयार कर निर्धारित अवधि तक लगातार उनका उपचार करते हैं। इस संबंध में अपर मुख्य चिकित्साधिकारी/जिला क्षय रोग अधिकारी डाक्टर आरजी यादव ने बताया कि जनपद में पुनरीक्षित राष्ट्रीय क्षय नियंत्रण कार्यक्रम वर्ष 2005 से संचालित है। वर्तमान समय में इस कार्यक्रम के तहत जिले में 27 माइक्रोस्कोपी सेंटर क्रियाशील है जहां क्षय रोग की जांच एवं उपचार की निश्शुल्क सुविधा उपलब्ध है। वर्ष 2021 में 1 जनवरी से 31 दिसंबर 2021 तक जनपद में कुल 3272 रोगी पाए गए थे। पब्लिक सेक्टर से 2715 और प्राइवेट सेक्टर से 557 रोगी शामिल रहे। बताया कि टीबी को मात देकर जिले में चयनित 24 टीबी चैंपियन दूसरों को टीबी से बचाने के लिए जागरूक कर रहे हैं। विभाग के साथ मिलकर यह टीबी चैंपियन चिकित्सकों की ओर से दिए गए सुझाव का पालन करने की भी अपील कर रहे हैं ताकि क्षय रोग से ग्रसित दूसरे लोग भी टीबी से जंग जीत सकें।

# बढ़ने लगी सूरज की तपिश, सताने लगी गर्मी

मीरजापुर : दिन-प्रतिदिन सूरज की तपिश तेज होती जा रही है। न्यूनतम तापमान के साथ अधिकतम तापमान में भी बढ़ोतरी हो गई है। एकाएक गर्मी बढ़ने से लोग हैरान व परेशान हैं। लोगों की मानें तो पिछले वर्षों में कम से कम मार्च माह में ठंडक बनी रहती थी, लेकिन

अब धूप लोगों को परेशान भी करने लगी है। वहीं रात को भी लोगों को गर्मी का अहसास हो रहा है। पंखों का सहारा लिया जा रहा है। जिले का न्यूनतम तापमान 19 डिग्री और अधिकतम तापमान 37 डिग्री रिकार्ड किया गया। मौसम विभाग ने कहा कि अब धीरे-धीरे मौसम बदलेगा। आगे धूप बढ़ने की संभावना है। इस साल मार्च में ही गर्मी ने अपने तेवर दिखाने शुरु कर दिए हैं। नगर निवासी किशन, विकास, हीरा, दिलीप आदि ने कहा कि धूप इतनी तीखी होने लगी है कि शरीर में चुभन शुरू हो जाती है। साथ ही पसीना भी खूब आने लगता है। दिन ही नहीं अब रात को भी गर्मी सताने लगी है। दिन में धूप की तपिश लोगों को खासा परेशान कर रही है। आलम यह है कि थोड़ी देर भी धूप में खड़ा नहीं हुआ जा रहा है और लोग छांव ढूंढते नजर आ रहे हैं। बुधवार को सुबह ही मौसम साफ हो गया था और कुछ देर बाद ही चटख धूप निकल गई थी। इसके बाद धूप तेज होती गई। हवाएं भी चल रही थीं, लेकिन धूप की तपिश के सामने हवा का कोई असर नहीं हो रहा था। दोपहर के 12 बजते-बजते इतनी तेज धूप पड़ने लगी है कि धूप में खड़े होना किसी सजा से कम नहीं लगता। गर्मी बढ़ने के साथ कूलर-पंखे भी चालू हो गए हैं। डीएसटी महामना जलवायु परिवर्तन केंद्र के समन्वयक एवं ग्रामीण कृषि मौसम सेवा बीएचयू वाराणसी के नोडल अधिकारी प्रो. आरके मल्ल व तकनीकी अधिकारी (युवा मौसम वैज्ञानिक) शिव मंगल सिंह ने बताया कि मौसम पूर्वानुमान के आधार पर आने वाले अगले चार से पांच दिनों तक मौसम शुष्क बना रहेगा। न्यूनतम और अधिकतम तापमान में धीरे-धीरे बढ़ोतरी होने की संभावना है। इसके फलस्वरूप गर्म दिन बढ़ने की संभावना है। दिन के समय हवा की गति सामान्य से अधिक रहने की संभावना है। किसानों को सलाह है कि मौसम के परिवर्तन को ध्यान में रखकर ही कृषि क्रियाएं करें।

# मंडलीय सहायक शिक्षा निदेशक बेसिक ने एमडीएम में पकड़ा फर्जी अंकन

**मीरजापुर ।** मंडलीय सहायक शिक्षा निदेशक बेसिक डा. फतेह बहादुर सिंह ने मंडलीय समन्वयक एमडीएम संग कई विद्यालयों का निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान कम्पोजिट विद्यालय खैरही लालगंज मध्यान्ह भोजन योजना (एमडीएम) में छात्रों की संख्या में फर्जी अंकन मिलने पर कड़ी नाराजगी जताया। इस बाबत समुचित उत्तर नहीं देने पर कम्पोजिट विद्यालय खैरही लालगंज के प्रभारी अध्यापक अरविद कुमार उपाध्याय, अनुपस्थित अनुदेशकों से स्पष्टीकरण मांगा। बीएसए मीरजापुर गौतम प्रसाद को निर्देश दिया कि अनुपस्थित अनुदेशकों से स्पष्टीकरण प्राप्त कर नियमानुसार कार्रवाई करें। एडी बेसिक ने कम्पोजिट विद्यालय खैरही लालगंज का मंगलवार को सुबह 11.15 बजे निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान नामांकित 145 बच्चों के सापेक्ष केवल 87 बच्चे उपस्थित मिले। प्रधानाध्यापक द्वारा 115 बच्चों का उपस्थित पंजिका पर अंकन किया गया था। मानकों की अनदेखी करते हुए उपस्थित बच्चों के लिए 01 किलो दाल और 05 किलो चावल से दाल-चावल बनाया जा रहा था। अधिक छात्रों का उपस्थित अंकन करने के संबंध में प्रधानाध्यापक से पूछने पर संतोषजनक उत्तर नहीं दिया गया। प्राथमिक विद्यालय में 64 एवं उच्च प्राथमिक विद्याल में 51 हेतु परिवर्तन लागत की धनराशि प्राथमिक विद्यालय में 318.08 रुपया और उच्च प्राथमिक विद्यालय में 379.95 रुपया व्यय हो रहा है। इस प्रकार कुल धनराशि रुपया व्यय 698.03 हो रहा है। प्रभारी अध्यापक अरविद कुमार उपाध्याय द्वारा उपस्थित छात्रों का अधिक अंकन कर धनराशि का आहरण किया जाता है, जो नियमानुसार सही नहीं है। विद्यालय में काफी गंदगी मिली। पूर्व माध्यमिक विद्यालय बामी लालगंज में 329 बच्चे नामांकित मिले, इसके सापेक्ष 201 बच्चे उपस्थित मिले। निरीक्षण के दौरान विद्यालय में 01 इंचार्ज प्रभारी अध्यापक सहित 04 सहायक और दो अनुदेशक कार्यरत मिले, जिसमें से अनुदेशक मुलायम सिंह यादव 21 मार्च से तथा अनुदेशक बीनू देवी 22 मार्च को अनुपस्थित मिली। एमडीएम में दाल-चावल बनते मिला। बीएसए मीरजापुर को निर्देश दिया कि अनुपस्थित अनुदेशकों से स्पष्टीकरण प्राप्त कर नियमानुसार कार्रवाई करें। कम्पोजिट विद्यालय राजापुर लालगंज में निरीक्षण करने के दौरान नामांकित 318 छात्रों के सापेक्ष 206 छात्र उपस्थित मिले।

# बीना-ककरी कोल परियोजना में बनेगी ९.५ एमटीपीए क्षमता की सीएचपी

**अनपरा (सोनभद्र) ।** कोयला खान और संसदीय कार्य मंत्री प्रहलाद जोशी एवं रेल राज्यमंत्री रावसाहेब पाटिल दानवे ने एनसीएल में वर्चुअल माध्यम से 1500 करोड़ रुपये की फर्स्ट माइल कनेक्टिविटी (एफएमसी) और सड़क परियोजनाओं की आधारशिला रखी। इस दौरान जोशी ने एनसीएल की निगाही परियोजना में 10 एमटीपीए के कोल हैंडलिग प्लांट (सीएचपी) की आधारशिला रखी। एनसीएल की बीना-ककरी परियोजना के लिए 9.5 एमटीपीए की वार्षिक क्षमता वाले एक अन्य सीएचपी की आधारशिला रखी। रेल राज्य मंत्री रावसाहेब पाटिल दानवे ने कहा कि एफएमसी परियोजनाओं के बनने से पर्यावरण के अनुकूल मशीनीकृत कोयला प्रेषण प्रणाली को बढ़ावा मिलेगा। एनसीएल की प्रति वर्ष 19.5 मिलियन टन कोयला प्रेषण क्षमता बढ़ेगी। यह परियोजनाएं दीर्घकालिक और हरित प्रेषण की दिशा में कंपनी के प्रयासों में एक मील का पत्थर साबित होगी। कोल सचिव डा. अनिल कुमार जैन ने कहा कि यंत्रीकृत और पर्यावरणीय तरीकों से कोयला परिवहन और हरित खनन की दिशा में कंपनी द्वारा किए जा रहे कार्य प्रशंसनीय हैं। कोल इंडिया के सीएमडी प्रमोद अग्रवाल ने हरित व दीर्घकालिक खनन व स्वच्छ प्रेषण की दिशा में कंपनी द्वारा किए जा रहे कार्यों की विस्तृत जानकारी दी। विश्वास जताया कि कंपनी राष्ट्र की ऊर्जा आत्मनिर्भरता में अहम भूमिका निभाती रहेगी। सीएमडी एनसीएल भोला सिंह ने सभी अतिथियों का स्वागत किया। निदेशक एसएस सिन्हा ने सभी परियोजनाओं का विवरण दिया। निदेशक अनिद्य सिन्हा ने धन्यवाद ज्ञापित किया। इस अवसर पर अपर सचिव वीके तिवारी, एम नागराजू, एनसीएल के सीएमडी भोला सिंह समेत सभी अनुषंगी कंपनियों के निदेशक, मंत्रालय व कोल इंडिया के वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित रहे। खदानों में आंतरिक कोयला परिवहन को बनेगी सड़कें कोयला मंत्री ने खदान के अंदर व आसपास के क्षेत्र में सड़क विकास परियोजनाओं की भी आधारशिला रखी। इसके तहत यूपी और एमपी में स्थित एनसीएल की विभिन्न परियोजनाओं में खदानों के भीतर आंतरिक कोयला परिवहन के लिए 49.6 किलोमीटर सीमेंट कंक्रीट (सीसी) सड़क का निर्माण किया जाएगा। मध्यप्रदेश में अमलोरी, ब्लाक-बी, निगाही, जयंत, झिगुरदा और दुधीचुआ तथा उत्तर प्रदेश में खड़िया, बीना, ककरी और कृष्णशिला खदानों में सड़क बनाई जाएगी। कार्यक्रम के दौरान एनसीएल की ई-बुक री-डिफाइनिग ग्रीन पुस्तक का विमोचन किया गया। इस पुस्तक के माध्यम से स्थायी खनन प्रथाओं को बढ़ावा देने की दिशा में कंपनी के प्रयासों को प्रस्तुत किया गया है। यह पुस्तक पर्यावरण, समाज और कर्मियों की बेहतरी व कल्याण की दिशा में कंपनी की पहल को दर्शाती है।

# सपा प्रत्याशी ने पर्चा लिया वापस निर्विरोध एमएलसी बनेंगे विनीत

**मीरजापुर ।** उत्तर प्रदेश विधान परिषद (एमएलसी) चुनाव को लेकर बदलते घटनाक्रम के मद्देनजर बुधवार दोपहर को समाजवादी पार्टी के प्रत्याशी रमेश यादव ने अपना पर्चा वापस ले लिया। यह जानकारी निरस्त कर दिया था। इसके बाद से सपा प्रत्याशी के पर्चा वापस लेने की चर्चा चल रही थी। इसी बीच बुधवार को सपा प्रत्याशी रमेश यादव ने अपना पर्चा वापस ले लिया। इसके बाद भाजपा प्रत्याशी श्याम

होते ही सियासी हलके में हड़कंप मच गया। इसके पहले नामांकन पत्रों की जांच के दौरान जिला निर्वाचन अधिकारी प्रवीण कुमार लक्षकार ने निर्दल प्रत्याशी प्रेमचंद्र का पर्चा अवैध घोषित करते हुए नारायण सिंह उर्फ विनीत सिंह का निर्विरोध चुना जाना तय माना जा रहा है। बसपा से अपना राजनीतिक सफर शुरू करने वाले विनीत सिंह पहली बार वर्ष 2010 में बसपा सीट से एमएलसी चुने गए थे। उनकी पतने प्रमिला सिंह दो बार जिला पंचायत अध्यक्ष रह चुकी हैं। पूर्व एमएलसी व भाजपा प्रत्याशी श्याम नारायण सिंह उर्फ विनीत सिंह ने वर्ष 2010 में मीरजापुर प्राधिकारी निर्वाचन सीट से जीत हासिल की थी। जीत के बाद विनीत सिंह मीरजापुर से ही 2010 और 2015 में दो दफा अपनी पतने और एक बार अपने करीबी को जिला पंचायत अध्यक्ष बनाने में कामयाब रहे। विंध्याचल मंडल के मीरजापुर और सोनभद्र में उनका जलवा पिछले साल हुए जिला पंचायत अध्यक्ष के चुनाव में भी कायम रहा। विनीत सिंह ने न केवल मीरजापुर बल्कि वाराणसी के पंचायत चुनाव में भी अपनी ताकत का अहसास कराया था जब चोलापुर ब्लाक प्रमुख की कुर्सी पर अपने पसंदीदा को जीत दिलाई। पूर्व एमएलसी और भाजपा नेता विनीत सिंह का क्षत्रियों में अच्छा खासा प्रभाव है। वाराणसी, चंदौली, मीरजापुर समेत कई जिलों में उनका अच्छा खासा प्रभाव भी है।

# पद्मश्री अजिता का मीरजापुर में पहुंचने पर स्वागत

**मीरजापुर ।** राष्ट्रपति रामनाथ कोविद से पद्मश्री सम्मान से सम्मानित होने के बाद कजली गायिका अजिता श्रीवास्तव से मिला पद्मश्री सम्मान और जनता का प्रेम कभी भुला नहीं पाएंगी। प्रसिद्ध कजरी गायिका अजिता श्रीवास्तव का जन्म

पहली बार बुधवार को गृह जनपद मीरजापुर पहुंची। जनपद में पहुंचने पर लोगों ने फूल-मालाओं से भव्य स्वागत किया। स्वागत से पद्मश्री अजिता श्रीवास्तव भावुक हो उठीं। मां विध्यवासिनी को नमन किया और विंध्य की जनता का आभार जताया। कहा कि मां विध्यवासिनी के आशीर्वाद वाराणसी जिले में हुआ है। काशी हिदू विश्वविद्यालय से परास्नातक, गोरखपुर विश्वविद्यालय से बीएड व प्रयाग संगीत समिति से संगीत प्रभाकर कर संगीत विद्या की महारत हासिल की हैं। नगर के आर्य कन्या इंटर कालेज में संगीत प्रवक्ता पद से सेवानिवृत्त हो चुकी हैं। इन्होंने साहित्य के क्षेत्र में अतुलनीय योगदान दिया। अजिता श्रीवास्तव आकाशवाणी वाराणसी के भोजपुरी लोक संगीत की उच्च श्रेणी की गायिका हैं। लखनऊ दूरदर्शन, संस्कृत विभाग, संगीत नाटक अकादमी उत्तर प्रदेश, मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र, सूचना विभाग, पर्यटन विभाग, भारतीय संस्कृति संबंध परिषद तथा टी-सीरीज कंपनी में अपनी प्रस्तुति दे चुकी हैं।

# फर्जी अभिलेखों के आधार पर अभ्यर्थियों ने ली नौकरी, २१ को नोटिस

**मीरजापुर ।** माध्यमिक शिक्षा विभाग में दूसरे के अभिलेख पर प्रियंका द्वारा नौकरी करने का प्रकरण समाप्त नहीं हुआ कि अब बेसिक शिक्षा विभाग में भी फर्जीवाड़ा प्रकाश में आया है। फर्जी व कूटरचित कागजातों के आधार पर लगभग 21 लोगों ने नौकरी ली। जांच में स्पष्ट पाया कि तत्कालीन जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी द्वारा 15000 और 16448 शिक्षक भर्ती से संबंधित 21 अभ्यर्थियों का चयन व नियुक्ति नियम विरुद्ध ढंग से किया गया है। मंडलीय सहायक शिक्षा निदेशक बेसिक डा. फतेह बहादुर सिंह ने बीएसए मीरजापुर गौतम प्रसाद को निर्देश दिया कि संबंधित अभ्यर्थियों के चयन व नियुक्ति के नियुक्ति प्राधिकारी होने के कारण अपने स्तर से विधिवत स्वयं भी जांच कर लें। इसके बाद अनियमित नियुक्ति मिलने पर संबंधित को पर्याप्त समय देते हुए सुनवाई करने के उपरांत यथोचित कार्रवाई करें, अन्यथा भविष्य में विसंगति की दशा में आपकी भी संलिप्तता मानी जाएगी। कार्रवाई करते हुए अवगत भी कराएं। लोहंदी महावीर मार्ग निवासी आदर्श तिवारी ने बीते 22 जुलाई 2021 को महानिदेशक स्कूल शिक्षा को शिकायती पत्र भेजा था। इसमें तत्कालीन बीएसए मीरजापुर द्वारा शिक्षक भर्ती प्रक्रिया में अनियमितता का आरोप लगाया था। प्रकरण को गंभीरता से लेते हुए महानिदेशक द्वारा जांच का निर्देश संबंधित अधिकारियों को दिया गया। महानिदेशक स्कूल शिक्षा से शिक्षक भर्ती में अनियमितता की शिकायत की गई थी। शासन से निर्देश के बाद शिकायत की गहनता से जांच की गई है। जांच रिपोर्ट उच्चाधिकारियों को भेज दिया गया है। कार्रवाई का निर्णय शासन द्वारा किया जाएगा।

# मरीजों ने मंडलीय चिकित्सालय में किया हंगामा

**मीरजापुर ।** मंडलीय चिकित्सालय में दो दिन बाद एक्सरे का नंबर आने पर बुधवार को मरीज भड़क गए और चिकित्सालय परिसर में हंगामा मचाने लगे। मरीजों ने कहा कि वे लोग पिछले 24 घंटे से एक्सरे कराने के लिए चिकित्सालय में चक्कर काट रहे हैं ,लेकिन उनका नंबर नहीं आ रहा। दूसरे दिन भी दोपहर हो गए ,लेकिन नंबर नहीं आ रहा है। ऐसे में उनका मरीज दर्द से तड़प रहा है। मरीजों ने लचर चिकित्सीय व्यवस्था को लेकर चिकित्सालय प्रशासन के साथ ही सरकार को भी कोसा।मंडलीय चिकित्सालय में आने वाले दुर्घटना समेत अन्य कुछ मरीजों को चिकित्सक एक्सरे या अल्ट्रासाउंड कराने का निर्देश दे रहे हैं, इसके बाद ही दवा या इलाज करने की बात बोल रहे है। ऐसे में मरीज एक्सरे कराने के लिए जब कक्ष में पहुंच रहे तो वहां सैंकड़ों लोगों की पहले से ही लाइन लगी रहती है। यह देख लोग हैरान हो जा रहे है। एक्सरे कराने के लिए जैसे ही परचा दे रहे हैं तो उन्हें बताया जा रहा है कि पहले से ही बहुत परचा जमा है। प्रतिदिन सौ से डेढ़ सौ मरीजों का एक्सरे किया जा रहा है। ऐसी दशा में पूरे दिन बीत जा रहे है। इसलिए उनका नंबर दूसरे दिन आएगा। इसलिए वे अपने मरीज को लेकर दूसरे दिन आए। यहीं हाल अल्ट्रासाउंड का भी है। बुधवार को हाथ टूटने के बाद उसका एक्सरे कराने आए लालगंज निवासी रामआसरे व नगर निवासी पैर का एक्सरे कराने विकास आदि दर्जनों मरीजों ने बताया कि चिकित्सालय में बहुत ही धीमी गति से कार्य किया रहा है। इससे मरीजों को परेशानी हो रही है। उनका एक्सरे नहीं हो पा रहा है। मरीजों ने आरोप लगाया कि निजी पैथालॉजी को लाभ पहुंचाने के लिए काम धीमी गति से किए जा रहे है। इससे मरीजों का एक्सरे नहीं हो पा रहा है। नाराज मरीजों ने चिकित्सालय परिसर में हंगामा करते हुए व्यवस्था सुधरवाने की मांग की। किसी का दूसरे दिन एक्सरे में नंबर आ रहा है, ऐसी कोई बात नहीं है। जितने भी मरीज आ रहे हैं, सभी का एक्सरे कर दिया जा रहा है। इसके लिए दो शिफ्ट में एक्सरे किए जा रहे हैं।

# लखनऊ को मिला वुड का रिप्लेसमेंट, आइपीएल ११वें सीजन के पर्पल कैप विनर गेंदबाज को किया शामिल

**नई दिल्ली।** इंडियन प्रीमियर लीग की नई टीम लखनऊ सुपरजाइंट्स को तमामा कोशिशों के बावजूद आखिराकर मार्क वुड का रिप्लेसमेंट मिल गया है। टीम ने वुड के रिप्लेसमेंट के तौर पर आस्ट्रेलिया गेंदबाज एंड्रयू टाय को शामिल किया है। वुड वेस्टइंडीज के खिलाफ पहले टेस्ट में चोटिल हो गए थे जिसके बाद इंग्लैंड क्रिकेट बोर्ड ने जानकारी दी थी कि वो बाकी बचे टेस्ट मैच और आइपीएल नहीं खेल पाएंगे। वुड के रिप्लेसमेंट को लेकर कई दिनों से सस्पेंस बना हुआ था। पहले बांग्लादेश के तेज गेंदबाज तस्कीन अहमद को अप्रोच किया गया था लेकिन बांग्लादेश क्रिकेट बोर्ड ने उन्हें मंजूरी नहीं दी। उसके बाद जिम्बाब्वे के तेज गेंदबाज ब्लेसिंग मुजराबानी का नाम आया लेकिन ये खबर भी सही साबित नहीं हुई। अब जाकर टाय को शामिल कर लिया गया है। उनको लखनऊ सुपरजाइंट्स ने एक करोड़ रुपये में अपने साथ जोड़ा है। इससे पहले राजस्थान रायल्स का हिस्सा रहे टाई ने

व्यक्तिगत कारणों से पिछला सत्र बीच में ही छोड़ दिया था। लखनऊ के लिए टाय का विकल्प बेहतर माना जा सकता है क्योंकि टाय 2018 के आइपीएल सीजन में पर्पल कैप होल्डर रहे हैं। डेथ ओवर में गेंदबाजी करने में माहिर टाय के आइपीएल करियर की बात करें तो उनके नाम 27 मैचों में 40 विकेट हैं जबकि आस्ट्रेलिया के लिए उन्होंने 32 टी-20 मैच खेले हैं और 47 विकेट झटके हैं। टाय के जुड़ जाने के बाद लखनऊ की टीम की गेंदबाजी और भी मजबूत हो जाएगी। टीम में आवेश खान, दुष्मंथा चमीरा और अंकित राजपूत पहले से ही मौजूद हैं। इसके अलावा यदि लखनऊ में गेंदबाजी विकल्प की बात करें तो जेसन होल्डर, मार्कस स्टोईनिस और काइल मेयर्स के रूप में टीम के पास बेहतरीन आलराउंडर मौजूद हैं। बल्लेबाजी में भी टीम के पास केएल राहुल, क्विंटन डी काक, दीपक हुड्डा, मनीष पांडे जैसे विकल्प मौजूद हैं। टीम अपना पहला मैच 28 मार्च को गुजरात के साथ खेलेगी।

# राफेल नडाल हुए चोटिल, पसली की चोट के कारण छह सप्ताह के लिए बाहर

**नई दिल्ली।** स्पेन के टेनिस स्टार राफेल नडाल के चाहने वालों के लिए बुरी खबर आई है। हाल ही में आस्ट्रेलिया ओपन का खिताब अपने नाम करते हुए विश्व रिकार्ड बनाने वाले नडाल अब अगले कई हफ्तों तक टेनिस कोर्ट से दूर रहेंगे। स्पेन के सुपर स्टार की पसली में चोट

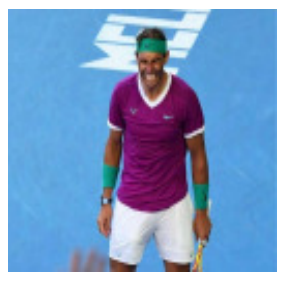

आई है जिसकी वजह से उनको 6 हफ्ते तक आराम करने की सलाह दी गई है। स्पेन के दिग्गज टेनिस खिलाड़ी राफेल नडाल को इंडियन वेल्स टेनिस टूर्नामेंट के फाइनल में टेलर फ्रिट्ज के खिलाफ मैच से पहले पसली में गंभीर चोट का सामना करना पड़ा। जब वह मैच में खेल रहे थे तो बिल्कुल भी सहज नजर नहीं आ रहे थे। मैच के दौरान कई बार उनको सीने पर हाथ रखते हुए देखा गया। पिछले साल ही उन्होंने चोट से वापसी करते हुए कोर्ट पर कदम रखा था। नडाल के हवाले से कहा गया, 'यह अच्छी खबर नहीं है और मुझे इसकी उम्मीद नहीं थी। मैं काफी निराश और दुखी हूं क्योंकि सत्र की अच्छी शुरुआत के बाद बेहतर महसूस कर रहा था। मुझे धैर्य रखना होगा और ठीक होने के बाद कड़ी मेहनत करनी होगी।' उन्हें मैच के दौरान कई बार अपने सीने को हाथ से रगड़ते हुए देखा गया था। इस साल के पहले ग्रैंड स्लैम आस्ट्रेलिया ओपन के फाइनल में रूस के डेनिल मेदवेदेव तो मात देकर इतिहास रचा। नडाल ने दो सेट से पिछड़कर बेहतरीन तरीके से वापसी करते हुए मेदवेदेव को पांच घंटे 24 मिनट तक चले मुकाबले में 2-6, 6-7 (5), 6-4, 6-4, 7-5 से हराकर जीत दर्ज की। स्विट्जरलैंड के दिग्गज रोजर फेडरर के 20 ग्रैंड स्लैम के खिताब हासिल करने के रिकार्ड को पीछे छोड़ते हुए नडाल सबसे ज्यादा ग्रैंड स्लैम जीतने वाले खिलाड़ी बने।

# जिस गेंदबाज की खोज में थी लखनऊ उसी ने बांग्लादेश को दिलाई दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ ऐतिहासिक जीत

**नई दिल्ली।** बांग्लादेश ने दक्षिण अफ्रीका को तीसरे वनडे में 9 विकेट से हराकर तीन मैचों की वनडे सीरीज जीत ली है। ये बांग्लादेश की दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ पहली और ऐतिहासिक जीत है। इस मैच में बांग्लादेश की तरफ से जीत के दो हीरो रहे पहले तस्कीन अहमद जिन्होंने 5 विकेट लेकर दक्षिण अफ्रीका को केवल 154 रन पर आल आउट कर दिया तो दूसरे कप्तान तमीम इकबाल जिन्होंने नाबाद 84 रन की पारी खेलकर 24वें ओवर में मैच बांग्लादेश के नाम कर दिया और सीरीज पर 2-1 से कब्जा कर लिया। तमीम के अलावा लिटन दास ने 48 रन की पारी खेली। इससे पहले इसी

मैदान पर बांग्लादेश ने पहला वनडे मैच 38 रन से जीतकर सबकों चौंका दिया था। उस मैच में बांग्लादेश ने 314 रनों का स्कोर खड़ा किया था और दक्षिण अफ्रीका को 276 रन पर आलआउट कर दिया था। हालांकि दूसरे मैच में दक्षिण अफ्रीका ने शानदारी वापसी की थी और बांग्लादेश को 7 विकेट से हराकर सीरीज को 1-1 से बराबर कर दिया था। इस मैच में बांग्लादेश केवल 194 रन ही बना पाई थी। लेकिन आखिरी और डिसाइडर मैच में बांग्लादेश ने ऐतिहासिक जीत दर्ज कर पहली बार दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ सीरीज जीती है। बांग्लादेश की तरफ से इस सीरीज के हीरो रहे तस्कीन अहमद जो 'प्लेयर आफ द सीरीज' और आखिरी मैच में 'मैन आफ द मैच' बने। आइपीएल 2022 की नई टीम लखनऊ सुपरजाइंट्स अपने तेज गेंदबाज मार्क वुड के रिप्लेसमेंट के तौर पर तस्कीन अहमद को टीम में शामिल करना चाहती थी लेकिन बांग्लादेश क्रिकेट बोर्ड ने उन्हें आइपीएल खेलने के लिए मंजूरी नहीं दी और कहा कि वे दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ वनडे सीरीज खेल रहे हैं। तस्कीन ने बोर्ड के निर्णय को सही साबित करते हुए दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ ऐतिहासिक जीत में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

# आइपीएल के इस सीजन में ये दो खिलाड़ी होंगे मुंबई के ओपनर रोहित शर्मा ने दी जानकारा

**नई दिल्ली।** इंडियन प्रीमियर लीग के सबसे सफल कप्तानों में से एक रोहित शर्मा ने टीम की तैयारियों के बारे में बात की है। बुधवार 23 मार्च को मुंबई इंडियंस के कप्तान मीडिया के सवालों का जवाब देने आए थे। वर्चुअल प्रेस कान्फ्रेंस में टीम के कोच महेला जयवर्धने भी उनको साथ मौजूद थे। टीम को होम कंडीशन का फायदा मिलने पर रोहित ने कहा कि ऐसा कुछ नहीं है क्योंकि टीम में आए

ज्यादातर खिलाडियों को मुंबई में खेलने का अनुभव नहीं है। रोहित ने उनके साथ नए सीजन में पारी की शुरुआत कौन करेगा इसको लेकर भी जवाब दिया। उन्होंने कहा मैं ओपनिंग करूंगा। मैंने पहले भी ऐसा किया है और इशान के साथ मैं इसे आगे भी जारी रखूंगा इशान किशन को मुंबई ने इस बार 15.25 करोड़ की बड़ी राशि में खरीदा है। ऐसा पहली बार हुआ है जब मुंबई ने किसी खिलाड़ी के लिए 10 करोड़ से अधिक की बोली लगाई है। मुंबई के कोच महेला जयवर्धने का भी कहना है कि इशान और रोहित की जोड़ी टीम के लिए सही है। उन्होंने कहा कि टीम में कुछ ही खिलाड़ी हैं जो टाप थ्री में बल्लेबाजी कर सकते हैं। रोहित के ओपनिंग की बात करें तो उन्होंने टीम की भलाई के लिए खुद के बल्लेबाजी क्रम को लेकर 2019 तक काफी बदलाव किया था, लेकिन 2019 में उन्होंने ओपनिंग की और काफी सफल रहे। उस सीजन में उन्होंने 405 रन बनाए जिसमें दो अर्धशतकीय पारी शामिल थी। कप्तान ने इस फार्मूले को 2020 में भी अपनाया और रोहित ने 332 रन बनाए। खास बात ये रही कि दोनों सीजन में मुंबई ने खिताब अपने नाम किया। 2021 में रोहित ने 381 रन बनाए लेकिन टीम प्लेआफ में भी जगह नहीं बना पाई। 2022 सीजन को लेकर रोहित एक बार फिर से ओपनिंग करते हुए नजर आएंगे। हालांकि उन्होंने कहा कि टीम की जरुरत के हिसाब से वे किसी भी नंबर पर बल्लेबाजी कर सकते हैं। इस बार मुंबई के पास मध्यक्रम में पांड्या ब्रदर्स नहीं है। ऐसे में रोहित के ओपनिंग करने के बाद मुंबई की टीम मध्यक्रम के लिए सूर्यकुमार यादव और काइरोन पोलार्ड होंगे। मुंबई अपने आइपीएल अभियान की शुरुआत 27 मार्च को दिल्ली के साथ करेगी। इस मैच में मुंबई के लिए सूर्यकुमार यादव उपस्थित नहीं रहेंगे।

# पूर्व कोच शास्त्री बोले, ना रोहित शर्मा जवान होंगे और ना ही विराट, अब किसी और को कप्तानी के लिए देखना होगा

**नई दिल्ली।** भारतीय टीम के पूर्व कोच रवि शास्त्री ने विराट कोहली के साथ मिलकर टीम इंडिया के लंबे समय तक काम किया। इस जोड़ी ने काफी सीरीज जीती लेकिन

आइसीसी ट्राफी कप्तान और कोच की योजना कभी कारगर साबित नहीं हुई। दोनों बड़े इवेंट में नाकाम साबित हुए और नतीजा हुआ कि बीसीसीआइ को थक हारकर दोनों को हटाना पड़ा। शास्त्री के कार्यकाल को आगे नहीं बढ़ाया गया जबकि विराट कोहली को वनडे की कप्तानी से हटाया गय पूर्व कोच शास्त्री ने रोहित को कप्तान बनाए जाने पर अपनी प्रतिक्रिया कई बार दी है। इस बार उनका कहना है कि कि अब रोहित हो या विराट दोनों की उम्र उनका साथ नहीं देगी। उम्र बढ़ेगी कम नहीं होने वाली है तो बीसीसीआइ के नए कप्तान के विकल्प को अभी से तैयार कर लेना चाहिए। शास्त्री ने कहा, ठना तो रोहित ही अब जवाब होने जा रहे हैं और ना ही विराट कोहली। अब भारतीय टीम के देखना होगा कि अगले दो से तीन साल के अंदर में कौन अगला कप्तान हो सकता है। आइपीएल में रिषभ पंत, श्रेयस अय्यर और हार्दिक पांड्या अपनी फ्रेंचाइजी टीम की कप्तान करेंगे। रिषभ दिल्ली कैपिटल्स के कप्तान है जबकि कोलकाता ने श्रेयस को इस सीजन कप्तान चुना है। ऐसे ही नई फ्रेंचाइजी टीम गुजरात टाइटंस ने हार्दिक पांड्या को कप्तान बनाया है तो केएल राहुल जो पंजाब किंग्स की कप्तानी कर रहे थे अब नए सीजन में लखनऊ सुपर जायंट्स के कप्तान होंगे। शास्त्री ने कहा, ठयही वो लोग हैं जिनकी तरफ मैं देख रहा हूं। मैं रिषभ पंत की तरफ देख रहा हूं। मैं श्रेयस अय्यर की तरफ भी देख रहा हूं और यकीनन केएल राहुल तो कप्तान बनने के सबसे ज्यादा करीब हैं जिस तरह से उन्होंने अपनी टीम का नेतृत्व किया है। हार्दिक पांड्या को चुनने की एक बहुत ही साधारण की वजह है कि जिस तरह से वह अपने आप को ऊर्जावान रखते हैं और खेलने मैदान पर उतरते हैं वह टीम के साथियों में भी वैसी ही ऊर्जा बनाए रखेंगे।

# गुजरात टाइटंस कब-कब खेलेगी अपने मुकाबले, देखिए पूरा शेड्यूल

**नई दिल्ली।** आइपीएल 2022 के शुरू होने में कुछ दिन रह गए हैं। ऐसे में सभी टीम ने अपनी कमर कस ली है। पहली बार आइपीएल खेल रही गुजरात टाइटंस की टीम आनपेपर काफी मजबूत दिख रही है। टीम की कमान भले ही नए कप्तान हार्दिक पांड्या के हाथों में है लेकिन टीम संतुलित नजर आ रही है। हार्दिक से टीम को काफी उम्मीदें हैं। आइपीएल का ये सीजन न केवल गुजरात टाइटंस के लिए महत्वपूर्ण रहेगा बल्कि पांड्या के टीम इंडिया में आने का रास्ता भी यही से निकलेगा। इसलिए उनके पास दोहरी जिम्मेदारी है। टीम को चेन्नई सुपर किंग्स, सनराइजर्स हैदराबाद, रायल चैलेंजर्स बैंगलोर, और पंजाब किंग्स के साथ ग्रुप बी में जगह मिली है। टीम पहली बार खेल रही है इसलिए इस पर किसी तरह की उम्मीदों का भार नहीं है और यही इस टीम की ताकत है। टीम में शुभमन गिल, हार्दिक पांड्या, डेविड मिलर, लाकी फर्ग्यूसन, मोहम्मद शमी, विजय शंकर और राशिद खान जैसे मैच जिताऊ खिलाड़ी मौजूद है। टीम अपना पहला मैच एक अन्य नई टीम लखनऊ सुपर जाइंट्स के साथ 28 मार्च को खेलेगी। 28 मार्च- लखनऊ सुपर जाइंट्स 7.30 शाम वानखेड़े स्टेडियम 2 अप्रैल- दिल्ली कैपिटल्स 7.30 शाम एमसीए स्टेडियम 8 अप्रैल- पंजाब किंग्स 7.30 शाम ब्रेबोन स्टेडियम 11 अप्रैल- सनराइजर्स हैदराबाद 7.30 शाम डीवाई पाटिल स्टेडियम 14 अप्रैल- राजस्थान रायल्स 7.30 शाम डीवाई पाटिल स्टेडियम 17 अप्रैल- चेनर्ई सुपर किंग्स 7.30 शाम एमसीए स्टेडियम 23 अप्रैल- कोलकाता नाइटराइजर्स 3.30 दोपहर डीवाई पाटिल स्टेडियम27 अप्रैल- सनराइजर्स हैदराबाद 7.30 शाम वानखेड़े स्टेडियम 30 अप्रैल- रायल चैलेंजर्स बैंगलोर 3.30 दोपहर

ब्रेबोन स्टेडियम 3 मई- पंजाब किंग्स 7.30 शाम डीवाई पाटिल स्टेडियम 6 मई- मुंबई इंडियंस 7.30 शाम ब्रेबोन स्टेडियम 10 मई- लखनऊ सुपरजाइंट्स 7.30 शाम एमसीए स्टेडियम 15 मई- चेन्नई सुपर किंग्स 3.30 दोपहर वानखेड़े स्टेडियम 19 मई- रायल चैलेंजर्स बैंगलोर 7.30 शाम वानखेड़े स्टेडियमशुभमन गिल, हार्दिक पांड्या (कप्तान), डेविड मिलर, लाकी फर्ग्यूसन, मोहम्मद शमी, विजय शंकर, राशिद खान, मैथ्यू वेड(विकेटकीपर), रिद्धिमान साहा(विकेटकीपर), गुरकीरत सिंह मान, रहमानुल्लाह गुरबाज, अभिनव सदरांगिनी, साई सुदर्शन, राहुल तेवतिया, जयंत यादव, डामनिक ड्रेक्स, अल्जारी जोसेफ, दर्शन नलकांडे, वरुण एरान, नूर अहमद, आर साइ किशोर, यश दयाल और प्रदीप सांगवान।

# रवींद्र जडेजा ने दोबारा हासिल की नंबर वन की कुर्सी तो रैंकिंग में फिसले रोहित शर्मा

**नई दिल्ली।** भारत के आलराउंडर रवींद्र जडेजा एक बार फिर से वर्ल्ड के नंबर वन आलराउंडर बन गए हैं। श्रीलंका के खिलाफ दो टेस्ट मैचों की सीरीज में किए गए प्रदर्शन के बाद वे आइसीसी की रैंकिंग में नंबर वन पर पहुंच गए थे। लेकिन पिछले हफ्ते उन्होंने अपना ये स्थान गंवा दिया था। वेस्टइंडीज के आलराउंडर जेसन होल्डर जडेजा को हटाकर नंबर वन बन गए थे। फिलहाल इंग्लैंड की टीम वेस्टइंडीज

के दौरे पर है और पहले टेस्ट मैच में होल्डर के प्रदर्शन के बाद उन्होंने जडेजा को हटाकर ये स्थान प्राप्त कर लिया था और जडेजा दूसरे नंबर पर पहुंच गए थे। पहले टेस्ट में होल्डर ने पहली इनिंग में 45 और दूसरी इनिंग में 37 रन की पारी खेली थी और 3 विकेट भी लिए थे। दूसरे टेस्ट में उनका प्रदर्शन कुछ खास नहीं रहा था। इसी का परिणाम है कि आइसीसी द्वारा जारी ताजा रैंकिंग में जडेजा ने एक बार फिर से यह स्थान प्राप्त कर लिया है। जडेजा के 385 अंक हैं और वे नंबर वन पर हैं जबकि होल्डर 357 अंकों के साथ दूसरे नंबर पर हैं। रविचंद्रन अश्विन इस सूची में 341 अंकों के साथ तीसरे नंबर पर हैं। पाकिस्तान के खिलाफ खेल रहे आस्ट्रेलिया के कप्तान पैट कमिंस के रैंकिंग में एक स्थान का उछाल आया है और अब वे 8वें नंबर पर पहुंच गए हैं। आइसीसी की वनडे रैंकिंग में रोहित शर्मा को नुकसान हुआ है। वे एक स्थान नीचे चौथे स्थान पर पहुंच गए हैं। पूर्व कप्तान विराट कोहली बाबर आजम के बाद दूसरे नंबर पर हैं। दक्षिण अफ्रीका के बल्लेबाज रासी वैन डर दुसेन को बांग्लादेश के खिलाफ अच्छा प्रदर्शन का इनाम मिला है वे दो अंकों की छलांग लगाकर छठे नंबर पर पहुंच गए हैं। वनडे रैंकिंग में जडेजा को एक अंक का नुकसान हुआ है और अब वे टाप 10 से बाहर निकल गए हैं।

# विराट कोहली की ये सलाह मान ली तो टीम इंडिया में मिल सकती है जगह.....

**नई दिल्ली।** सनराइजर्स हैदराबाद के तेज गेंदबाज उमरान मलिक ने अपने क्रिकेटिंग करियर में आए बदलाव के बारे में खुलकर प्रतिक्रिया दी है। आइपीएल के पिछले सीजन में डेब्यू करने वाले उमरान 150 किलोमीटर प्रति घंटे की स्पीड से गेंद करने के बाद सुखिर्यों में आए

थे। एक अंग्रेजी वेबसाइट को दिए गए इंटरव्यू में उन्होंने कहा कि टेनिस गेंद से लेदर गेंद तक का सफर तो उन्होंने पूरा कर लिया है अब उनका लक्ष्य भारत के लिए खेलना है। उन्होंने बताया कि कैसे पूर्व कप्तान विराट कोहली की सलाह उनके इस लक्ष्य को पाने में उनकी मदद करेंगे। मलिक ने कहा उन्होंने फिटनेस और हार्ड वर्क को लेकर मुझे सलाह दी थी और कहा था कि यदि वो हार्ड वर्क करेंगे तो उनका समय भी जरूर आएगा। विराट कोहली ने हमसे बात की और कहा कि अपनी गेंदबाजी और फिटनेस पर काम करो। उन्होंने कहा यदि तुम हार्ड वर्क करोगे तो टीम इंडिया की कैप तुमसे दूर नहीं होगी। उन्होंने कहा कि वक्त आने पर मुझे भारतीय टीम में खेलने का मौका जरूर मिलेगा उन्होंने कहा सनराइजर्स हैदराबाद के साथ मेरे कार्यकाल ने मेरे जीवन को बदल दिया है। मुझे गर्व होता है जब लोग मुझे और मेरी कड़ी मेहनत को सराहते हैं। इसका श्रेय आईपीएल और हैदराबाद की टीम को जाता है अपने रिटेंशन को लेकर उन्होंने कहा मुझे उम्मीद नहीं थी कि हैदराबाद की टीम मुझे रिटेन करेगी, लेकिन मुझ पर विश्वास करने के लिए मैं फ्रैंचाइज़ी का शुक्रगुजार हूं मलिक के आइपीएल करियर की बात करें तो पिछले सीजन में उन्होंने तीन मैच खेले थे और 2 विकेट हासिल किया था। अपने पिता के बारे में बोलते हुए उन्होंने कहा कि हमेशा मुझे क्रिकेट को एंज्वाय करने को कहा। उन्होंने हमेशा मेरे खेलने को बढ़ावा दिया। बस एक चीज के बारे में उन्होंने हमेशा मना किया कि गलत संगति से दूर रहो और हमेशा अपने काम पर फोकस करो। हैदराबाद अपने आइपीएल 2022 की शुरुआत 29 मार्च को राजस्थान के साथ करेगा।

# राशिफल

**मेष-:**आप किसके साथ आर्थिक लेन-देन कर रहे हैं, इस बात से सावधान रहें। दोस्तों और परिवार के सदस्यों के साथ शाम के कार्यक्रम में शामिल हों।

**वृष-:**आज का दिन यात्रा में व्यतीत होगा. आपकी यात्रा ऑफिस के काम से जुड़ी हो सकती है। यात्रा के दौरान किसी दूर के रिश्तेदार से मुलाकात होगी।

**मिथुन-:**आज आपके विरोधी भी दोस्ती का हाथ बढ़ाएंगे. आज किसी पड़ोसी का व्यवहार आपको आहत कर सकता है। आप उसकी बातों को नजरअंदाज करने की कोशिश करते हैं।

**कर्क-:**लंबी अवधि के मुनाफे की दृष्टि से शेयरों और म्यूचुअल फंड में निवेश फायदेमंद रहेगा। अपने फैसले बच्चों पर थोपना उन्हें गुस्सा दिला सकता है।

**सिंह-:**आज आपका दिन व्यस्तताओं से भरा कारोबारी मामलों में आप कुछ खास बदलाव कर सकते हैं, लेकिन बदलाव करने से पहले आपको किसी अनुभवी व्यक्ति की सलाह जरूर लेनी चाहिए।

**कन्या-:**आज आपको व्यापार में अच्छा लाभ मिलने की संभावना है। आप इस समय का सदुपयोग अपने व्यापार को बढ़ाने में कर सकते हैं। प्रतियोगिता में बेहतर बने रहें।

**तुला-:**कुछ ऐसी घटनाएँ आपकी परेशानी का कारण बन सकती हैं, जिनसे बचना संभव नहीं है. लेकिन आप शांत रहें और स्थिति से निपटने के लिए तुरंत कोई प्रतिक्रिया न दें।

**वृश्चिक-:**आज आपके मन में नए विचार आएंगे. आने वाले कुछ दिनों में कोई बड़ा काम प्लान हो सकता है। साथ ही किसी खास काम के लिए सोचने और समझने में ज्यादा समय नहीं लगेगा।

**धनु-:**आज का दिन आपके लिए फायदेमंद हो सकता है। परिवार के सदस्यों का सहयोग आपको मिल सकता है। काम की सफलता और नए काम की शुरुआत के लिए आज का दिन अच्छा रहेगा।

**मकर-:**गलतफहमियों के कारण आपके और आपके प्रिय के बीच कुछ अनबन हो सकती है. आपको याद रखना चाहिए कि प्यार के लिए भी गंभीरता की आवश्यकता होती है

**कुंभ-:**आज का दिन आपके लिए काफी महत्वपूर्ण रहने वाला है. इस राशि के लोग आज किसी बड़ी योजना की शुरुआत कर सकते हैं। जिसका लाभ उन्हें बाद में अवश्य मिलेगा।

**मीन-:**आज आप नौकरी में बहुत मेहनत करने वाले हैं. आप अपने काम को बेहतर बनाने के लिए हर संभव प्रयास करेंगे। आज आप कोई भी पहल करें या कोई नया कदम उठाए

# सम्पादकीय

## स्थानीय स्तर पर लोग टीबी के खिलाफ भारत की लड़ाई में दे रहे अपना योगदान

वर्ष 2025 तक भारत को 'टीबी मुक्त' बनाने के लिए भारत सरकार का राष्ट्रीय टीबी उन्मूलन कार्यक्रम (एनटीईपी) पूरी गति से चल रहा है। राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन के तहत चलने वाले इस कार्यक्रम के तहत टीबी को भारत से पूर्ण रूप से खत्म करने के लिए हर टीबी मरीज की पहचान करके, उसे अधिसूचित करने की पूरी व्यवस्था केंद्र सरकार ने तैयार की है। यह व्यवस्था भी की गई है कि टीबी मरीजों को समय पर दवा मिले। दरअसल ड्रग रेसिस्टेंट टीबी मरीजों के इलाज में महंगी दवाओं का इस्तेमाल होता है। ऐसे में नरेन्द्र मोदी सरकार यह सुनिश्चित कर रही है कि इन्हें ये महंगी दवाएं भी उपलब्ध हों। टीबी मरीजों का इलाज तब ही प्रभावी होता है, जब उनकी पोषण जरूरतें पूरी हों। टीबी मरीजों का सही पोषण सुनिश्चित करने के लिए सरकार मरीजों की आर्थिक मदद भी कर रही है। टीबी मामलों की अधिसूचना एनटीईपी के सही दिशा में काम करने का एक प्रमुख संकेतक है। वर्ष 2019 में रिकार्ड 24 लाख से अधिक मामलों की पहचान की गई। यह एक बड़ी उपलब्धि इसलिए भी है, क्योंकि इससे अनुमानित मामलों और रिपोर्ट किए गए मामलों के बीच का अंतर समाप्त हो गया। जब यह अंतर समाप्त होता है तो अधिक से अधिक टीबी मरीजों का इलाज हो पाता है और इन मरीजों से आगे संक्रमण फैलने पर अंकुश लगता है। कोविड महामारी का असर बहुत व्यापक रहा है। इसका असर टीबी कार्यक्रम पर भी पड़ा। वर्ष 2019 की तुलना में 2020 में टीबी मामलों की अधिसूचना 25 प्रतिशत घट गई। लेकिन 2021 में यह स्थिति सुधरी और 21 लाख टीबी मामले अधिसूचित किए गए। यह 2020 की तुलना में 18 प्रतिशत अधिक है। यह दिखाता है कि नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व वाली केंद्र सरकार 'टीबी मुक्त भारत' बनाने के लिए पूरी संजीदगी से काम कर रही है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी 'सबका साथ, सबका प्रयास' की बात कहते हैं। इसी भावना की वजह से आज जमीनी स्तर पर 'टीबी मुक्त भारत' बनाने का कार्यक्रम जन आंदोलन बन गया है। सरकार के साथ-साथ विभिन्न स्तर के जन-प्रतिनिधियों, समाज और सामाजिक संगठनों की ताकत जुड़ गई है। सभी के साझा प्रयास से सकारात्मक परिणाम भी मिल रहे हैं। जन-प्रतिनिधियों और समाज के प्रभावशाली प्रतिनिधियों के प्रयासों ने कुछ महत्वपूर्ण योजनाओं जैसे कि निक्षय पोषण योजना में टीबी रोगियों को लाभान्वित करने में सहयोग किया। इससे कठिन समय में अधिसूचित रोगियों की पोषण संबंधी आवश्यकताओं को पूरा करने में मदद की। अप्रैल 2018 से दिसंबर 2021 तक के आंकड़े बताते हैं कि केंद्र सरकार ने निक्षय पोषण योजना के तहत 57 लाख टीबी मरीजों को कुल 1,487 करोड़ रुपये से अधिक की सीधी आर्थिक मदद की है। राष्ट्रीय टीबी उन्मूलन कार्यक्रम के तहत बच्चों को टीबी से मुक्ति दिलाने के लिए विशेष ध्यान दिया जा रहा है। इस कार्यक्रम के तहत घर-घर जाकर टीबी से ग्रसित बच्चों के बीच टीबी निवारक सेवाओं का दायरा बढ़ाया गया है। वर्ष 2019 में अधिसूचित टीबी रोगियों में से तकरीबन 47 प्रतिशत परिवारों के यहां स्वास्थ्यकर्मी गए। इनमें से पांच लाख से अधिक टीबी से ग्रसित बच्चों की पहचान की गई। इन बच्चों में से 78 प्रतिशत को टीबी प्रीवेंटिव थेरेपी (टीपीटी) का लाभ मिला। इसी तरह से पीएलएचआईवी (एचआईवी वाले टीबी रोगी) को भी इस कार्यक्रम के तहत जरूरी मदद दी जा रही है। टीबी उन्मूलन के लिए भारत नई तकनीक विकसित करने और इन्हें अपनाने की दिशा में भी काम कर रहा है। भारत ने एक अत्यधिक प्रभावी 'मेक इन इंडिया' उत्पाद के रूप में ट्रूनेट डायगनेस्टिक टेस्ट विकसित किया है। यह विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा समर्थित है और आज यह पूरी दुनिया के लिए उपलब्ध है। इसी तरह से टीबी के संभावित मरीजों की पहचान के लिए कृत्रिम बुद्धिमता यानी आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का इस्तेमाल समेत अन्य आधुनिक तकनीकी समाधानों की संभावनाओं को टटोला जा रहा है। टीबी के कुल मरीजों में से करीब 70 प्रतिशत ऐसे हैं, जो निजी क्षेत्र में इलाज कराना चाहते हैं। इनका सही इलाज हो लिए राष्ट्रीय टीबी उन्मूलन कार्यक्रम के तहत यह रणनीति अपनाई गई है कि जहां कोई रोगी हो, वहीं हमें पहुंचना है। इससे टीबी उन्मूलन कार्यक्रम का प्रभाव बढ़ा है। वर्ष 2019 में पहली बार ऐसा हुआ कि निजी क्षेत्र के अस्पतालों से तकरीबन सात लाख टीबी मरीजों को अधिसूचित किया गया।

# अमेरिकी ब्याज दरों में वृद्धि का भारतीय अर्थव्यवस्था पर प्रभाव, पढ़ें एक्सपर्ट व्यू

अमेरिकी फेडरल रिजर्व ने हाल ही में ब्याज दरों में एक चौथाई प्रतिशत की वृद्धि की है। साथ ही अभी इसमें और बढ़ोतरी के स्पष्ट संकेत दिए हैं। अमेरिकी केंद्रीय बैंक ने 2018 के बाद पहली बार ब्याज दर बढ़ाई है। पिछले चार दशकों में सबसे तेज मुद्रास्फीति से निपटने के लिए फेड ने अभियान शुरू किया है। वहीं अनुमान है कि वर्ष 2023 में फेड की दरें 2.8 प्रतिशत तक पहुंच सकती हैं। इस तरह अमेरिकी फेड ने अब कठोर मौद्रिक नीति का रास्ता अपना लिया है। ऐसे में भारतीय रिजर्व बैंक को अपनी मौद्रिक नीति पर अत्यंत सावधानी से आगे बढा होगा रूस-यूक्रेन युद्ध के बीच अभी अमेरिका के समक्ष आर्थिक वृद्धि और महंगाई नियंत्रण के बीच संतुलन बनाने की चुनौती है। अमेरिका में सामान्यतः महंगाई दर दो प्रतिशत रहती है, लेकिन फरवरी 2022 में महंगाई दर बढ़कर 7.9 प्रतिशत हो गई, जो पिछले 40 वर्षों में सबसे अधिक है। अमेरिका में महंगाई का कारण जनता द्वारा खर्च में वृद्धि से मांग (डिमांड) में अप्रत्याशित वृद्धि है। इससे स्पष्ट है कि अमेरिकी अर्थव्यवस्था महामारी के दौर से बाहर निकल चुकी है। यही कारण है कि यूएस फेड ने मजबूत अमेरिकी अर्थव्यवस्था को देखते हुए धीमी आर्थिक वृद्धि के जोखिम को स्वीकार किया और महंगाई नियंत्रण को मुख्य लक्ष्य बनाया। अमेरिकी केंद्रीय बैंक ने अमेरिका के वर्ष 2022 के ग्रोथ रेट अनुमान को चार प्रतिशत से घटा कर 2.8 प्रतिशत कर दिया है। इस बीच भारतीय रिजर्व बैंक की मौद्रिक नीति समिति (एमपीसी) की तरह ही यूएस फेडरल रिजर्व की फेडरल ओपन मार्केट कमेटी (एफओएमसी) ने 8-1 के वोट से नीतिगत ब्याज दरों में वृद्धि की अनुमति दी। कोरोना महामारी के काल में ये ब्याज दरें लगभग शून्य के स्तर पर बनी हुई थीं, ताकि अर्थव्यवस्था को गति दी जा सके। इसके पहले यूएस फेड ने दिसंबर 2018 में नीतिगत दरों में वृद्धि की थी, परंतु जुलाई 2019 में इस बढ़ोतरी को वापस कर लिया था। भारतीय अर्थव्यवस्था पर असर : भारतीय अर्थव्यवस्था कोरोना काल से पूर्व ही चुनौतियों का सामना कर रहा है। वर्ष 2016-17 के प्रथम तिमाही में आर्थिक विकास दर 9.2 प्रतिशत था, जो कोरोना से पूर्व ही गिरते हुए 3.2 प्रतिशत तक पहुंच चुकी थी। इस तरह पहले से ही संवेदनशील हालत में पहुंची अर्थव्यवस्था को कोरोना महामारी का सामना करना पड़ा। इस स्थिति में रिजर्व बैंक ने ब्याज दरों को कम रखा, जिससे सस्ते लोन की उपलब्धता बनी रहे। अब भारतीय अर्थव्यवस्था पटरी पर लौट रही है और लोगों को वास्तव में सस्ते ऋण की जरूरत है, लेकिन यूएस फेड के ब्याज दरों में वृद्धि के बाद अब आरबीआइ पर भी ब्याज दरों में वृद्धि का दबाव होगा। अगर आरबीआइ ब्याज दरों में वृद्धि नहीं करेगा, तो निवेशक भारत से निवेश निकाल सकते हैं। ऐसे में मौद्रिक नीति पर आरबीआइ को अत्यंत सावधानी से निर्णय लेना होगा। इस समय ब्याज दरों में वृद्धि निवेशकों को रोकने में मददगार हो सकती है, लेकिन महंगे लोन से अर्थव्यवस्था की रिकवरी धीमी हो

सकती है। इसलिए आरबीआइ को मौद्रिक नीति में सस्ते लोन और निवेशकों के बीच संतुलन कायम करना होगा। वैश्विक निवेशक दुनिया भर की संपत्तियों में निवेश करने के लिए शून्य या कम ब्याज दर वाले देशों से उधार लेते हैं। इसे ही कैरी ट्रेड कहते हैं। अमेरिका में ब्याज दर इस बढ़ोतरी के पूर्व लगभग शून्य पर थी। ऐसे में निवेशक वहां से लोन लेकर भारत सहित अन्य उभरती अर्थव्यवस्थाओं में निवेश करते थे, जहां ब्याज दर ज्यादा है। कोरोना काल में भी भारत सहित अन्य कई देशों के शेयर बाजार में तेजी के पीछे कैरी ट्रेड भी था। लेकिन यूएस फेड में बढ़ोतरी से वैश्विक बिकवाली के कारण कैरी ट्रेड उलट भी सकता है। क्या अब भारत में ब्याज दर बढ़? की संभावना है : फेड के निर्णयों का असर आरबीआइ के ब्याज दरों पर अवश्य पड़ेगा। अमेरिका में जैसे-जैसे ब्याज दरें बढ़ती रहेंगी, वैसे-वैसे अमेरिका और भारत सरकार के बांड के बीच का अंतर कम हो जाएगा, जिससे वैश्विक निवेशक भारतीय प्रतिभूतियों से पैसा निकालेंगे। इसलिए भारतीय बांड बाजार से एफपीआइ के निकासी को रोकने के लिए आरबीआइ को ब्याज दरें बढ़ाने होंगी। अभी प्रथम स्तर पर यूएस फेड ने केवल 0.25 प्रतिशत की वृद्धि की है, इसलिए अभी आरबीआइ यूएस फेड के निर्णय से बिना प्रभावित हुए मौद्रिक नीति का निर्णय ले सकती है, लेकिन इस वर्ष ही फेड की दरों में छह बार और वृद्धि होनी है। ऐसे में उन वृद्धियों से निबटने के लिए आरबीआइ को अंततः ब्याज दर में वृद्धि करनी पड़ेगी। आरबीआइ पर दोहरा दबाव : आरबीआइ के मौद्रिक नीति पर यूएस फेड और भारतीय महंगाई का दोहरा दबाव है। फेडरल रिजर्व द्वारा रेट बढ़ाने के फैसले और भारत के खुदरा बाजार में बढ़ी महंगाई दर का आरबीआइ की मौद्रिक नीति समीक्षा पर छह अप्रैल से आठ अप्रैल के बीच होने वाली मौद्रिक नीति समिति की अगली बैठक में सीधा असर पड़ेगा। अमेरिकी केंद्रीय बैंक के विपरीत अब तक मौद्रिक नीति पर आरबीआइ का रुख उदार रहा है। इसका एक कारण भारत में खुदरा महंगाई दर प्रायः अब तक आरबीआइ के घोषित दायरे में रही है। लेकिन जनवरी और फरवरी में खुदरा महंगाई दर आरबीआइ के घोषित दर से ज्यादा रही। फरवरी में खुदरा महंगाई दर आठ माह के उच्चतम स्तर पर पहुंच गई है। आरबीआइ का पहले अनुमान था कि मार्च 2023 तक खुदरा महंगाई दर 4.5 प्रतिशत रहेगी, लेकिन अब इस अनुमान में भी बदलाव की पूरी संभावना है। थोक महंगाई दर भी लगातार कई माह से दो अंकों में बनी हुई है। इस तरह आरबीआइ को भी भविष्य में ब्याज दरों में वृद्धि के लिए बाध्य होना ही होगा। डालर के मुकाबले रुपया कमजोर होने की आशंका : फेड के इस फैसले से डालर को मजबूती मिलेगी, जो रुपये को कमजोर कर सकता है। रूस-यूक्रेन युद्ध के कारण पहले ही रुपया 76 के आसपास पहुंच चुका है। ऐसे में आगे इसमें और भी गिरावट आने की आशंका है। रुपया इस मामले में तीन कारकों से प्रभावित होगा। प्रथम, यूएस फेड के निणय्र के कारण डालर मूल्यवर्ग के प्रतिभूतियों की ब्याज दरें अधिक बढ़? लगती है, फलतः अमेरिकी डालर और मजबूत होगा। इससे भी रुपये में गिरावट आएगी। दूसरा, अगर एफपीआइ स्टाक और बांड बाजारों से पैसा निकालना जारी रखते हैं, तो इससे भी रुपया कमजोर होगा। तीसरा, यदि वैश्विक जोखिम से बचने में वृद्धि होती है, तो आम तौर पर जोखिमपूर्ण परिसंपत्तियों जैसे सोने और अमेरिकी ट्रेजरी उपकरणों में पैसा निकाला जाता है। इसका असर भी रुपये पर पड़ेगा। महंगे हो सकते हैं लोन : यूएस फेड के निर्णय के कारण ब्याज दरों में वृद्धि होने पर भारतीय लोन महंगे हो सकते हैं। पर्सनल लोन और अधिकांश डेट प्रोडक्ट की ब्याज दर फिक्सड होती है, लेकिन अधिकांश होम लोन फ्लोटिंग रेट पर आधारित होते हैं। आरबीआइ पर यूएस फेड का दबाव लगातार बना हुआ है, जिससे कैलेंडर वर्ष 2022 के प्रथम छमाही में भारत में भी ब्याज दरों में बढ़ोतरी देखने को मिल सकती है, जिससे आपके होम लोन की दरों में बढ़ोतरी होगी। कर्ज लेने वालों को अब सतत बढे वाले ब्याज दर के विभिन्न चक्रों के लिए तैयार रहना चाहिए। अगर आप नया होम लोन लेने जा रहे है, तो वर्तमान रिकार्ड निम्न दरों पर बहुत ज्यादा कर्ज नहीं लें, अन्यथा भविष्य में आपका बजट बिगड़ सकता है। फेड के ब्याज दरों में वृद्धि के बाद डालर की स्थिति लगातार मजबूत बनी हुई है, जिससे रुपये पर लगातार दबाव बना हुआ है। आरबीआइ के पिछले सप्ताह जारी आंकड़ों के अनुसार 11 मार्च को खत्म हुए हफ्ते के दौरान देश का विदेशी मुद्रा भंडार करीब 10 अरब डालर घट गया है। बीते दो साल में देश के विदेशी मुद्रा भंडार में यह अब तक की सबसे बड़ी गिरावट है। सात मार्च को डालर के मुकाबले रुपया 77 के स्तर को पार कर गया था। रुपये में और गिरावट को रोकने के लिए रिजर्व बैंक ने हस्तक्षेप किया और बाजार में डालर की बिक्री की। अनुमान के अनुसार रिजर्व बैंक ने एक सप्ताह के दौरान करीब एक डालर प्रतिदिन के हिसाब से डालर बाजार में उतारा। इसके बावजूद देश का विदेशी मुद्रा भंडार 631.92 अरब डालर के आसपास बना हुआ है। फेड निणय्र के बाद वर्तमान में पर्याप्त विदेशी मुद्रा भंडार के कारण रुपये की स्थिति कुछ बेहतर बनी हुई है, लेकिन अभी भी विदेशी निवेश को रोकना भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए बड़ी चुनौती है। भारत के लिए मिले-जुले असर की आशंका : अमेरिकी फेडरल रिजर्व के ब्याज दरों में वृद्धि से एक तरफ लोन महंगा होगा, लेकिन दूसरी तरफ ब्याज में वृद्धि से बचत धारकों को अधिक लाभ होगा। अब तक ब्याज दरों में लगातार कटौती के कारण केंद्र सरकार को वरिष्ठ नागरिक बचत योजना, सुकन्या समृद्धि योजना इत्यादि महत्वाकांक्षी योजनाओं में ब्याज दर में कटौती करनी पड़ रही थी। परंतु अब फिर से अधिकांश बचत योजनाओं में अच्छे ब्याज दर की प्राप्ति हो सकेगी। इस तरह बचत धारकों के लिए यह घटनाक्रम खुशखबरी लेकर आया है। फेड द्वारा ब्याज दरों में वृद्धि से भारत में महंगाई और बढ़ सकती है। फेड के इस फैसले से डालर और मजबूत होगा और रुपया कमजोर पड़ जाएगा। रुपये के कमजोर होने पर भारत सरकार को कच्चे तेल के लिए और अधिक कीमत चुकानी होगी, परिणामस्वरूप पेट्रोल और डीजल महंगा हो जाएगा। रूस-यूक्रेन युद्ध के बाद कच्चे तेल के अंतरराष्ट्रीय मूल्यों में वृद्धि हो रही है। पेट्रोल-डीजल महंगा होने से परिवहन की दरें बढ़ जाएंगी, जिससे अधिकांश वस्तुओं की कीमतें प्रभावित होंगी। इसके अलावा, आयात होने वाले सभी प्रकार के कच्चे माल की खरीदारी के लिए पहले से अधिक रुपये खर्च करने होंगे, जिस कारण उन कच्चे माल से बनने वाले उत्पाद महंगे हो जाएंगे। सोने की कीमत में गिरावट : डालर की मजबूती सोने को कमजोर करेगी, जिसका असर भारतीय बाजार में भी देखने को मिलेगा। इस निणय्र के बाद सोने में लगातार बड़ी गिरावट देखने को मिल रही है। सोना 54 हजार से टूटकर 51 हजार रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर पहुंच चुका है। निकट भविष्य में यह आसानी से 46 हजार रुपये के स्तर को एक बार फिर से छू सकता है। लेकिन इन परिस्थितियों के बीच एक अच्छी बात यह हो सकती है कि इससे निर्यात को प्रोत्साहन मिल सकता है। यह सही है कि कमजोर रुपया आयात को महंगा करता है, परंतु निर्यात को सस्ता बनाता है। भारतीय वस्तुएं कमजोर रुपये के कारण वैश्विक बाजार में सस्ती हो जाती हैं। वैश्विक बाजार में कठोर प्रतिस्पर्धा की स्थिति होती है। ऐसे में निर्यात की वस्तुएं सस्ती होने पर उसकी मांग में स्वतः वृद्धि हो जाती है और इस प्रकार निर्यात बढ़ जाता है। उल्लेखनीय है कि फरवरी में भारतीय निर्यात दर में 25 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई। जैसे-जैसे यूएस फेड के अगले चक्रों की वृद्धि होगी, वैसे-वैसे निर्यात में भी वृद्धि होगी, जो भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए सुखद स्थिति होगी।

## नए वैश्विक ढांचे में भारत की हैसियत उसकी अंतरराष्ट्रीय साख बढ़ाने एवं राष्ट्रीय हितों की पूर्ति में सहायक सिद्ध हो रही

पिछले कुछ अर्से से दुनिया बड़े उथल-पुथल भरे दौर से गुजर रही है। रूस-यूक्रेन युद्ध ने इस हलचल को और बढ़ा दिया है। इससे कई पुरानी साझेदारियां दांव पर लग गई हैं तो तमाम नए रिश्ते उभरते नजर आ रहे हैं। वैश्विक ढांचे की जटिलता इतनी बढ़ गई है कि दो मित्र देश एक पड़ाव पर साथ दिखते हैं तो अगले पड़ाव पर उनके हितों में टकराव होने लगता है। ऐसे में सभी देशों को अपनी विदेश नीति में बड़ा बदलाव करना पड़ रहा है। भारत के लिए बदलाव की यह चुनौती इस कारण और विकराल हो गई कि रूस के साथ जहां हमारे ऐतिहासिक प्रगाढ़ रिश्ते हैं, वहीं विगत कुछ दशकों के दौरान अमेरिका सहित पश्चिमी देशों के साथ हमारे संबंध नई ऊंचाई पर पहुंचे हैं। यूरोप में करीब महीने भर से जारी जंग ने इन दोनों ही गुटों में दरार और तकरार कहीं ज्यादा बढ़ा दी है। इसके चलते दुनिया के तमाम देशों को किसी न किसी पाले में खड़ा होना पड़ रहा है। ऐसे धर्मसंकट की स्थिति में भारत किसी पाले में खुलकर खड़े हुए बगैर अपने हितों को पोषित करने में सफल रहा। भारतीय हितों के संरक्षण में संतुलन साधने की हमारी विदेश नीति के पाकिस्तान जैसे पड़ोसी देशों का कायल होना उसकी कामयाबी को ही बयान करता है। बीते दिनों पाकिस्तानी प्रधानमंत्री इमरान खान ने सार्वजनिक सभा में भारतीय विदेश नीति की भूरि-भूरि प्रशंसा की थी। पाकिस्तान जैसे देश से ऐसी तारीफ दुर्लभ ही मिलती है। यह कहना गलत नहीं होगा कि भारतीय विदेश नीति की इस सफलता में भारत के बढ़ते कद की अहम भूमिका रही। भारत गिनती के उन देशों में रहा, जिसके प्रधानमंत्री की रूस और यूक्रेन दोनों के राष्ट्रपतियों से कई बार बात हुई। इस दौरान प्रधानमंत्री मोदी ने दोनों ही देशों से संवाद के माध्यम से समाधान निकालने की बात कही। इतना ही नहीं जहां भारत रूस पर प्रतिबंध लगाकर उसे अलग-थलग करने के प्रयासों का समर्थन नहीं कर रहा, वहीं उसे रूस को यह हिदायत देने में भी गुरेज नहीं कि वह अंतरराष्ट्रीय कानूनों का पालन करे। मंगलवार को ही ब्रिटिश प्रधानमंत्री बोरिस जानसन से वार्ता में प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि रूस को संयुक्त राष्ट्र घोषणापत्र का पालन करना चाहिए। भारत के इसी संतुलित रुख का नतीजा है कि रूस के खिलाफ स्पष्ट रुख न अपनाने को लेकर हो रही आलोचनाओं के बावजूद उसे पश्चिमी देशों के कोप का भाजन नहीं बनना पड़ा।

# जाति आधारित आकांक्षाओं ने जातीय अस्मिता की राजनीति करने वालों को दिया झटका

राजनीति समाज को बदलती है तो समाज भी राजनीति को बदलता है। इसीलिए समाज एवं राजनीति के रूप में परिवर्तन होता रहता है। पुरानी अवधारणाएं टूटती हैं और नए बनती हैं। जनतांत्रिक राजनीति ने भारतीय समाज में आकांक्षाओं की अनंत लहरें पैदा की हैं। जिन सामाजिक समूहों में पहले सपने देखने और उन्हें व्यक्त करने की क्षमता नहीं विकसित हो पाई थी, उनमें अब ऐसा होने लगा है। ऐसे ही समूहों को विकासपरक राजनीति की भाषा में आकांक्षी यानी एस्पिरेंट समूह कहा जाता है। इसीलिए नीति, नियोजन एवं प्रशासन की भाषा में यह शब्द बार-बार प्रयुक्त होने लगा है। हाशिये पर बसे समुदायों में अपनी आकांक्षा की अभिव्यक्ति उनमें बढ़ती आत्मशक्ति का प्रतीक है। इसी के बल पर ये समूह जनतंत्र में अपनी हिस्सेदारी के लिए सत्ता पर दबाव बनाते हैं। वैसे तो यह प्रक्रिया कल्याणकारी एवं विकासपरक राजनीति के ही कारण विभिन्न समाजों में विकसित हुई है, किंतु अब वह अपनी शक्ति के प्रभाव से जनतंत्र के ऊपरी तल पर अवस्थित जनतांत्रिक ढांचों को प्रभावित करने लगी है। समय के साथ जनतांत्रिक आत्मशक्ति निचले तलों पर अवस्थित सामाजिक समूहों में लगातार विकसित होती जा रही है। आकांक्षी समूहों की राजनीतिक चेतना ने अस्मिता की राजनीति के ढांचे को हिला दिया है। इसने जाति एवं अनेक सामाजिक अस्मिताओं को थोड़ी देर के लिए ही सही, पीछे धकेल दिया है। हालांकि जाति अभी भी जनतांत्रिक गोलबंदी की राजनीति के प्रभावी

अस्त्र के रूप में कारगर है, किंतु जाति आधारित आकांक्षाओं ने एक वर्ग जैसा स्वरूप भी गढ़ना शुरू किया है। इसने जनतांत्रिक राजनीति एवं सामाजिक गतिशीलता के स्तर पर दो काम किए हैं-पहला, जातियों से परे विकास की चाह से संचालित होने वालों का एक बड़ा समूह तैयार किया है। दूसरा, जातीय अस्मिता की राजनीति करने वालों को एक बड़ा झटका दिया है। हाशिये के समूहों में यह चेतना भी फैली है कि जो दल उनकी विकासपरक आकांक्षाओं एवं दैनिक जीवन की समस्याओं के निदान में सहायक होगा, वही उनका अपना होगा। इस नए जनतांत्रिक परिवर्तन ने भारतीय शासन, प्रशासन एवं राजनीति को भी प्रभावित किया है। वैसे तो हर दल एक लाभार्थी समूह विकसित करता है, किंतु भाजपा की डबल इंजन सरकारों ने केंद्र एवं राज्यों की विकास एवं कल्याणकारी योजनाओं के माध्यम से दलितों एवं हाशिये पर बसे सामाजिक समूहों को जोड़कर लाभार्थियों का एक बड़ा समूह तैयार किया है। भाजपा ने अपने राजनीतिक कार्यक्रमों से इन समूहों को एक ऐसे समुदाय में तब्दील कर दिया है, जिनमें आकांक्षी चेतना विकासमान रहती है। हाल में प्रधानमंत्री मोदी ने इन्हें विकास योद्धा का नाम दिया। भाजपा ने एक ऐसी राजनीतिक स्थिति पैदा कर दी है, जिसके कारण दलित, गरीब एवं उपेक्षित तबकों का एक बड़ा वोट बसपा जैसे दलित सशक्तीकरण की राजनीति करने वाले दल से छिटक कर उसकी तरफ जा रहा है। इसे मैं एक नई अस्मिता के उभार के रूप में देखता रहा हूं। यह अस्थायी होती है और बनती-बिगड़ती भी रहती है, पर यह प्रभावी होती है। इसे स्थायी बनाए रखना राजनीतिक दलों पर निर्भर करता है। उत्तर प्रदेश में भाजपा के चुनाव प्रभारी धर्मेंद्र प्रधान ने चुनाव प्रचार की शुरुआत में ही गरीब कल्याण को एक बड़े वृत्तांत के रूप में प्रस्तुत किया था। इसी तरह प्रधानमंत्री मोदी ने जब अपना चुनाव प्रचार प्रारंभ किया तो उनका जोर गरीब कल्याण एवं विकास योद्धाओं पर रहा। गरीब कल्याण के कार्यक्रमों को मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने भी एक महत्वपूर्ण विमर्श के रूप में रखा। इस प्रकार दलित एवं हाशिये के समूहों का राजनीतिक पक्ष तय करने में जातीय अस्मितापरक विमर्श से ज्यादा बड़ी भूमिका विकास की चाहत की रही। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने भी अपने सेवाकार्यों के माध्यम से हाशिये के समूहों के एक भाग में हिंदुत्व की चेतना को प्रखर किया है। इस चेतना ने पिछड़े वर्गों एवं दलित जातियों में जातीय अस्मिता की चेतना के आक्रामक उभार को काफी कुछ संतुलित एवं अनुकूलित करने का काम किया है। संघ एवं उससे प्रभावित अनेक संगठन हाशिये के समाजों में कई दशकों से सेवा कार्य करते आ रहे हैं। संघ परिवार शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार सृजन के अनेक कार्यक्रम हाशिये के समाजों के बीच संचालित करता है। विद्या भारती संचालित स्कूल दलितों एवं हाशिये के समाजों में शिक्षा प्रसार के माध्यम से पहुंच रहे है। इसी प्रकार वनवासी कल्याण आश्रम शिक्षा, स्वास्थ्य और आर्थिक स्वावलंबन के कायी के जरिये जनजातीय समूहों के बीच हिंदुत्व की चेतना जगा रहा है। हमारे महानगरीय बुद्धिजीवी अपने चश्मे से हाशिये के समूहों को देखने के क्रम में प्रायः यह तथ्य भूल जाते है कि उनकी जरूरतें भिन्न होती है। ऐसे बुद्धिजीवी उनके भीतर अपने जैसे एक 'क्रांतिकारी' की खोज में लगे रहते है। वे यह नहीं भांप पाते कि कैसे धीरे-धीरे उनकी जीवन स्थितियां उनकी मनोदशा में परिवर्तन ला रही है। वे यह भी नहीं देख पाते कि पारंपरिक अस्मिताओं के साथ उनके संबंध कैसे बन-बिगड़ रहे है ऐसे में वे उनकी राजनीतिक चाहत में आए परिवर्तन को या तो देख नहीं पाते या फिर देखते भी है तो समझ नहीं पाते और समझते भी है तो उन्हें स्वीकार नहीं कर पाते।

## संक्षिप्त समाचार

### मनोहर सरकार का बड़ा फैसला, भ्रष्ट अफसरों की अब खैर नहीं, हाई पावर कमेटी रखेगी पैनी नज़र

**चंडीगढ़।** सरकारी महकमों में भ्रष्टाचार पर अंकुश लगाने में जुटी प्रदेश सरकार ने एक और बड़ा कदम उठाया है। भ्रष्टाचार के खिलाफ नई हाई पावर कमेटी बनाई गई है जिसमें मुख्य सचिव और पुलिस महानिदेशक से लेकर कई बड़े अधिकारी शामिल होंगे। स्टेट विजिलेंस ब्यूरो की सभी छह मंडलों में स्वतंत्र इकाइयां बनाई जाएंगी जिनकी कमान मंडलायुक्त के हाथ में रहेगी। सरकारी कर्मचारियों के लिए मानव संसाधन (एचआर) विभाग बनाया जाएगा। यह विभाग कर्मचारियों से जुड़ा रिकार्ड, स्थानांतरण, उनके ऊपर चल रहे मामले व सेवानिवृत के बाद पेंशन से जुड़े मामले देखेगा। खुद मुख्यमंत्री यह महकमा संभालेंगे, जबकि सचिव आइएएस चंद्रशेखर खरे को बनाया गया है। मुख्यमंत्री मनोहर लाल ने बृहस्पतिवार को सभी जिलों के उपायुक्तों और पुलिस अधीक्षकों के साथ बैठक में भ्रष्टाचार को किसी भी सूरत में बर्दाश्त नहीं करने की बात कही। कोरोना के चलते दो साल से मुख्यमंत्री की डीसी-एसपी के साथ बैठक नहीं हो पा रही थी। 16वीं बैठक में मुख्य रूप से बजट के बिंदुओं पर चर्चा के साथ-साथ भ्रष्टाचार पर कैसे रोक लगाई जाए, इस पर मंथन किया गया। बैठक के बाद मुख्यमंत्री ने पत्रकारों से बातचीत में कहा कि भ्रष्टाचार पर और अधिक प्रभावी ढंग से अंकुश लगाने के लिए मुख्य सचिव की अगुवाई में हाई पावर कमेटी बनाई गई है।

### पानीपत-जालंधर सिक्सलेन प्रोजेक्ट में अधूरी सुविधाएं

**अंबाला।** पानीपत-जालंधर सिक्सलेन 291 किलोमीटर का प्रोजेक्ट को पूरा करने और करनाल, अंबाला और लुधियाना में तीन जगह टोल प्लाजा लगाने की राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण भारत (एनएचएआइ) ने ही सोमा आइसोलक्स कंपनी को जिम्मेदारी दी। दस साल तक वाहन चालकों को अधूरी सुविधाओं के बावजूद तीनों टोल पर टैक्स देना पड़ा। इस दौरान कंपनी ने छह हजार करोड़ रुपये आमदनी की, लेकिन हरियाणा-पंजाब के 60 ब्लैक स्पाट पर काम नहीं किया। हाईवे के दोनों ओर सर्विस लेन पर स्ट्रीट लाइट लगाई जानी थी, जो अब लगानी शुरू की गई हैं, अभी यह जल नहीं पाई हैं। पानीपत और करनाल के टोल 60 किलोमीटर से भी कम दायरे में है, जिसको लेकर विवाद उठता रहा है। सुविधाएं न होने के बावजूद टोल टैक्स वसूली का मामला लगातार दैनिक जागरण ने प्रमुखता से प्रकाशित किया।

## योगी जी के शपथ ग्रहण समारोह के साक्षी होंगे भाजपा नोएडा से सैकड़ों कार्यकर्ता

**(आधुनिक समाचार सेवा)**
**देव मणि शुक्ल**

**नोएडा।** भाजपा की प्रचंड जीत को देखते माननीय मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के शपथ ग्रहण समारोह के उपलक्ष्य में पूरे उत्तर प्रदेश से भाजपा के कार्यकर्ता पहुँचेंगे। इसी के चलते नोएडा महानगर से भी जिला स्तर से लेकर बूथ स्तर तक के कार्यकर्ता 25 मार्च को शपथ ग्रहण समारोह में शिरकत करेंगे। इसको लेकर नोएडा महानगर के जिलाध्यक्ष मनोज गुप्ता के नेतृत्व में सारी तैयारी की जा रही है। कार्यक्रम के लिए सूची तैयार की गयी है। जिसमें प्रदेश पदाधिकारी से लेकर बूथ कार्यकर्ताओं के साथ साथ प्रबुद्ध वर्ग को ले जाने की व्यवस्था करायी जा रही है। शपथ ग्रहण समारोह में पहुँचने के लिए क़रीब 50 गाड़ी और 2 बस नोएडा से प्रस्थान करेंगी जिसकी पूरी व्यवस्था की गयी है । सभी लोग नोएडा से प्रस्थान कर लखनऊ में अटल बिहारी बाजपेई ईकना स्टेडियम कार्यक्रम स्थल पहुँचेंगे। सभी व्यवस्थाओं और इंतज़ाम के चलते कुछ वरिष्ठ कार्यकर्ता 24 मार्च को लखनऊ पहुँचेंगे । इस पूरे कार्यक्रम की रूप रेखा के लिए अध्यक्ष मनोज गुप्ता, महामंत्री उमेश त्यागी, गणेश जाटव, मंत्री एस पी चामोली, मीडिया प्रभारी तन्मय शंकर, प्रमोद बहल, उमेश यादव आदि कार्यकर्ता लगे हुए है।

## राष्ट्रीय व्यापार मंडल ने किया संगठन विस्तार

**(आधुनिक समाचार सेवा)**
**देव मणि शुक्ल**

**नोएडा।** राष्ट्रीय व्यापार मंडल द्वारा संगठन विस्तार हेतु एक प्रेस वार्ता का आयोजन नोएडा मीडिया सेंटर ,सेक्टर 29 में किया गया । प्रेस वार्ता के दौरान संगठन के राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष के के शर्मा , राष्ट्रीय संस्थापक महामंत्री सुधीर कांत शर्मा , राष्ट्रीय संगठन महामंत्री चिन्मय भारद्वाज, राष्ट्रीय कोर्डिनेटर राकेश शर्मा, अनुशासन समिति प्रदेश अध्यक्ष विनित शर्मा, प्रदेश महामंत्री प्रभारी पश्चिम उत्तर प्रदेश प्रदीप चौधरी, पश्चिम क्षेत्र अध्यक्ष प्रवीण सेठी, मेरठ मंडल अध्यक्ष अजय सिंघल, गाजियाबाद जिला अध्यक्ष बाल किशन गुप्ता, तरूनीमा श्रीवास्तव, बोबी त्यागी, समीर शर्मा ,अनिल शर्मा , हरि सिंह, सत्यवीर सिंह, धीरज धनखड़ उपस्थित रहेंगे। इनके द्वारा व्यापार मंडल के प्रदेश मंत्री के रूप में यशपाल भाटी , विक्रम सिंह धनखड़ गौतबुद्धनगर जिलाध्यक्ष, सुखराम नागर को महानगर अध्यक्ष जिला गौतमबुद्धनगर के लिए घोषित कर मनोनीत किया गया। उन्हें राष्ट्रीय व्यापार मंडल पदाधिकारियों द्वारा मनोनयन पत्र

भी सौंपा गया। इस अवसर पर राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष के के शर्मा ने नए पदाधिकारियों का व्यापार मंडल परिवार में शामिल होने पर स्वागत अभिनंदन किया और कहा कि संगठन आपसे उम्मीद करता है आप की अपेक्षाओं पर खरे उतरते हुए व्यापारियों की मुखर आवाज बनकर उनकी समस्याओं के निदान में अपनी अहम भूमिका निभाने का काम करेगें और संगठन का विस्तार करते हुए समस्त क्षेत्र के व्यापारियों को जोड़ेंगे।नवनियुक्त पदाधिकारियों ने सभी अतिथियों का माला पटका पहनाकर स्वागत किया एवं मीडिया बन्धुओं का आभार व्यक्त किया।

## कृषकों को उनकी उपज का लाभकारी मूल्य उपलब्ध कराने के उद्देश्य से न्यूनतम समर्थन मूल्य निर्धारित

**(आधुनिक समाचार सेवा)**
**देव मणि शुक्ल**

**नोएडा।** नोएडा शासन एवं जिलाधिकारी के निर्देशों के क्रम में जिला खाद्य विपणन अधिकारी सोनी गुप्ता ने जानकारी देते हुए बताया कि आगामी गेहूं खरीद वर्ष 2022-23 के अन्तर्गत कृषकों को उनकी उपज का लाभाकारी मूल्य उपलब्ध कराने के उद्देश्य से शासन द्वारा रू0 2015 /- कुन्तल की दर से गेहूँ का न्यूनतम समर्थन मूल्य निर्धारित किया गया है। गेहूँ किसानों से सीधे क्रय किया जाएगा। सरकारी क्रय केन्द्र पर गेहूँ बिक्री के पूर्व पंजीकरण कराना अनिवार्य है। पंजीकरण खाद्य विभाग के पोर्टल पर कराया जा सकता है। पंजीकरण के लिए ओ0टी0पी0 की व्यवस्था की गयी है जोकि एस0एम0एस0 द्वारा कृषक के अंकित मोबाईल नम्बर पर आयेगा, जिसे भरकर पंजीकरण की प्रक्रिया पूर्ण होगी। पंजीकरण कराते समय कृषक को अपनी खतौनी में अंकित नाम को सही-सही दर्ज कराना है तथा उसके साथ-साथ आधार कार्ड में अंकित नाम व संख्या तथा लिंग सही-सही भरना है। साथ ही पंजीकरण कराते समय परिवार के एक सदस्य को नोमिनी के रूप में पंजीकरण कराने की व्यवस्था के तहत नोमिनी के आधार कार्ड की सूचना अंकित करानी होगी। गत वर्ष की भांति इस वर्ष भी गेहूँ की खरीद सम्पूर्ण प्रक्रिया ऑनलाइन एवं ई-पॉप मशीन (इलेक्ट्रॉनिक प्वांइट ऑफ परचेज) के माध्यम से सम्पनन होगी तथा कृषकों का भुगतान पी0एफ0एम0एस0 के माध्यम से किया जायेगा। पी0एफ0एम0एस0 के माध्यम से त्वरित भुगतान सुनिश्चित हो सके, इसके लिए कृषकों से अपील है कि अपने संयुक्त बैंक खाते के स्थान पर एकल बैंक खाते को ही पंजीकरण में दर्ज करायें गेहूं खरीद में कृषकों के आधार सीडेड (लिंक) बैंक खातों में ही भुगतान किया जायेगा। कृषकों का बैंक खाता उनके आधार नम्बर से मैच होना अनिवार्य है। यदि कृषक के पास एक से अधिक बैंक खाते हैं तो उसके बैंक खाते में ही भुगतान जाएगा। जिन कृषकों द्वारा धान खरीद वर्ष 2021-22 में पंजीकरण कराया गया है उन्हें पुनः पंजीकरण कराने की आवश्यकता नहीं है। ऐसे कृषक उक्त पंजीकरण को संशोधन कर पुनः लॉक कर सकते है कृषक बन्धुओं से अपील है कि अपना गेहूँ बेचने के लिए पंजीकरण समय से करा लें तथा गेहूँ बिक्री के समय पंजीकरण प्रपत्रों के साथ-साथ कम्प्यूटराईज्ड खतौनी, फोटोयुक्त पहचान-पत्र, आधार नम्बर से मैच बैंक खाते की पासबुक के प्रथम प्रष्ठ की छायाप्रति एवं आधार कार्ड अवश्य साथ लायें तथा गेहूँ विक्रय के उपरान्त केन्द्र प्रभारी से पावती अवश्य प्राप्त कर लें जनपद के कृषक बन्धुओं से अनुरोध है कि गेहूँ क्रय संबंधी उक्त1 औपचारिकताएँ शीघ्रातिशीघ्र पूर्ण करा लें जिससे सरकार की महत्वाकांक्षी जनकल्याणकारी योजना का अधिकाधिक लाभ प्राप्त किया जा सके। उक्त जानकारी राकेश चौहान जिला सूचना अधिकारी ने दी ।

## 26 मार्च को यज्ञ हवन कर प्रदूषण के प्रति जागरूकता के लिए निकाली जाएगी साइकिल भ्रमण यात्रा

**(आधुनिक समाचार सेवा)**
**देव मणि शुक्ल**

**नोएडा।** में पेड़ लगाओ , पानी बचाओ, पॉलिथिन हटाओ का संकल्प लेकर साईकिल भ्रमण यात्रा निकाली जायेगी । इसी संबंध में आज नोएडा प्रेस क्लब में नोएडा के विभिन्न समाजिक संगठनों द्वारा एक प्रेस वार्ता का आयोजन किया गया।प्रेस वार्ता में बताया गया कि साइकिल यात्रा का उद्देश्य पर्यावरण संरक्षण के प्रति समाज को जागरूक करना है। आज हमारी नासमझी के कारण हमारा पर्यावरण प्रदूषित होता जा रहा है ।अगर आज हमने अपने स्वच्छ पर्यावरण हेतु समाज में जागरूकता नहीं फैलाई तो हमारा पर्यावरण और हमारी भविष्य में उत्पन्न होने वाली पीढियों का अस्तित्व भी खतरे में आ जाएगा।साइकिल यात्रा से यह संदेश पूरे पश्चिम उत्तर प्रदेश में देना चाहते है कि पूरे देश में प्रदूषण की इस समय क्या स्थिति है और हमें स्वछ पर्यावरण हेतु जागरूक होना क्यों जरूरी हैनोएडा की संस्थाएं एवम एनजीओ साथ में मिलकर इस यात्रा को सफल बनाएंगे। पर्यावरण भ्रमण यात्रा हेतु समाजसेवी संस्थाए जैसे अखिल भारतीय गुरुकुल एवं गौशाला अनुसंधान संस्थान, शनि सेवा समिति नोएडा,लायंस क्लब नोएडा, लायंस क्लब नोएडा एलिट , नोएडा लोक मंच, ब्राह्मण समाज सेवा समिति नोएडा, नोएडा एंटरप्रेन्योर्स

एसोसिएशन, नोएडा एंप्लाइज एसोसिएशन, वीर कुंवर सिंह शोध संस्थान इत्यादि संस्थाएं मिलकर समाज को जागरूक करेंगी।श्री मान सिंह चौहान, अध्यक्ष , श्री सिद्ध पीठ शनि मंदिर 14 ने बताया कि कार्यक्रम की शुरुआत सुबह 7:30 बजे वायु शुद्धि यज्ञ से होगी इसके उपरांत संगोष्ठी का आयोजन एवम प्रसाद का वितरण किया जाएगा ।आयोजन एवं प्रसाद वितरण के बाद हरी झँडी दिखाकर साईकिल रैली को रवाना किया जाऐगा।नोएडा लोक मंच के महासचिव महेश सक्सेना ने बताया कि इस रैली का उद्देश्य पर्यावरण संरक्षण के प्रति समाज का जागरण करना है। नोएडा एंटरप्रिन्योर एसोसिएशन के अध्यक्ष विपिन मल्हन ने बताया कि उनके संगठन द्वारा 200 टी-शर्ट का प्रबंध किया जाएगा । प्रेस वार्ता में गुरुजी गौतम ऋषिजी , महिपाल, अजित , वैभवजी, मुकुल वाजपेयी ने पत्रकारों के अनेक प्रशनें के उत्तर दिए।आपको बता दें कि यह साइकिल यात्रा मेरठ प्रांत के लगभग 9 जिलों के 26 प्रमुख स्थानों से गुजरेगी,जिसका शुभारंभ नोएडा से होगाइस वार्ता में साइकिल यात्रा

**यात्रा प्रारंभ-26 मार्च दिन शनिवार सुबह 10.50 यात्रा प्रारंभ स्थानः- श्री सिद्ध पीठ शनि मंदिर सेक्टर 14 ऐ नोएडा समापनः- 11 अप्रैल सोमवार बृजघाट गढ़मुक्तेश्वर,मेरठ**

का रूट बताते हुए जानकारी दी गई कि यह साइकिल यात्रा शनि मंदिर से शुरू होकर सेक्टर 2, डीएम चौराहा , सेक्टर 12,22, 55 56 ,से निकलकर सेक्टर 62 सी.आई.एस.एफ सेंटर गाजियाबाद से होते हुए बागपत, मेरठ मोदीनगर, मुरादनगर,शामली ,मुजफ्फरनगर ,अमरोहा संभल बुलंदशहर आदि जिलों से होते हुए साइकिल यात्रा का समापन 11 अप्रैल 2022 को बृज घाट गढ़मुक्तेश्वर मेरठ में किया जाएगाजिन जिन जिलों में साइकिल यात्रा जाती रहेगी वहां वहां 108 पीपल के पेड भी रोपित किये जायेंगे। नोएडा वासियों को 26 मार्च को इस स्वच्छ पर्यावरण संरक्षण यात्रा में सम्मिलित होने,और स्वच्छ वातावरण का संदेश घर घर पहुंचाने का आह्वाहन किया गया।

# पंजाबी विकास मंच ने मनाया शहीद दिवस

**(आधुनिक समाचार सेवा)**
**देव मणि शुक्ल**

**नोएडा।** कम्युनिटी सेंटर, सेक्टर-56, नोएडा में पंजाबी विकास मंच द्वारा नोएडा-स्तर पर अमर शहीद भगत सिंह, राजगुरु व सुखदेव जी की 91 वें शहीदी दिवस पर सभा का आयोजन किया गया।सभा के मुख्य अतिथि पंजाबी विकास मंच के चेयरमैन श्री दीपक विग ने दीप प्रज्जवलित कर कार्यक्रम की शुरूआत की। इस आयोजन में नोएडा के गणमान्य पंजाबियों ने सर्वप्रथम माल्यार्पण कर शहीदे आजम भगत सिंह को नमन किया। क्रम का संयोजन व संचालन पंजाबी विकास मंच व आरडबल्यूए 56 के अध्यक्ष श्री संजीव पुरी ने किया। सभा को संबोधित करते हुए मुख्य अतिथि श्री दीपक विग ने कहा कि शहीद भगत सिंह का जन्म 27 सितम्बर 1907 को ब्रिटिश भारत में अखण्ड पंजाब के जिला लायलपुर में बंगा गांव में चक नंबर 105 में हुआ हालांकि उनका पैतृक निवास खट्टरकला गांव में स्थित है। भगत सिंह के पिता का नाम सरदार किशन सिंह तथा उनके दो चाचाओं का नाम अजीत सिंह व स्वर्ण सिंह था। ये भी अंग्रेजी हकुमत के खिलाफ लड़ते रहे। एक देशभक्त के परिवार में जन्म लेने के कारण भगत सिंह को देशभक्ति व स्वतंत्रता का पाठ विरासत में पढ़ने को मिल गया था। उनके प्रारंभिक शिक्षा लाहौर के डीएवी स्कूल में हुई। भगत सिंह जब 12 वर्ष के थे तब जालियावाला बाग हत्याकांड़ हुआ था। 1920 के महात्मा गांधी के असहयोग आंदोलन से प्रभावित होकर भगत सिंह ने 1921 में स्कूल छोड़ दिया था तभी लाला लाजपत राय ने लाहौर में नेशनल कालेज कि स्थापना की थी। इसी कालेज में भगत सिंह ने भी प्रवेश लिया। नेशनल कालेज में उनकी देशभक्ति की भावना फलने-फूलने लगी। इसी कालेज में ही यशपाल, भगवती

चरण, सुखदेव आदि क्रांतिकारियों के संपर्क में आये। कुछ समय बाद भगत सिंह करतार सिंह सराभा के संपर्क में आये और गदर पार्टी से जुड़े। 1923 में जब उन्होंने एफ.ए. की परीक्षा उत्तीर्ण की तब उनके विवाह की चर्चा चलने लगी। जिससे बचने के लिए कालेज से भाग निकले और दिल्ली पहुंचकर दैनिक समाचार पत्र अर्जुन में संवाददाता के रूप में कार्य करने लगे। भगत सिंह ने 1924 में लिखा था कि पंजाबी भाषा की लिपि गुरूमुखी नहीं देवनागरी हिन्दी होनी चाहिए। इसी दौरान वह हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन के सदस्य बनें। तभी भगत सिंह का चन्द्रशेखर आजाद से संपर्क हुआ। इन दोनों ने मिलकर अपने क्रांतिकारी दल को मजबूत किया। लाला लाजपत राय के नेतृत्व में 1928 में एक जुलूस साईमन कमीशन के विरोध में प्रदर्शन कर रहा था। इस व्यापक विरोध को देखकर सहायक अधीक्षक सांडरस ने लाला लाजपत राय पर अनेक वार किये। 17 नवंबर 1928 को लाला जी का देहांत हो गया। भगत सिंह, राजगुरू, सुखदेव, चन्द्रशेखर आजाद और जयगोपाल ने सांडरस को मारकर लाला लाजपत राय की मौत का बदला ले लिया। सांडरस की हत्या ने भगत सिंह को पूरे देश का लाड़ला नेता बना दिया। इसके बाद वह फरार हो गये व केश कटवा दिये। पब्लिक सेफ्टी बिल तथा डिस्प्यूट्स बिल के खिलाफ भगत सिंह ने केंद्रीय असेंबली में 8 अप्रैल 1929 को बम फेंका जिसमें उनके सहायक थे बटुकेश्वर दत्त। दोनों ने नारा लगाया इंकलाब जिन्दाबाद, अंग्रेजी साम्राज्यवाद का नाश हो। इसके बाद वह दोनों भागे नहीं व अपनी गिरफ्तारी दी। 7 अक्टूबर 1930 को अंग्रेजों ने भगत सिंह, राजगुरू और सुखदेव को फांसी की सजा सुना दी। उन्होंने जेल में रहते हुए कुछ पुस्तकें भी लिखी थी। आत्मकथा, दि डोर टू डेथ, आइडियल ऑफ सोशलिज्म, स्वाधीनता की लड़ाई में पंजाब का पहला उभार। फांसी का समय प्रातः काल 24 मार्च 1931 को निर्धारित हुआ था पर अंग्रेज सरकार ने भय के मारे 23 मार्च को शाम 7.33 पर फांसी दे दी और अंग्रेजों ने उनके शरीर के टुकड़े-टुकड़े करके फिरोजपुर के पास सतलुज के किनारे मिट्टी का तेल छिड़क कर आग लगा दी। मरने के बाद भगत सिंह और उनके साथियों की लोकप्रियता अपार हो गई थी और भगत सिंह का नाम उस समय महात्मा गांधी से भी अधिक लोकप्रिय था। उपस्थित पंजाबी विकास मंच के साथियों ने मिलकर उन शहिदों को अपनी श्रद्धांजलि 2 मिनट का मौन रख कर दी। इस अवसर पर दीपक विग, संजीव पुरी, जीके बंसल ,वीरेन्द्र मेहता , जे ऐम सेठ ,हरीश सभरवाल, एसपीकालरा प्रदीप वोहरा, श्री मति प्रभा जैरथ, रितु दुग्गल, अंजना भागी, व के के अरोरा, मोहित अरोरा तथा अन्य गणमान्य लोगों ने भी श्रद्धासुमन अर्पित किये।

## ऊबड़ खाबड़ सड़कों की मरम्मत हेतु भाजपा युवा मोर्चा के कार्यकर्ता सड़क पर उतर.....

**(आधुनिक समाचार सेवा)**
**दुर्गेश कुमार गुप्ता**

**शहडोल ।** ब्योहारी नगर के ऊबड़ खाबड़ सड़क पर लगातार दुर्घटनाएं होने से आहत भाजपा युवा मोर्चा

के कार्यकर्ता एवं युवा मोर्चा के जिला उपाध्यक्ष आशीष गुप्ता ब्योहारी की समस्याओं को लेकर हमेशा सक्रिय रहते हैं। रीवा- अमरकंटक मुख्य मार्ग पर सड़क की जर्जर स्थिति को देखने हेतु नगर परिषद के सीएमओ को मौके पर बुलाया गया। सुधार कार्य प्रारंभ न होने की स्थिति में जर्जर सड़क पर विरोध प्रदर्शन किया जायेगा। सीएमओ ब्योहारी ने 3 से 4 दिन के अंदर सुधार कार्य प्रारंभ कराने का आश्वासन दिया। ठीक 1 घंटे बाद ही मौके पर प्रारंभिक सुधार के लिए मजदूर पहुंचे। मौके पर स्थानीय दुकान संचालक रजनीश हलवाई, प्रेमप्रकाश गुप्ता एवं युवा मोर्चा के कार्यकर्ता सौरभ शुक्ला, अमन खरिया एवं अनेक दुकान संचालक एवं नगर के वरिष्ठ नागरिक मौजूद रहे।

## शहर गढ़ ब्यौहारी की स्कूल हुई अतिक्रमन से मुक्त

**(आधुनिक समाचार सेवा)**
**दुर्गेश कुमार गुप्ता**

**शहडोल ।** शहरगढ़ स्थिति पूर्व माध्यमिक विद्यालय से अतिक्रमन

हटाते हुए मौके से खाली कराया गया एवम बच्चो के खेल मैदान को समतल कराया गया। नायब तहसीलदार अमित मिश्रा की अगुआई में एवम बीआरसी रितेश श्रीवास्तव की उपस्थिति में राजस्व निरिक्षक सतनामी जी एवम राजदीप सिंह परिहार एवम अन्य पुलिस बल की सहायता से वषी से किया गया अतिक्रमण हटाया गया। लगातार ग्रामीण जनो एवम शिक्षको के द्वारा अतिक्रमण के विरूद्ध शिकायते की जा रही थी मवेशियों का जमावड़ा होने से बच्चो को आने जाने में दिक्कत होती थी जिसे राजस्व विभाग द्वारा हटवा दिया गया।

## वैश्य महासम्मेलन मध्य प्रदेश तहसील ब्यौहारी

**(आधुनिक समाचार सेवा)**
**दुर्गेश कुमार गुप्ता**

**शहडोल ।** होटल प्रभात पैलेस मे तहसील अध्यक्ष अर्चना चन्द्रप्रकाश के नेतृत्व मे होली मिलन का कार्यक्रम रखा गया जिसमें अतिथि के रूप मे मीरा गुप्ता जी , किरण गुप्ता जी , नीतू जैन जी , सपना जैन जी

राजकुमारी मदन गुप्ता राजकुमारी गुप्ता जिलाध्यक्ष( ग्रामीण )जी रही ,कार्यक्रम का सफल संचालन सपना गुप्ता जी के द्वारा किया गया एवं वहा पर आई हुई सभी मातृशक्तियों का शशि गुप्ता ज़ी सुभद्रा राठौर ,कविता गुप्ता ,प्रिया जैन जी के द्वारा कुमकुम लगाकर स्वागत किया गया। आए हुए अतिथियों का स्वागत प्रीति जैन नैनसी सोनी ,आभा ,साधना जी के द्वारा कुमकुम लगातार एवं पुष्प गुच्छ देकर किया गया । सबसे पहले राधा कृष्ण के आरती के साथ प्रोग्राम की शुरुआत हुई जिसमें इसके बाद महिलाओ और बच्चो ने बहुत अच्छी अच्छी प्रस्तुति दी त जिसमे बृंदावन की फूलो की होली ने सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया। साउंड सिस्टम की व्यवस्था विमल टेन्ट हाउस के प्रोप्राइटर विमल भैया जी के द्वारा किया गया । इस प्रोग्राम मे जलपान की व्यवस्था सविता गुप्ता जी के द्वारा किया गया । मै प्रभात पैलेस के ऑनर राजेश गुप्ता ज़ी , विमल टेंट हाउस से विमल भैया जी ,सविता गुप्ता ज़ी का पूरी महिला इकाई की तरफ से बहुत बहुत आभार व्यक्त करती हू की आपके द्वारा हमे इतना अच्छा सहयोग प्राप्त हुआ . इसके साथ साथ महिला इकाई की सभी पदाधिकारियों को सदस्यों को बहुत बहुत धन्यबाद की इस कार्यक्रम को सफल बनाने मे आप सभी का सहयोग रहा।

## इण्डेन गैस एजेंसी पपौंध के संचालकों को कलेक्टर ने जारी किया कारण बताओं सूचना पत्र

**(आधुनिक समाचार सेवा)**
**दुर्गेश कुमार गुप्ता**

**शहडोल ।** शहडोल 24 मार्च 2022- कलेक्टर श्रीमती वंदना वैद्य ने अनियमितता द्रवित पेट्रोलियम गैस प्रदाय और वितरण विनियमन आदेश 2000 की कंडिका 9(क) (ख) (ग)(ड) का स्पष्ट उल्लंघन होकर आवश्यक वस्तु अधिनियम 1955 की धारा 3/7 के तहत श्री अड्डू कोल प्रो0 पपौंध इण्डेन ग्रामीण वितरण गैस एजेंसी पपौंध एवं श्री नारेन्द्र चतुर्वेदी संचालक व प्रबंधक पपौंध इण्डेन ग्रामीण वितरण गैस एजेंसी पपौंध को अनियमितताएं पाए जाने पर कारण बताओं सूचना पत्र जारी किया है। जारी आदेश में कहा गया है कि, सहायक आपूर्ति अधिकारी अनुविभागीय ब्यौहारी द्वारा 18.02.2022 को पपौंध इण्डेन वितरक गैस एजेन्सी का निरीक्षण समय दोपहर 12.30 बजे एजेन्सी का कार्यालय बंद पाया गया साथ ही एजेन्सी का गोदाम भी बंद होना पाया गया। जाँच के समय गोदाम व कार्यालय बंद होने की कोई जानकारी कार्यालय के बाहर चस्पा नही पाई गई। जाँच के दौरान ग्राम तिखवा के हितग्राहियों के द्वारा 29 हितग्राहियों को उज्जवला योजना के तहत गैस कनेक्शन होने के बावजूद भी उन्हें गैस कनेक्शन प्राप्त नहीं हुआ है। ग्राम तिखवा के 29 हितग्राहियों की सूची के परीक्षण में 21 हितग्राहियों के नाम से उज्जवला योजना के गैस कनेक्शन पपौंध इण्डेन ग्रामीण वितरक गैस एजेन्सी में वर्ष 2018-19 से सक्रिय पाये गयें। सक्रिय जाये गये 21 हितग्राहियो को वास्तविक रूप से गैस कनेक्शन वितरित नहीं होने के कारण उपभोक्ताओं के साथ धोखाधड़ी किया जाना पाया गया है।

## 'सइयां' गाने में बॉलीवुड एक्ट्रेस चित्रांगदा सिंह का नया अवतार देख होश उड़ जाएंगे, पहली बार नजर आया ऐसा रूप

**नई दिल्ली।** अभिषेक बच्चन के साथ बॉब बिस्वास फिल्म में नजर आ चुकीं बॉलीवुड अभिनेत्री चित्रांगदा सिंह सिंगल सॉन्ग सइयां में एक नये अवतार में दिख रही हैं। यह गाना विनोद भानुशाली की म्यूजिक कम्पनी हिट्ज की ओर से रिलीज किया गया है। गाने की थीम डार्क और गोथिक रखी गयी है, जिसमें चित्रांगदा का लुक काफी सेंसुअल नजर आ रहा है। सइयां गाने को असीस कौर ने आवाज दी है, जबकि इसका संगीत रईस जैन ने कम्पोज किया है। गाने के बोल रईस और विक्की नागर ने लिखे हैं। गाने के म्यूजिक वीडियो में चित्रांगदा के साथ ऋषभ चौहान नजर आ रहे हैं।यह पहली बार है, जब चित्रांगदा किसी सिंगल में नजर आ रही हैं। म्यूजिक वीडियो में चित्रांगदा घोड़े पर सवार, गले में सांप लपेटे नजर आ रही हैं, जो इस म्यूजिक वीडियो को मेडिवल और रस्टिक बनाता है। चित्रांगदा सिंह ने गाने को लेकर कहा- ''जब 'सइयां' मैंने पहली बार सुना तो यह मेरे दिमाग में ही रह गया। इसकी बीट्स बहुत ही दिलचस्प हैं। असीस कौर की आवाज ने इसे और भी रोचक बना दिया है। इस गाने की वाइब बहुत ही बेहतरीन है। हमने इस म्यूजिक वीडियो के साथ कुछ अगल करने की कोशिश की है हिट्ज़ म्यूजिक के विनोद भानुशाली ने कहा कि हिट्ज



म्यूजिक के जरिए हम विभिन्न प्रकार की धुनों को सामने लाना चाहते हैं। 'सैयां' गाने का साउंड और विजुअल बहुत ही अलग है। गाने की धुन से लेकर म्यूजिक वीडियो तक सब कुछ उनके लिए विशेष तरीके से तैयार किया गया है। असीस कौर की जादुई आवाज ने इस गाने को और भी बेहतरीन बना दिया है। वहीं, असीस कौर ने कहा कि 'सइयां' गाना बहुत ही फ्रेश और नॉन फिल्मी सॉन्ग है। इस गाने को गाने में बहुत मजा आया। इस तरह की कोशिश पहले कभी नहीं की गयी है। गाना हिट्ज म्यूजिक के यू-ट्यूब चैनल पर रिलीज किया गया है।

## 'द कपिल शर्मा शो' के इस मशहूर कॉमेडियन का हुआ ऐसा हाल, पैरों में चप्पल और झड़े हुए बालों में देख हैरान हुए लोग

**नई दिल्ली।** ऊप र्ख्ज्ञ्त् ऍर्ऱ्ऍ एप्दैः कॉमेडी एक्टर कपिल शर्मा का कॉमेडी शो 'द कपिल शर्मा शो' दर्शकों का फेवरेट शोज में से एक हैं। इस शो का हर कलकार अपनी दमदार कॉमेडी और कॉमिक टाइमिंग के लिए जाना जाता है। लेकिन अगर हम शो के 'बच्चा यादव' की बात करें तो उनकी एक्टिंग को दर्शक काफी पसंद करते हैं। 'द कपिल शर्मा शो' में 'बच्चा यादव' का रोल एक्टर कीकू शारदा निभा रहे हैं। वह कई अलग अलग रोल में भी इस शो में नजर आते रहते हैं। इसी बीच अब कीकू शारदा का एक वीडियो सामने आया है, जिसमें उन्हें पहचानना भी मुश्किल हो रहा है। यहां देखें वीडियो कीकू शारदा के इस वीडियो को फोटोग्राफर विरेंद्र चावला ने अपने इंस्टग्राम अकाउंट पर शेयर किया है। इस वीडियो में पहली नजर में कीकू देखकर हर कोई हैरान रह गया। वीडियो में आप देख सकते हैं कि कीकू के सिर के बाल सफेद और झड़े हुए दिख रहे हैं। वहीं उन्होंने सफेद बनियान के ऊपर काला कोट पहना हुआ और उसके साथ सफेद पैंट पहनी हुई है। वह कीकू सड़क पर चप्पलें पहनकर घूमते हुए दिख रहे हैं। इस दौरान कॉमेडियन को देखकर पैपराजी उन्हें अपने कैमरे में कैद करने के लिए उनकी तस्वीरें क्लिक करते दिख रहे हैं। यही नहीं कुछ पैपराजी उनसे डायलॉग बोलने



के लिए कहते हैं तो वह जवाब में कहते हैं, 'मैं डायलॉग तो बोल दूंगा, लेकिन आप उसे फोटो में रखेंगे क्या। शो में देखिए आपको मजा आएगा।' कॉमेडियन कीकू शारदा का ये वीडियो सोशल मीडिया पर तेजी से वायरल हो रहा है। इस वीडियो पर फैंस लगातार अपने रिएक्शन दे रहे हैं। वहीं इस पर कमेंट कर हर कोई उनके गेटअप पर अपनी प्रतिक्रिया दे रहा है। आपको बता दें कि कीकू का ये गेटअप में दिख रहे हैं वो 'द कपिल शर्मा शो' में उनके एक कैरेक्टर का है। इसके अलावा कीकू शो में बम्पर, बच्चा यादव, अच्छा यादव और संतोष जैसे रोल प्ले करते नजर आते हैं। वह हर रोल में अपनी जबरदस्त कॉमेडी का तड़का लगाते हैं जिससे लोगों की हंसी छूट जाती है।

## कोर्ट ने भेजा सलमान खान को समन तो राखी सावंत ने दिया बड़ा बयान, कहा- 'अगर आप उनके दर्द को उभारेंगे तो उन्हें जलन होगी'

**नई दिल्ली।** बॉलीवुड अभिनेता सलमान खान अपने तीन साल पुराने एक केस को लेकर फिर से मुश्किलों में आ गए हैं। उन्हें और उनके बॉडीगार्ड को मुंबई की एक मजिस्ट्रेट अदालत ने समन भेजा



है। सलमान खान और उनके बॉडीगार्ड पर पत्रकार अशोक पांडेय के साथ बुरा बर्ताव करने का आरोप है। ऐसे में मुंबई की अंधेरी मजिस्ट्रेट अदालत ने अभिनेता और उनके बॉडीगार्ड को 5 अप्रैल तक कोर्ट में पेश होना है। अब इस पूरे मामले में ड्रामा क्वीन के नाम से मशहूर राखी सावंत ने अपनी प्रतिक्रिया दी है। उन्होंने सलमान खान का सपोर्ट किया है और उन्हें अच्छा इंसान बताया है। राखी सावंत ने यह भी कहा कि सलमान खान भी इंसान हैं वह भी किसी चीज को लेकर गुस्सा जाहिर कर सकते हैं। यह बात अभिनेत्री ने अपने नए इंटरव्यू में कही है। राखी सावंत ने हाल ही में अंग्रेजी वेबसाइट टाइम्स ऑफ इंडिया से बातचीत की। इस दौरान उन्होंने सलमान खान ने समन को लेकर कहा, 'देखिए कोई भी मीडिया कभी बुरा नहीं होता, लेकिन जब आप बड़े स्टार बन जाते हैं तो कुछ सवाल आपको आहत करते हैं। सलमान की फिल्में सुपरहिट होती हैं, उनके लाखों चाहने वाले होते हैं लेकिन कहीं न कहीं उन्हें जिंदगी की खुशियां नहीं मिली हैं। मुझे लगता है कि उसके पास सब कुछ है, लेकिन कई बार उन्हें नुकसान में भी होता है। अगर आप उनके दर्द को उभारेंगे तो उन्हें भी जलन हो सकता है। वह भी इंसान हैं। राखी सावंत ने आगे कहा, 'आप नहीं जानते लेकिन सलमान हमेशा तनाव में रहते हैं जब उनकी फिल्में रिलीज होती हैं। वह अपने फैंस के सामने नहीं गिरना चाहेंगे। अगर कोई गलत सवाल करता है ।

## 'एक विलेन रिटर्न्स' की शूटिंग पूरी करने के बाद 'द लेडीकिलर' की शूटिंग शुरू करेंगे अर्जुन कपूर, नॉर्थ में हो सकती है शूटिंग

**नई दिल्ली।** अभिनेता अर्जुन कपूर अपनी आगामी फिल्मों को लेकर काफी चर्चा में रहती हैं। वो अक्सर सोशल मीडिया पर अपने फिल्मों से जुडे अपडेट साझा करते रहते हैं। अब जानकारी आ रही है कि अभिनेता द लेडीकिलर की तैयारियों में जुट गए हैं। न्यूज एजेंसी की रिपोर्ट के अनुसार अभिनेता ने हाल ही में एक विलेन 2 की शूटिंग पूरी की है और अब वो अपनी अगली फिल्म द लेडीकिलर की शूटिंग की तैयारियों में जुट गए हैं। साथ ही रिपोर्ट में दावा किया है कि, फिल्म द लेडीकिलर की शूटिंग अप्रैल के पहले हफ्ते में शुरू हो सकती है।वहीं, रिपोर्ट में सूत्रों के हवाले से दावा किया गया है कि, अभिनेता मोहित सूरी की फिल्म एक विलेन 2 की शूटिंग को पूरी करने के बाद बिना ब्रेक के द लेडीकिलर की शूटिंग की तैयारियां शुरू कर दी हैं। सस्पेंस ड्रामा से भरपूर इस फिल्म में निर्माता फैंस को एक छोटे शहर के प्लेबॉय की कहानी से रूबरू




कराएंगे, जिसे सेल्फ-डेसट्रक्टिव ब्यूटी से उनके जबरदस्त रोमांस के दौरान प्यार हो जाता है। ट्विस्ट और नर्व रैकिंग सस्पेंस से भरपूर, 'द लेडी किलर' अप्रत्याशितता से बड़ी एंटरटेन फिल्म होगी। फिल्म में अर्जुन कपूर एक छोटे शहर के प्ले ब्वॉय का किरदार निभाते हुए दिखाई देंगे। इस फिल्म अभिनेता के साथ भूमि पेडनेकर मुख्य भूमिका नजर आने वाली हैं, द लेडीकिलर दोनों पहली बार एक-दूसरे के साथ स्क्रीन स्पेस साझा करते हुए दिखाई देंगे। अर्जुन कपूर और भूमि पेडनेकर द्वारा अभिनीत द लेडी किलर भूषण कुमार, कृष्ण कुमार और शैलेश आर सिंह द्वारा निर्मित है। इस सस्पेंस थ्रिलर फिल्म का निर्देशन अजय बहल कर रहे हैं। इस फिल्म का निर्माण कर्मा मीडिया एंड एंटरटेनमेंट के साथ मिलकर गुलशन कुमार और टी-सीरीज के बैनर तले किया जा रहा है। आपको बता दें, एक विलेन 2 और द लेडीकिलर के अलावा अर्जुन कपूर विशाल भारद्वाज की फिल्म कुत्ते में मुख्य पुलिस कॉन्स्टेबल का किरदार निभाते हुए दिखाई देंगे। इस फिल्म में अर्जुन एक्ट्रेस तब्बू, राधिका मदान, नसीरुद्दीन शाह के साथ नजर आने वाले हैं, जबकि तब्बू एक कर्पट पुलिस वाले का किरदार निभा रही हैं। साथ ही अभिनेता द लेड़ी किलर में एक्ट्रेस भूमि पेडनेकर के साथ मुख्य भूमिका में नजर आने वाले हैं।

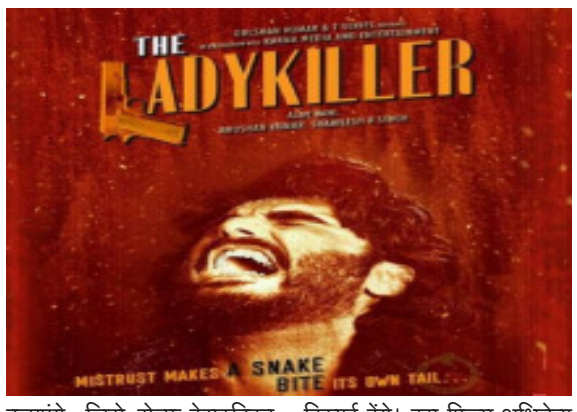

## Taaraked Mehta में 'दयाबेन' दिशा वकानी की होने वाली है वापसी लेटेस्ट एपिसोड में जेठालाल ने दिया ये हिंट

**नई दिल्ली।** तारक मेहता का उल्टा चश्मा की दयाबेन क्या जल्द ही वापसी करने वाली हैं ये एक सवाल है जो दिशा वकानी के 2017 में मैटरनिटी ब्रेक पर जाने के बाद से सभी के मन में है। 'क्या वह वापस आएंगी या उन्हें बदला जाएगा' इसका जवाब 5 साल बाद भी नहीं मिल पाया है। जहां फैंस शो में दयाबेन की वापसी पर अपडेट पाने के लिए बेसब्री से इंतजार कर रहे हैं, वहीं दिलीप जोशी उर्फ ??जेठालाल ने हाल ही में एक बड़ा संकेत दिया है। तारक मेहता का उल्टा चश्मा के लेटेस्ट एपिसोड में जेठालाल, रोशन भाभी से कहता है कि वह खुशकिस्मत है कि उसकी पतनी 2-4 दिनों में वापस आ जाएगी। यह उस बातचीत के दौरान बोला गया जिसमें जेठालाल कहते हैं कि दया जब से अहमदाबाद गई है तब से वह घर नहीं लौटी है। तारक ने फिर जेठालाल से कहा कि वो अब भाभी को घर वापस लेकर आए, क्योंकि अहमदाबाद दूर नहीं है।




जेठालाल उदास दिखे और तारक से कहा कि जब भी वह दया को वापस लाने के लिए वहां जाने की योजना बनाते हैं, तो कोविड-19 नियम उन्हें रोकते हैं और यह खेल बिगाड़ देता है। दयाबेन की वापसी के बारे में एक बड़ा संकेत देते हुए, जेठा ने कहा कि एक बार जब कोविड-19 खत्म हो जाए, तो वह, दया और उनका परिवार यात्रा पर निकल जाएगा। अंत में जब कृष्णन अय्यर ने पूछा कि जेठा क्या करने जा रहा है, तो उन्होंने कहा कि यह सब अब दया पर निर्भर करता है। खैर, इस एपिसोड को देखने के बाद, फैंस काफी एक्साइटेड है कि इन्हें नई दया भाभी मिल गई हैं, या फिर दिशा वकानी ही शो में वापसी करने का फैसला लिया है। दोनों की केस में दर्शक तो खुशी से झूम उठेंगे। क्योंकि वो पिछले 5 सालों से जेठालाल को अकेल देख रहे हैं और मिस कर रहे हैं वो आवाज 'टप्पू के पापा'। कुछ समय पहले, निर्माता असित मोदी ने दया बेन की वापसी के बारे में बात करते हुए उन्होंने ईटाइम्स से कहा था, 'मुझे लगता है कि मुझे अब दयाबेन बन जाना चाहिए! उनकी वापसी का सवाल कई सालों से चल रहा है। हम अभी भी उसके वापस आने का इंतजार कर रहे हैं और अगर वह छोड़ने की इच्छा व्यक्त करतीं हैं, तो शो एक नई दया के साथ चलेगा।'

## अमिताभ बच्चन ने अभिषेक को बताया अपना सच्चा 'उत्तराधिकारी'

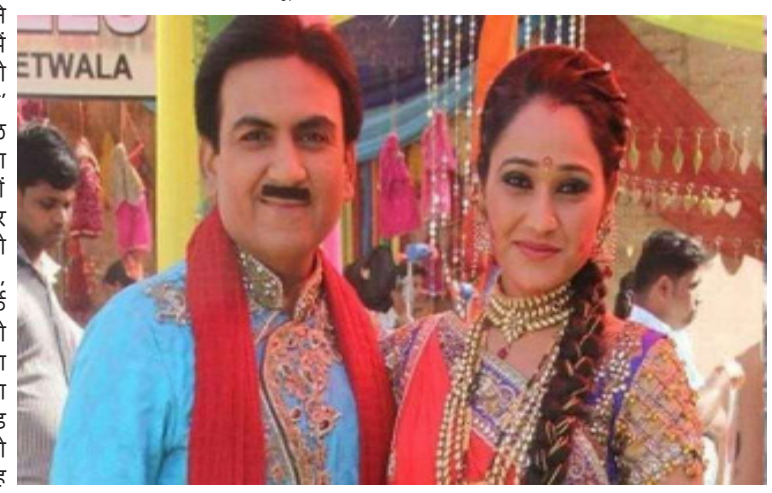

**नई दिल्ली।**अमिताभ बच्चन ने बीती रात अपने बेटे अभिषेक बच्चन की सराहना करते हुए एक भावनात्मक ब्लॉग लिखा। 'दासवी' के ट्रेलर की रिलीज के साथ, अभिषेक को बहुत प्यार मिल रहा है और बिग बी ने यह भी जताया कि उनके बेटे ने साबित कर दिया है कि वह एक 'उपयुक्त उत्तराधिकारी' है। सदी के महानायक ने अपने ब्लॉग में लिखा एक पिता के लिए सबसे बड़ी खुशी अपने बच्चों की उपलब्धियों को देखना है उनके नाम की प्रसिद्धि एक चुनौती नहीं है, बल्कि एक आईना है। सिनेमा की दुनिया, एक अभिनेता के रूप में उनकी क्षमता और उनके लिए उनकी विश्वसनीयता और दृढ़ता को आत्मसात करने के लिए! ' अभिषेक बच्चन पर निशाना साधने वालों को करारा जवाब देते हुए बिग बी ने लिखा, 'वे जो किसी विषय पर अपनी अक्षमता के लिए दूसरे की आलोचना और उपहास करते हैं, ऐसा इसलिए करते हैं, क्योंकि उनके पास खुद विषय की पर्याप्त जानकारी नहीं होती। बता दें कि बॉलीवुड में फिल्म रिफ्यूजी



का स्वाद लेना .. अभिषेक के पिता के रूप में पहचाना जाना और अभिषेक ने इसे मेरे लिए सारांशित किया' अमिताभ बच्चन ने अपने ब्लॉग पर लिखा और अपने पिता की कविता 'वसियतनामा', वसीयत की विरासत से एक पंक्ति भी साझा की। बिग बी ने आगे लिखा, 'मैं बहुत गर्व के साथ कहता हूं कि अभिषेक मेरे 'उत्तराधिकारी' हैं.. उनके निरंतर प्रयास, अलग-अलग भूमिकाओं को करने और कठिन भूमिकाएं निभाने की हिम्मत, केवल से अभिषेक बच्चन ने डेब्यू किया था। तब से लेकर आजतक लोग उन्हें उनके पिता अमिताभ बच्चन से कम्पेयर करते हैं। हालांकि अभिषेक कई बार कह चुके हैं कि मुझे एक अलग एक्टर के तौर पर देखें. मेरे पिता से मेरी तुलना करना मेरे साथ अन्याय है, क्योंकि वो एक महानायक हैं। तुषार जलोटा द्वारा निर्देशित, 'दासवी' अभिषेक, यामी गौतम और निम्रत कौर अभिनीत एक सामाजिक नाटक है।

## इस दिन ब्वॉयफ्रेंड से शादी करने वाली हैं पायल रोहतगी रह रही हैं 12 सालों से लीव इन रिलेशनशिप में...........

**नई दिल्ली।** बॉलीवुड अभिनेत्री पायल रोहतागी इन दिनों कंगना रनोट के रियलिटी शो लॉक अप का हिस्सा हैं। इस शो में वह अपने खेल और रणनीति की वजह से काफी सुर्खियो बटोर रही हैं। लॉक अप में पायल रोहतागी बहुत बार अपने झगड़े को लेकर भी चर्चा में रह चुकी हैं। इस बीच अभिनेत्री के ब्वॉयफ्रेंड ने उनकी शादी और बच्चों के लेकर बड़ा खुलासा किया है। हाल ही में पायल रोहतागी के ब्वॉयफ्रेंड संग्राम सिंह ने अंग्रेजी वेबसाइट टाइम्स ऑफ इंडिया से कि हम शादी के बंधन में बंध जाएं।' बच्चों को लेकर संग्राम सिंह ने कहा, 'अब शादी हो रही है तो फैमिली स्टार्ट करेंगे। हमारे माता-पिता बूढ़े हैं और इसलिए हम बच्चों को जल्दी चाहते हैं। बाकी भगवान की मर्जी।' इसके अलावा संग्राम सिंह ने पायल रोहतगी को लेकर और भी ढेर सारी बातें कीं। आपको बता दें कि अंतर्राष्ट्रीय पहलवान और अभिनेता संग्राम सिंह सगाई के आठ साल बाद पायल रोहतगी से इस साल 21 जुलाई को शादी



बातचीत की। इस दौरान उन्होंने पायल रोहतगी के साथ अपने रिश्ते और शादी को लेकर बड़ा खुलासा किया है। संग्राम सिंह और पायल इस साल जुलाई में एक-दूसरे शादी करने वाले हैं। उन्होंने बताया है कि वह पायल रोहतगी के साथ पिछले 11-12 सालों से लीव इन रिलेशनशिप पर रह रहे हैं। संग्राम सिंह ने कहा, 'हम 11-12 साल से साथ हैं। हमने सबसे लंबे समय से रहना शुरू कर दिया है। यह समय है करने का फैसला किया है। टीवी रियलिटी शो सर्वाइवर इंडिया में संग्राम सिंह और पायल रोहतगी की मुलाकात हुई थी। इस शो में दोनों लंबे समय तक साथ रहे। दोनों के बीच नजदीकियां शुरू हो गई और एक-दूसरे से प्यार करने लगे। संग्राम सिंह बिग बास 7 में गए और फाइनलिस्ट बनें। पायल रोहतगी इस शो में उनसे मिलने भी गई थी। 27 फरवरी 2014 में संग्राम ने पायल रोहतगी से सगाई की।

## सनी लियोनी ने स्विमिंग पूल में मोनोकिनी पहनकर की मस्ती, वीडियो देख फैंस ने कहा- सुपर हॉट

**नई दिल्ली।**बॉलीवुड एक्ट्रेस सनी लियोनी अपनी एक्टिविटी को लेकर काफी सुर्खियां बटोरती हैं। सनी अक्सर अपने स्टाइलिश अंदाज में अपने फोटोज वीडियों फैंस के साथ साझा करती रहती हैं। अब उन्होंने बुधवार को अपने इंस्टाग्राम पर मालदीव वेकेशन की एक वीडियो शेयर की है, जिसमें वो मस्ती करती हुई नजर आ रही हैं। वीडियो में देखा जा सकता है कि एक्ट्रेस स्विमसूट पहने अपने हाथों में कैमरा पकड़े हुए वॉटर पार्क में बनी वॉटर स्लाइड कर रही हैं। 10 सेकेंड के इस वीडियो में एक्ट्रेस वॉटर एडवेंचर करती हुई बेहद उत्साहित नजर आ रही हैं, स्विमिंग पूल मस्ती करती दिख रही हैं। इस वीडियो इंस्टाग्राम पर शेयर कर लिखा, सीढियों को क्यूं चुने, जब स्लाइड मौजूद है। अभिनेत्री की इस वीडियो को इंस्टाग्राम पर 23 लाख से ज्यादा लोग देख चुके हैं। साथ ही कमेंट कर अपनी प्रतिक्रिया दे रहे हैं



और उनकी जमकर तारीफ कर रहे हैं। वहीं, बात अगर उनके वर्कफ्रंट की करें तो वो बीते दिनों अपनी वेब सीरीज अनामिका को लेकर चर्चा में थीं। एक्ट्रेस की ये वेब सीरीज ओटीटी प्लेट फॉर्म एमएक्स प्लेयर पर 10 मार्च को रिलीज हुई थी। इस सीरीज सनी अलग अंदाज में नजर आईं हैं। विक्रम भट्ट ने निर्देशन में बनी इस सीरीज में अंडरकवर स्पाई का किरदार निभाया है। वेब सीरीज में सनी लियोनी के अलावा सोनाली सेगल, राहुल देव, समीर सोनी, शहजाद शेख, अयाज खान जैसे कलाकारों ने भी अहम किरदार निभाया है। जल्द ही वो आर राधाकृष्णन के निर्देशन में बनने वाली फिल्म पत्ता में भी मुख्य किरदार में नजर आने वाली हैं। साथ ही वो पीरियड ड्राम फिल्म 'द बैटल ऑफ भीमा कोरेगांव' में अहम रोल प्ले करती दिखाई देगी। आपको बता दें, सनी लियोनी में अपने हिंदी इंडस्ट्री में अपने करियर की शुरुआत रियलिटी शो बिग बॉस में बतौर कंटेस्टेंट के रूप में भाग लेकर की थी। उन्होंने बॉलीवुड में जिस्म 2 से डेब्यू किया। इसके बाद उन्होंने रागनी एमएमएस 2, वन नाइट स्टंड जैसी फिल्मों में काम किया है।

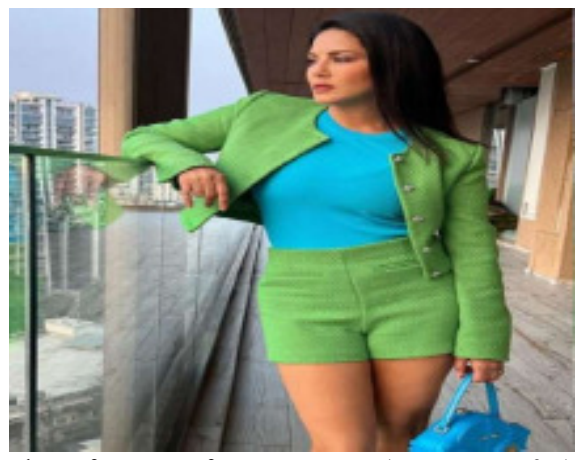

## 'Anupamaa' पर फिर भड़के फैंस, अनुज का एक्सीडेंट देख मेकर्स की सोशल मीडिया पर लगाई क्लास

**नई दिल्ली।** टीवी सीरियल अनुपमा यूं तो दर्शकों का फेवरेट बना रहता है, पर हाल ही में शो में आया ट्विस्ट दर्शकों को कुछ खास पसंद नहीं आया। शो में दर्शक देखना चाहते हैं अनुपमा और अनुज की शादी, पर मेकर्स हैं कि इस लवस्टोरी को खींचे जा रहे हैं। शादी को दूर की बात है अब तो अनुज का एक्सींडेट तक करा दिया गया अनुपमा के पिछले एपिसोड में दिखाया गया है कि अनुज कपाडिया की कार का एक्सीडेंट हो गया है। एक ओर तरफ अनुपमा अपनी डांस परफॉर्मेस से पहले अनुज कपाडिया का इंतजार कर रही है, तो दूसरी तरफ अनुज भी अनुपमा के मुंह से इजहार-ए-मोहब्बत सुनने के लिए बेकारा है। अपनी मीटिंग खत्म करके वह अनुपमा का परफॉर्मेस देखने के लिए जल्द से जल्द डांस कॉम्पटीशन वेन्यू पर पहुंचने की कोशिश करता है। एपिसोड के आखिरी में दिखाया गया कि रास्ते में ही उसकी गाड़ी का ब्रेक फेल हो जाता है और एक ट्रक



से उसकी कार जा टकराती है। बस इसी सीन पर अब लोग भड़क गए है दरअसल, दिवाली पर ही लग रहा था कि अनुज-अनुपमा की प्रेम कहानी अंजाम तक पहुंच जाएगी। पर अब तो होली भी बीत गई पर ये 90टीज वाला रोमांस, शादी में बदले का नाम ही नहीं ले रहा। इस बार उम्मीद थी कि शायद दर्शकों को गुज न्यूज सुनने को मिले पर जब से किंजल प्रेग्नेंट हुई है तब से ही अनुपमा और अनुज दूर हो गए हैं। साथ ही सोशल मीडिया पर अब शो का बायकॉट भी शुरू हो गया है। लोगों का मानना है कि 'अनुपमा' अपने ट्रैक से भटक गया है। सोशल मीडिया पर अनुपमा के फैंस जमकर अपनी भड़ास निकाल रहे हैं। दर्शकों ने मेकर्स को भी खरी-खोटी सुनाना शुरू कर दिया है। लोगों का कहना है कि प्लीज ऐसा कुछ मत दिखाएगा कि जिसमें अनुपमा अपनी खुशियों का गला घोंटते हुए नजर आ रही हो। लोगों ने इस मांग के साथ ही यह बात भी साफ कर दी कि अगर ऐसा नहीं हुआ तो वह रूपाली गांगुली स्टारर टीवी शो को देखना ही छोड़ देंगे। यहां देखें सोशल मीडिया रिएक्शन।

स्वत्वाधिकारी एवं मुद्रक डा0 दीपक अरोरा द्वारा रामा प्रिन्टर्स 53/25/1 ए बेली रोड न्यू कटरा प्रयागराज (उ.प्र.) 211002 से मुद्रित एवं सी-41 यूपी एसआईडीसी औद्योगिक क्षेत्र नैनी प्रयागराज। (उ.प्र.) 211010 से प्रकाशित।
सम्पादक/प्रकाशक
डा0 पुनीत अरोरा
मो0न0 09415608710
RNI No. UPHIN/2015/63398
website:www.adhuniksamachar.com

नोटः- इस समाचार पत्र में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अन्तर्गत उत्तरदायी तथा इनसे उत्पन्न समस्त विवाद इलाहाबाद न्यायालय के अधीन ही होंगे।